सुप्रभात
रांची, शनिवार
24.05.2025
* * नगर संस्करण। पेज : 12

धरती आबा की ऊर्जावान भूमि से प्रकाशित लोकप्रिय दैनिक

खबर मन्त्र

रांची और धनबाद से एक साथ प्रकाशित

सबकी बात सबके साथ

khabarmantra.net | ज्येष्ठ, कृष्ण पक्ष, द्वादशी, संवत् 2082 | मूल्य : ₹ 3 । वर्ष : 12 । अंक : 308 | 12

ब्लैक कलर को कवच मानती हैं सुष्मिता

न्यूज डायरी

सीबीआइ दफ्तर में जवान पर तीर से हमला

लखनऊ। हजरतगंज स्थित सीबीआई दफ्तर में शुक्रवार को एक चौंकाने वाली घटना हुई। यहां तैनात एएसआई वीरेंद्र पर एक व्यक्ति ने धनुष-बाण से हमला कर दिया। हमलावर ने धनुष पर बाण चढ़ाकर सीधे वीरेंद्र के सीने में मारा, जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गये। पुलिस ने आरोपी को हिरासत में ले लिया है। हमलावर पूर्व रेलवे कर्मी है और सीबीआई ने उसके खिलाफ कुछ समय पहले कार्रवाई की थी।

पीएम मोदी ने कल एनडीए राज्यों की बैठक बुलायी

नयी दिल्ली। पीएम मोदी ने 25 मई को एनडीए शासित राज्यों के मुख्यमंत्रियों की बैठक बुलायी है। यह बैठक ऐसे समय में बुलायी गयी है जब कई राज्यों में चुनाव होने को हैं। बैठक में पीएम मोदी, गृह मंत्री अमित शाह, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, बीजेपी अध्यक्ष जेपी नड्डा के साथ-साथ एनडीए शासित राज्यों के सीएम और डिप्टी सीएम शामिल होंगे। बैठक में ऑपरेशन सिंदूर' समेत राज्यों में विकास कार्यों, केंद्र सरकार की कल्याणकारी योजनाओं और बेहतर शासन पर चर्चा करना है।

मोहम्मद यूनुस पर दबाव इस्तीफे की दी धमकी

ढाका। बांग्लादेश की अंतरिम सरकार के प्रमुख मोहम्मद यूनुस ने राजनीतिक उथल-पुथल के बीच इस्तीफे की धमकी दी है। यह चेतावनी ऐसे समय आयी है जब बांग्लादेश पहले से ही राजनीतिक संकट से गुजर रहा है। सेना प्रमुख जनरल वकार-उज-जमान द्वारा दिसंबर तक चुनाव के अल्टीमेटम और बीएनपी के तीव्र विरोध प्रदर्शनों के बीच यूनुस का यह कदम बड़ा सियासी मोड़ ला सकता है।

पानी रोका तो सांसें रोक देंगे : पाक सेना

नयी दिल्ली। पाकिस्तानी सेना का असली चेहरा एक बार फिर बेनकाब हुआ है। सेना के प्रवक्ता लेफ्टिनेंट जनरल अहमद शरीफ ने खुलेआम कहा अगर आप हमारा पानी रोक देंगे, तो हम आपकी सांसें बंद कर देंगे। ये बयान किसी सैन्य अधिकारी का नहीं, बल्कि सीधे तौर पर एक आतंकवादी चेतावनी जैसी लगती है।

पानी के बिना भूखे मर जायेंगे, भारत रहम करे

इस्लामाबाद। आतंकियों को पालने वाला पाकिस्तान, भारत के सामने पानी के लिए गिड़गिड़ा रहा है। पाकिस्तानी सांसद सैयद अली जफर ने शुक्रवार को नेशनल एसेंबली में कहा कि देश की 90 प्रतिशत खेती सिंधु पर निर्भर है और ऐसे में अगर पानी नहीं मिला तो यहां लोग भूखे मर जायेंगे। पहलगाम हमले के बाद भारत ने सिंधु जल समझौता रद्द कर पाकिस्तान को पानी के लिए विवश कर दिया है। पाकिस्तानी सांसद ने पानी के लिए भारत से रहम मांगी। पाकिस्तान ने कई मौकों पर कहा है कि भारत ऐसा ना करे क्योंकि इससे पाक में गंभीर संकट आ जायेगा।

सीएम हेमंत ने तैयारी को ले कर की उच्चस्तरीय बैठक

श्रावणी मेला को भव्य व सुरक्षित बनाने का निर्देश

राजकीय मेला

- श्रावणी मेला हमारी आस्था का एक बड़ा केंद्र
- नयी कड़ियों को जोड़कर श्रावणी मेला को दिया जा रहा और भव्य स्वरूप

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन ने 11 जुलाई से शुरू होने वाले विश्व प्रसिद्ध राजकीय श्रावणी मेला की तैयारियों को लेकर बाबा बैद्यनाथ धाम, बासुकीनाथ तीर्थ क्षेत्र विकास प्राधिकार एवं वरीय पदाधिकारियों के साथ शुक्रवार को उच्च स्तरीय समीक्षा बैठक की। रांची स्थित श्री लोक कृष्ण लोक प्रशासन संस्थान में हुई बैठक में मुख्यमंत्री श्री सोरेन ने राजकीय श्रावणी मेला से जुड़ी सारी तैयारी ससमय पूरी करने का निर्देश संबंधित अधिकारियों को दिया। उन्होंने कहा कि श्रावणी मेला में देश विदेश से श्रद्धालु आते हैं। उनकी सुरक्षा और सुविधाओं का पूरा ध्यान रखा जाना चाहिये। अधिकारियों ने मुख्यमंत्री को श्रावणी मेला की तैयारियों की अद्यतन स्थिति से अवगत कराया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि श्रावणी मेला हमारी आस्था का एक बड़ा केंद्र है। श्रावणी मेले से झारखंड को देश- दुनिया में विशिष्ट पहचान मिली है। हर वर्ष लाखों श्रद्धालु बाबा नगरी आते हैं। हर वर्ष इस विश्व प्रसिद्ध श्रावणी मेले को काफी बेहतर तरीके से आयोजित करते आ रहे हैं। इस वर्ष भी लगभग 50 लाख से अधिक श्रद्धालुओं के आने की संभावना है। ऐसे में वे यहां से बेहतर अनुभव लेकर जायें। इसके लिए श्रावणी मेला में नयी कड़ियों को जोड़ने के साथ इसे और भी भव्य और सुरक्षित स्वरूप देने की दिशा में आगे बढ़ें।

श्रावणी मेले से झारखंड को मिली है विशिष्ट पहचान

मेला की तैयारियों की मॉनिटरिंग करें सीएस

मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने कहा कि श्रावणी मेला में श्रद्धालुओं की सुरक्षा, स्वच्छता, विश्राम, पेयजल, बिजली, पानी, शौचालय, स्नानागार, यातायात और स्वास्थ्य से संबंधित सारी व्यवस्थाएं पुख्ता होनी चाहिये। इसके लिए सभी विभाग आपस में समन्वय बनाकर तैयारियों को अंतिम रूप दें। मुख्यमंत्री ने मुख्य सचिव से कहा कि वे श्रावणी मेला की तैयारियों को लेकर विभागों द्वारा की जा रही व्यवस्था की मॉनिटरिंग करें।

मेला रूट में खाली पड़ी जमीन का उपयोग हो

मुख्यमंत्री ने अधिकारियों से कहा कि वे श्रावणी मेला के समापन तक के लिए मेला रूट में खाली पड़ी जमीन को लेने के लिए रैयतों से बात करें। अगर वे इसके लिए तैयार हो जाते हैं तो उस जमीन पर विश्राम गृह, शौचालय और स्नानागार की व्यवस्था करें, ताकि श्रद्धालुओं को अच्छी व्यवस्था मिल सके। उन्होंने यह भी कहा कि मेला के समापन के बाद उक्त जमीन की पूरी साफ सफाई कर उसके रैयत को वापस कर दें। मुख्यमंत्री ने महिलाओं और बच्चों के लिए अलग से रहने और भोजन की व्यवस्था का भी निर्देश दिया।

श्रद्धालुओं की शिकायत पर लें तुरंत एक्शन : मुख्यमंत्री श्री सोरेन ने कहा कि शिकायतों के त्वरित निष्पादन की व्यवस्था होनी चाहिये। उन्होंने मेला प्रबंधन को लेकर कई अन्य अहम निर्देश भी अधिकारियों को दिये।

यातायात प्रबंधन और भीड़ नियंत्रण पर जोर

मुख्यमंत्री ने कहा कि राजकीय श्रावणी मेला के दौरान बाबा बैद्यनाथ धाम और बासुकीनाथ धाम में लाखों की भीड़ के नियंत्रण के साथ ट्रैफिक मैनेजमेंट सिस्टम को पुख्ता रखना बेहद जरूरी है। उन्होंने अधिकारियों से कहा कि मेला रूट में भीड़ को नियंत्रित करने के लिए पर्याप्त सुरक्षा बल तैनात करें। वाहनों की गति सीमा निर्धारित कर उसका कड़ाई से पालन हो। पर्याप्त संख्या में वाहन प्लेट नंबर रीडिंग हाई डेफिनेशन कैमरा लगायें।

बैठक में मंत्री सुदिव्य कुमार, विधायक सुरेश पासवान, देवेंद्र कुंवर, मुख्य सचिव अलका तिवारी, अपर मुख्य सचिव अविनाश कुमार, प्रधान सचिव मस्त राम मीणा, प्रधान सचिव वंदना दादेल, पुलिस महानिदेशक अनुराग गुप्ता, सचिव मनोज कुमार के अलावा कई अन्य वरीय अधिकारी तथा बाबा बैद्यनाथ धाम, बासुकीनाथ तीर्थ क्षेत्र विकास प्राधिकार के सदस्य गण मौजूद थे।

मुख्यमंत्री हेमंत दिल्ली पहुंचे, नीति आयोग की बैठक में लेंगे भाग

विकसित भारत 2047 का रोडमैप प्रस्तुत करेगी झारखंड सरकार

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। पीएम मोदी की अध्यक्षता में शनिवार को होनेवाली बैठक में भाग लेने मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने शुक्रवार को नयी दिल्ली पहुंचे। बैठक में झारखंड सरकार की ओर से नगर विकास विभाग द्वारा विकसित भारत@2047 के तहत झारखंड का रोडमैप प्रस्तुत किया जायेगा। इसमें राज्य सरकार की ओर से एक्शन टेकेन रिपोर्ट भी प्रस्तुत की जायेगी। राज्य सरकार द्वारा उठाये गये कदमों और उनकी प्रगति की जानकारी भी दी जायेगी।

पिछली बैठक में इन योजनाओं पर चर्चा हुई थी। उक्त बैठक में समाज के वंचित वर्गों और असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के लिए सरकार द्वारा उठाये गये कदमों की जानकारी दी गयी थी।

झारखंड सरकार ने 6278 जरूरतमंद लोगों को 55.33 करोड़ रुपये की मुद्रा ऋण वितरित की है। राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन के तहत राज्य में 2014 से 2024 तक 24,380 स्वयं सहायता समूह बनाये गये हैं। बैठक में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह और वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण मौजूद रहेंगे। गौरतलब है कि नीति आयोग के शासी निकाय में सभी राज्यों के मुख्यमंत्री, केंद्र शासित प्रदेशों के उपराज्यपाल और कई केंद्रीय मंत्री इसके सदस्य होते हैं। पिछले साल यह बैठक 27 जुलाई को हुई थी।

विवाह के पांचवें दिन ही इंजीनियर दुल्हन का शव फंदे से लटका मिला

खबर मन्त्र संवाददाता

मेदिनीनगर। यूं तो शादी जन्मोजनम का रिश्ता होता है, लेकिन जब यह रिश्ता शादी के पांच दिन बाद मातम में बदल जाये तो दो परिवारों में टूट पड़ जाती है। ऐसा ही कुछ मामला पलामू के नावाजयपुर थाना क्षेत्र के धंगरडीहा से सामने आया है। जानकारी के अनुसार 17 मई को शादी हुई और 22 मई को दुल्हन ससुराल में फांसी के फंदे पर लटकी मिली। लड़की के पिता ने इसे निर्मम हत्या करार देकर मामला दर्ज कराया है। पुलिस छानबीन कर रही है। कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर इंजीनियर ऋषिका सिन्हा उर्फ मीणा की शादी धंगरडीहा के अलख निरंजन प्रसाद के पुत्र अनुज कुमार सिन्हा से हुई थी। ऋषिका, आलमगंज पटना के महेंद्र प्रसाद की पुत्री है। अनुज जबलपुर गन फैक्ट्री में सरकारी नौकरी में है, वहीं ऋषिका सिन्हा कंप्यूटर सॉफ्टवेयर इंजीनियर के रूप में दिल्ली में कार्य करती थी।

पिता ने कहा- यह निर्मम हत्या : नव विवाहिता की मौत के बाद शुक्रवार को इस घटना की सूचना मायके पक्ष को दी गयी। पिता महेंद्र प्रसाद ने सुसरालवालों पर बेटी की हत्या करने का आरोप लगाया। खबर मिलते ही नावाजयपुर थाना प्रभारी घटनास्थल पर पहुंचे एवं शव को परिजनों के समक्ष फंदे से उतारा और पंचनामा कर पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल मेदिनीनगर भेज दिया। मायके वाले की तरफ से मिले आवेदन प्राप्त के आधार पर प्राथमिकी दर्ज कर घटना की छानबीन की जा रही है।

ज्योति मल्होत्रा के वीडियो के बाद बासुकीनाथ की बढ़ायी गयी सुरक्षा

दुमका। जासूसी के आरोप में गिरफ्तार यूट्यूबर ज्योति मल्होत्रा ने बासुकीनाथ मंदिर का भी वीडियो शूट किया गया था। इसके वायरल होने के बाद देवघर के बैद्यनाथ धाम मंदिर और बासुकीनाथ धाम मंदिर की सुरक्षा बढ़ा दी गयी है। सुरक्षा को लेकर जिला प्रशासन अलर्ट है। अतिरिक्त सुरक्षा बलों को मंदिर की सुरक्षा में लगाया गया है। मंदिर के आसपास सीसीटीवी कैमरे से निगरानी की जा रही है, ताकि मंदिर परिसर की गतिविधियों को देखा जा सके। वर्ष 2023 में ज्योति मल्होत्रा ने सुल्तानगंज से लेकर देवघर के बैद्यनाथ धाम मंदिर और बासुकीनाथ मंदिर का वीडियो शूट किया था। बाबाधाम और बासुकीनाथ धाम में श्रावण माह में लाखों श्रद्धालु पहुंचते हैं। लोगों का कहना है कि इस वीडियो को किस दृष्टिकोण से बनाया गया अथवा इसका क्या मकसद था इसको लेकर भी खुफिया एजेंसी को जांच करने की जरूरत है।

पूर्वोत्तर राज्यों के विकास पर केंद्रित नॉर्थ ईस्ट इन्वेस्टर्स समिट का किया उद्घाटन

आतंकवाद हो या माओवाद, नया भारत अब हिंसा बर्दाश्त नहीं करेगा : पीएम

एजेंसी

नयी दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शांति और बुनियादी ढांचागत सुविधाओं को विकास की आवश्यक शर्त बताया है और कहा है कि उनकी सरकार ने पिछले 11 वर्ष में पूर्वोत्तर क्षेत्र में अवसंरचना-विकास और शांति के लिए जो काम किए हैं, उससे पूर्वोत्तर क्षेत्र के राज्य आज निवेशकों के स्वागत के लिए पूरी तरह तैयार हैं।

श्री मोदी ने शुक्रवार को नयी दिल्ली के भारत मंडपम में पूर्वोत्तर क्षेत्र के राज्यों के विकास के विषय पर केन्द्रित दो दिवसीय नॉर्थ ईस्ट इन्वेस्टर्स समिट का उद्घाटन करते

हुए शांति के महत्व को रेखांकित किया। प्रधानमंत्री ने कहा, आतंकवाद हो या अशांति फैलाने वाले माओवादी, उनके प्रति हमारी सरकार जीरो टॉलरेंस की नीति पर चल रही है।

उन्होंने कहा कि उनकी सरकार ने पूर्वोत्तर में विभिन्न संगठनों के साथ पिछले कुछ वर्षों में कई शांति समझौते किए हैं और 10 हजार से अधिक युवाओं ने हथियार छोड़ कर मुख्य धारा को अपनाया है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि पूर्वोत्तर में बुनियादी सुविधाओं के विकास के लिए उनकी सरकार ने जो कुछ किया है, वह केवल आंकड़ा नहीं, बल्कि वह क्षेत्र के विकास की एक बड़ी सोच को दर्शाता है। बुनियादी सुविधा, हर निवेश की पहली शर्त है। पूर्वोत्तर क्षेत्र बहुत समय तक अभाव में रहा था, लेकिन अब वहां भारी निवेश हुआ है।

मौके पर उद्घाटन सत्र को उद्योगपति मुकेश अंबानी, अनिल अग्रवाल, गौतम अडाणी, हर्षवर्धन नेवतिया और पूर्वोत्तर के कुछ प्रमुख उद्यमियों ने भी संबोधित किया और क्षेत्र में निवेश की अपनी अपनी योजनाओं का एक मोटा खाका प्रस्तुत किया।

अवसरों का लाभ उठायें निवेशक : एक दशक में वहां 11 हजार किलोमीटर के नये राजमार्ग बने हैं, सैकड़ों किलोमीटर के नये रेल मार्ग विकसित हुए हैं, तथा हवाई अड्डों की संख्या दोगुनी हो गयी है। उन्होंने निवेशकों से उस क्षेत्र में उभरते अवसरों का लाभ उठाने के लिए पहले पहुंचने की सलाह देते हुए कहा कि आने वाले समय में पूर्वोत्तर भारत दक्षिण-पूर्व एशिया और प्रशांत क्षेत्र में व्यापार का एक बड़ा केंद्र बनेगा।

चुनाव आयोग मतदान केंद्रों पर मोबाइल जमा कराने की देगा सुविधा

नयी दिल्ली। चुनाव आयोग ने मतदान की प्रक्रिया को सरल और सुगम बनाने के लिए दो नयी पहल की है। आयोग अब मतदान केंद्रों के बाहर मतदाताओं के लिए मोबाइल जमा करने की सुविधा प्रदान करेगा। साथ ही अब, मतदान केंद्र के 100 मीटर के दायरे के ठीक बाद उम्मीदवार मतदाताओं के सहयोग के लिए अपने बूथ लगा सकेंगे। चुनाव आयोग ने कहा है कि यह निर्णय ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में मोबाइल फोन के बढ़ते उपयोग को ध्यान में रखते हुए लिया गया है। मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार की अध्यक्षता में चुनाव आयोग कानूनी ढांचे के अनुसार सख्ती से चुनाव कराने के लिए प्रतिबद्ध है। साथ ही मतदाताओं के लिए सुविधाओं में सुधार के लिए निरंतर नवाचार भी कर रहा है।

पिछले पांच वर्षों में 42 कोयला खदानें हुईं बंद

- खदान किन परिस्थितियों में बंद हुईं, इस पर सरकार ने अबतक ध्यान नहीं दिया, इसलिए अभी भी विभिन्न कोयला कंपनियों की खदानों के बंद होने का सिलसिला है जारी

सत्येन्द्र

रांची। बीते पांच वर्षों में कोल इंडिया लिमिटेड-सीआईएल के लगभग 42 ओपन कास्ट एवं अंडरग्राउंड कोयला खदाने बंद हो गयी हैं। सबसे अधिक 18 खदानें वेस्टर्न कोल फील्ड्स लिमिटेड की

बंद हुई हैं। वहीं झारखंड की चार खदानें ही बंद हुई हैं। खदान किन परिस्थितियों में बंद हुई इस पर सरकार ने अभी तक ध्यान नहीं दिया है। यहीं कारण है कि अभी भी कोल इंडिया लिमिटेड की अनुषांगिक कंपनियों की खदानों के बंद होने का सिलसिला जारी है।

राज्य एवं अनुषांगिक कंपनियों की बंद खदानें

असम
- एनईसी : लेडो ओपनकास्ट
- एनईसी : टिपोंग भूमिगत
- एनईसी : तिरप ओपनकास्ट

छत्तीसगढ
- एसईसीएल : विश्रामपुर ओपनकास्ट
- एसईसीएल : महामाया भूमिगत
- एसईसीएल : महान ओपनकास्ट
- एसईसीएल : पवन भूमिगत
- एसईसीएल : सुराकछार भूमिगत 3 एवं 4
- एसईसीएल : सुराकछार भूमिगत मुख्य खान

झारखण्ड
- सीसीएल : पिपरवार ओपनकास्ट
- सीसीएल : सरुवेरा भूमिगत
- सीसीएल : उरीमारी भूमिगत
- ईसीएल : गोपीनाथपुर ओपनकास्ट एवं भूमिगत

मध्य प्रदेश
- एसईसीएल : जमुना आरओ (1 एवं 2) भूमिगत
- एसईसीएल : कपिलधारा भूमिगत
- एसईसीएल : न्यू अमलाई भूमिगत
- एसईसीएल : पिनौरा भूमिगत
- डब्ल्यूसीएल : बरकुही ओपनकास्ट
- डब्ल्यूसीएल : भारत (घोडावाड़ी-2) ओपन कास्ट
- डब्ल्यूसीएल : दमुआ ओपनकास्ट
- डब्ल्यूसीएल : गणपती भूमिगत
- डब्ल्यूसीएल : घोड़ावाडी / झरना भूमिगत
- डब्ल्यूसीएल : मोहन फेज- आइवी ओपनकास्ट
- डब्ल्यूसीएल : न्यू सेठिया ओपनकास्ट
- डब्ल्यूसीएल : शोभापुर भूमिगत
- डब्ल्यूसीएल : विष्णुपुरी-कभूमिगत

महाराष्ट्र
- डब्ल्यूसीएल : एवी-इंक्लाइन भूमिगत
- डब्ल्यूसीएल : सीआरसी भूमिगत
- डब्ल्यूसीएल : महाकाली भूमिगत
- डब्ल्यूसीएल : मन्ना भूमिगत
- डब्ल्यूसीएल : मुरपर भूमिगत
- डब्ल्यूसीएल : पद्मापुर ओपनकास्ट
- डब्ल्यूसीएल : पिपला भूमिगत
- डब्ल्यूसीएल : सारनी भूमिगत
- डब्ल्यूसीएल : सस्ती भूमिगत

ओड़िशा
- एमसीएल : ओरिएंट कोलियरी-आइआइआइ भूमिगत

पश्चिम बंगाल
- ईसीएल : चिनकुरी कभूमिगत
- ईसीएल : जेमेहरी भूमिगत
- ईसीएल : कालीपहाड़ी भूमिगत
- ईसीएल : एस एस इंक्लाइन भूमिगत
- ईसीएल : सोदेपुर (आर) भूमिगत

कुल 42 कोयाला खदानें

कार्टून कोना

झारखंड की कृषि मंत्री ने नयी दिल्ली में सरना धर्मकोड की मांग उठायी, कहा

'जनसंख्या' परिसीमन का आधार बना तो आरक्षित सीटें घट जायेंगी : शिल्पी नेहा

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। झारखंड की कृषि मंत्री शिल्पी नेहा तिर्की ने कहा कि अगर जनसंख्या को परिसीमन का आधार बनाया गया तो आदिवासियों के लिए आरक्षित सीटें कम हो जायेंगी। वह शुक्रवार को दिल्ली में आयोजित राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के प्रदेश मीडिया प्रभारियों और प्रदेश मीडिया विभाग के अध्यक्षों की कार्यशाला में बोल रहीं थीं। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि जनगणना

प्रक्रिया में आदिवासी समुदाय को उनकी मूल और एकीकृत पहचान के साथ दर्ज किया जाना चाहिए, न कि उप-वर्गों में विभाजित किया जाना चाहिए। उन्होंने एक बार फिर सरना धर्मावलंबियों के लिए जनगणना कॉलम में सरना/आदिवासी धर्म कोड का अलग कॉलम रखने की मांग दोहरायी।

कृषि मंत्री ने कहा कि अगर 5वीं अनुसूची वाले राज्यों में जनसंख्या को परिसीमन का आधार बनाया जाता है, तो अनुसूचित जनजातियों के लिए आरक्षित सीटों की संख्या कम हो जायेगी। कृषि मंत्री ने कहा कि झारखंड में समय के साथ दूसरे राज्यों से आकर बसने वाले लोगों की आबादी बढ़ी है, जबकि आदिवासी समाज की आबादी या तो घटी है या स्थिर है। ऐसे में अगर पांचवीं अनुसूची वाले इस राज्य में जनसंख्या को परिसीमन का आधार बनाया जाता है, तो आरक्षित सीटों की संख्या कम हो जायेगी। ऐसा हुआ तो आदिवासी समाज की सुरक्षा और संरक्षण की भावना धूमिल हो जायेगी।

भाजपा और संघ पर आरोप : आदिवासी समाज पर जाति जनगणना के प्रभाव, चुनौतियों और समाधान पर बोलते हुए मंत्री शिल्पी नेहा तिर्की ने कहा कि कांग्रेस, जाति जनगणना के तहत सामाजिक न्याय के संदेश और उद्देश्य को लेकर आगे बढ़ना चाहती है, जबकि केंद्र में बैठी भाजपा और आरएसएस इसे जटिल बनाने में लगी है। कृषि मंत्री ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि जनगणना प्रक्रिया में आदिवासी समुदाय को उनकी मूल और एकीकृत पहचान के साथ दर्ज किया जाना चाहिए। उन्होंने यह भी रेखांकित किया कि आदिवासी समुदाय न केवल सांस्कृतिक रूप से, बल्कि दिल और आत्मा से भी एकजुट है, चाहे वह झारखंड हो, मणिपुर हो, ओड़िशा हो या छत्तीसगढ़।

जानबूझ कर संवैधानिक संस्थाओं को सरकार ने पंगु बना कर रख है : मरांडी

- भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि हेमंत सरकार संविधान से नहीं मुखेर कानून से चल रही है

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी ने कहा कि जानबूझ कर राज्य में संवैधानिक संस्थाओं को पंगु बना कर हेमंत सरकार रख रही है। श्री मरांडी शुक्रवार को पार्टी मुख्यालय में पत्रकारों से बातचीत कर रहे थे। उन्होंने कहा कि राज्य की ऐसी सारी संवैधानिक संस्थायें जो राज्य सरकार के काम काज, गड़बड़ियों, भ्रष्टाचार पर नजर रखती हैं, जनता की शिकायत पर सुनवाई और कार्रवाई करती है, को राज्य सरकार ने पंगु बनाकर रखा है। उन्होंने कहा कि राज्य में लोकायुक्त, महिला आयोग, सूचना आयोग, उपभोक्ता फोरम जैसी महत्वपूर्ण संवैधानिक संस्थाओं में वर्षों से अध्यक्ष-सदस्य के पद खाली हैं। कहीं अध्यक्ष हैं तो सदस्य नहीं, कहीं न अध्यक्ष हैं न सदस्य। संस्थान सिर्फ नाममात्र का रह गया है। उन्होंने कहा कि ये संवैधानिक संस्थायें जनता को न्याय दिलाने में सहायक होती हैं। सरकार को पारदर्शी और जवाबदेह बनाती हैं। लेकिन, आज इनका पंगु रहना लोकतांत्रिक ढांचे को कमजोर कर रही है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार नेता प्रतिपक्ष नहीं होने का बहाना बनाती थी। जबकि, भाजपा ने समय पर नेता चुनकर दिया है। पिछले टर्म में दो बार नेता का चयन किया गया। लेकिन परिणाम शून्य रहा। आज विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष है लेकिन हेमंत सरकार की नियत साफ नहीं है। यह सरकार अपनी नाकामियों, विफलताओं, भ्रष्टाचार को उजागर नहीं होने देना चाहती है।

उन्होंने कहा कि सूचना आयुक्त का पद खाली है। महिला आयोग में 2020 से ही अध्यक्ष और सदस्य का पद खाली है। उपभोक्ता फोरम में दर्जन भर जिले अध्यक्ष और सदस्य विहीन हैं। उन्होंने कहा कि लोकायुक्त के नहीं रहने से न तो कोई शिकायत दर्ज हो रही है। जबकि, लोकायुक्त जैसी स्वतंत्र संस्था राज्य में काम करेगी तो मंत्री, विधायक, बड़े पदाधिकारी, यहां तक कि एसीबी के विरुद्ध भी गलत और पक्षपातपूर्ण कार्रवाई और जांच की शिकायत की जा सकेगी। उन्होंने कहा कि हाइकोर्ट के निर्देशों के बावजूद इन पदों को नहीं भरा जा रहा है। इससे स्पष्ट है कि यह सरकार जानबूझकर संवैधानिक पदों पर नियुक्तियां नहीं करना चाहती है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार संवैधानिक तरीके से नहीं बल्कि मुखेर कानून चलाना चाहती है। उन्होंने मांग की कि अविलंब सूचना आयुक्त, महिला आयोग, लोकायुक्त जैसे महत्वपूर्ण संवैधानिक संस्थाओं के अध्यक्ष-सदस्यों की नियुक्ति की जाये। मौके पर मीडिया प्रभारी शिवपूजन पाठक, प्रवक्ता प्रदीप सिन्हा उपस्थित थे।

प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना की बैठक नयी दिल्ली में आयोजित

मत्स्य कृषकों को एनएफडीपी पोर्टल पर रजिस्ट्रेशन कराना अनिवार्य : डॉ द्विवेदी

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना की वार्षिक समीक्षा बैठक नई दिल्ली स्थित एपी शिंदे हॉल में हुई। बैठक में केंद्र सरकार के मत्स्य पालन विभाग के सचिव अभिलक्ष लिखी विशेष रूप से उपस्थित थे। इस बैठक में झारखंड सरकार की ओर से कृषि सचिव अबू बकर सिद्दीख एवं मत्स्य निदेशक डॉ एचएन द्विवेदी ने भाग लिया। गौरतलब है कि केंद्र सरकार द्वारा 22.50 करोड़ रुपये पीएमएमएसवाई के लिये जारी किया गया है। बैठक में झारखंड में पीएमएमएसवाई की गतिविधियों और उपलब्धियों के बारे में जानकारी दी गई। बैठक में झारखंड के केज कल्चर, बायोफ्लॉक पद्धति आदि तकनीक से मत्स्य उत्पादन में वृद्धि संबंधी अद्यतन जानकारियों से अवगत कराया गया। बैठक में सभी मछुआरों, मत्स्य कृषक, मत्स्य विक्रेताओं, उद्यमियों, समितियों को नेशनल फिशरीज डिजिटल प्लेटफॉर्म में सभी को अनिवार्य रूप से ऑनलाइन निबंधन कराने के लिए निर्देशित किया गया। इससे मत्स्य क्षेत्र से जुड़े सभी को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिलेगी। साथ ही सभी मात्स्यिकी परियोजनाओं का लाभ मत्स्य कृषकों को मिल सकेगा। मत्स्य निदेशक डॉ एचएन द्विवेदी ने बताया कि पीएमएमएसवाई के तहत झारखंड ने मत्स्य पालन के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल की है।

सेना के अफसर सीएम से मिले

रांची। मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन से शुक्रवार को आवासीय कार्यालय में मेजर जनरल अरुण राजेश मोगे, विशिष्ट सेवा मेडल सह डूरंड कप फुटबॉल प्रतियोगिता कमिटी के वाइस चेयरमैन एवं मेजर जनरल परमवीर सिंह डागर; विशिष्ट सेवा मेडल, जीओसी ने शिष्टाचार भेंट की। इस अवसर पर उन्होंने मुख्यमंत्री को जमशेदपुर में जुलाई माह में आयोजित होने वाले डूरंड कप फुटबॉल प्रतियोगिता में सम्मिलित होने के लिये आमंत्रित किया।

राज्यपाल ने दीक्षा भूमि का किया भ्रमण

रांची। राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार ने शुक्रवार को दीक्षा भूमि, नागपुर में भगवान बुद्ध की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर उन्हें नमन किया। उन्होंने वहां भारतीय संविधान के निर्माता भारत रत्न बाबासाहेब डॉ भीमराव आंबेडकर को श्रद्धांजलि अर्पित की तथा दीक्षाभूमि परिसर का अवलोकन किया। राज्यपाल ने इस ऐतिहासिक स्थल का भ्रमण करते हुये कहा कि इस पावन भूमि में बाबासाहेब डॉ भीमराव आंबेडकर ने बौद्ध धम्म की दीक्षा लेकर सामाजिक न्याय, समानता और मानवीय गरिमा के मूल्यों को नया जीवन प्रदान किया। उन्होंने कहा कि बाबासाहेब द्वारा रचित भारतीय संविधान देश के प्रत्येक नागरिक के अधिकारों की रक्षा करता है।

गंभीर बीमारी से जूझ रहे हैं आइएएस विनय कुमार चौबे

- नेफ्रोलॉजी से मांगा गया कंसल्टेशन, शराब घोटाला मामले में हुए हैं गिरफ्तार

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। शराब घोटाला मामले में न्यायिक हिरासत में रिम्स में भर्ती सीनियर आईएएस विनय कुमार चौबे गंभीर बीमारी से जूझ रहे हैं। उन्हें किडनी की बीमारी है। ऊपर से हाई ब्लड प्रेशर भी है। 22 मई की शाम तबीयत खराब होने के बाद उन्हें बिरसा मुंडा केंद्रीय कारा से रिम्स शिफ्ट किया गया था। उनको पेईंग वार्ड के सेकेंड फ्लोर पर मौजूद 11 नंबर कमरे में भर्ती कराया गया है। गुरुवार को मेडिसिन विभाग के डॉ. ऋषि तुहिन गुड़िया ने उनके हेल्थ कंडिशन को देखते हुए ब्लड और यूरिन के सैंपल को जांच के लिए भिजवाया था।

किडनी की गंभीर समस्या और हाई ब्लड प्रेशर

रिम्स के प्रभारी जनसंपर्क पदाधिकारी डॉ. राजीव रंजन ने कहा है कि शुक्रवार सुबह पेथोलॉजी से जुड़ी कई रिपोर्ट आ गई है। रिपोर्ट के आधार पर रिम्स प्रबंधन ने नेफ्रोलॉजी विभाग की एचओडी डॉ. प्रज्ञा पंत घोष को कंसल्टेशन देने को कहा है। क्योंकि रिपोर्ट में किडनी फंक्शन से जुड़ी काफी गड़बड़ी सामने आई है। उन्होंने कहा कि डॉ. प्रज्ञा पंत घोष के आगे के सुझाव के आधार पर लाइन ऑफ ट्रीटमेंट तय होगा।

इधर, जेल आईजी सुदर्शन मंडल से पूछा गया कि क्या विनय कुमार चौबे की बीमारी को देखते हुए परिवार के किसी सदस्य को अटेंडेंट बनाया गया है। जवाब में उन्होंने जेल मैन्यूअल का हवाला देते हुए कहा कि अटेंडेंट का कोई प्रावधान नहीं होता है। सप्ताह में मुलाकात करने की इजाजत दी जाती है। हालांकि अभी तक रिम्स प्रबंधन यह बताने की स्थिति में नहीं है कि विनय कुमार चौबे का इलाज रिम्स में ही हो सकता है या फिर बाहर के बड़े सेंटर में शिफ्ट करने की जरूरत होगी। जानकारी के मुताबिक गुरुवार 22 मई को रिम्स में भर्ती होने पर उनकी पत्नी रात का भोजन लेकर पहुंची थीं। शुक्रवार सुबह भी उनके घर से ही भोजन आया था। उनको डॉक्टर की सलाह के मुताबिक घर का ही भोजन दिया जा रहा है।

20 मई को एसीबी ने किया था गिरफ्तार

दरअसल, 20 मई को एसीबी की टीम आईएएस विनय कुमार चौबे को उनके घर से लेकर दफ्तर आई थी। यहां कुछ घंटों तक सवाल पूछे जाने के बाद शाम के वक्त उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया था। उसी दिन कोर्ट में पेश करने के बाद जेल भेज दिया गया था। एसीबी का आरोप है कि उत्पाद विभाग के सचिव पद पर रहते हुए झारखंड उत्पाद नीति 2022 को लागू कराने और प्लेसमेंट एजेंसी के चयन में धांधली कर राज्य को करीब 38 करोड़ का नुकसान पहुंचाया था। इस मामले में अब तक चार अधिकारी समेत कुल पांच लोग गिरफ्तार किए जा चुके हैं।

पूर्व मंत्री रामचंद्र सहिस मामले में हुई आंशिक सुनवाई

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। ओबीसी आरक्षण सहित अन्य मांगों को लेकर मुख्यमंत्री आवास का घेराव करने के मामले में नामजद पूर्व मंत्री रामचंद्र सहिस की ओर से दाखिल डिस्चार्ज याचिका पर शुक्रवार को एमपी-एमएलए कोर्ट में आंशिक सुनवाई हुई। मामले में अभियोजन पक्ष की ओर से जवाब दाखिल नहीं किया गया है। मामले में जवाब दाखिल करने के बाद आगे की सुनवाई होगी। इसके लिये अदालत ने 16 जून की तारीख निर्धारित की है। रामचंद्र सहिस ने मामले में अपने आप को निर्दोष बताते हुये 13 मई को डिस्चार्ज याचिका दाखिल की है। वहीं, इसी मामले में आरोपी सुदेश महतो और सांसद चंद्र प्रकाश चौधरी की डिस्चार्ज याचिका अदालत खारिज कर चुकी है। मामला आरोप गठन पर चल रहा है। घटना को लेकर ओरमांझी के तत्कालीन सीओ विजय केरकेट्टा ने लालपुर थाना में 8 सितंबर 2021 को कांड संख्या 201/2021 के तहत प्राथमिकी दर्ज कराई थी। जिसमें कहा गया है कि मुख्यमंत्री आवास घेराव को लेकर आजसू कार्यकर्ता मोरहाबादी मैदान में एकत्रित हुये। इसका नेतृत्व सुदेश महतो, चंद्र प्रकाश चौधरी, लंबोदर महतो, रामचंद्र सहिस समेत अन्य कर रहे थे। इनलोगों पर जान बूझकर प्रतिनियुक्त पदाधिकारियों के साथ धक्का-मुक्की, सरकारी काम में बाधा डालने का आरोप है।

11वीं-13वीं डॉक्यूमेंट वेरिफिकेशन.इंटरव्यू शेड्यूल जारी

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। झारखंड लोक सेवा आयोग ने 11वीं और 13वीं संयुक्त सिविल सेवा मुख्य परीक्षा के सफल 864 अभ्यर्थियों के लिये इंटरव्यू और डॉक्यूमेंट वेरिफिकेशन का शिड्यूल जारी कर दिया है। आयोग ने गुरुवार को इससे संबंधित नोटिफिकेशन जारी किया है।

डॉक्यूमेंट वेरिफिकेशन और इंटरव्यू की तारीखें : दस्तावेज सत्यापन - 9 जून से 22 जून 2025 तक, समय- सुबह 10 बजे से, इंटरव्यू- 10 जून से 23 जून 2025 तक, समय- सुबह 9.30 बजे से, स्थान- जेपीएससी कार्यालय, रांची। अभ्यर्थियों को इंटरव्यू के दिन सुबह 9. 30 बजे तक रिपोर्ट करना अनिवार्य होगा।

आज से डाउनलोड होगा कॉल लेटर : 24 मई 2025 से अपना कॉल लेटर आयोग की आधिकारिक वेबसाइट डाउनलोड कर सकते हैं। कॉल लेटर डाउनलोड करने के लिए रोल नंबर और जन्मतिथि की आवश्यकता होगी। इसके अलावा, इच्छुक अभ्यर्थी 9 जून से पहले आयोग के काउंटर पर आवेदन कर भी कॉल लेटर प्राप्त कर सकते हैं।

राजस्व निबंधन एवं भूमि सुधार विभाग में 33 अफसरों का हुआ ट्रांसफर

खबर मंत्र ब्यूरो

रांची। झारखंड सरकार ने जमीन से जुड़े सर्वे और रिकॉर्ड का काम कर रही जमीन सर्वे टीमों में 33 अफसरों का ट्रांसफर पोस्टिंग किया है। इन अफसरों में आईटी मैनेजर, प्रोजेक्ट कोऑर्डिनेटर और बिजनेस एनालिस्ट जैसे तकनीकी पदों पर लोग शामिल हैं। सभी को उनके नये जिलों में तुरंत योगदान देने को कहा गया है।

ट्रांसफर किये गये अधिकारियों की सूची

राकेश रंजन को रांची से देवघर, रंजीत कुमार को रांची से पाकुड़, प्रशांत कुमार को रांची से साहेबगंज, कुंदन कुमार को लोहरदगा से लातेहार, रोहित कुमार को लोहरदगा से पलामू, दीपक कुमार को लोहरदगा से गढ़वा, आशीष कुमार को लोहरदगा से चतरा, रवि रंजन को लोहरदगा से कोडरमा, राहुल कुमार को लोहरदगा से चतरा, रोशन कुमार को लोहरदगा से कोडरमा, आनंद कुमार को लोहरदगा से गिरिडीह, विशाल कुमार को लोहरदगा से दुमका, मनीष कुमार को लोहरदगा से साहेबगंज, राहुल राज को लोहरदगा से गोड्डा, कुमार विकास को गढ़वा से साहेबगंज, मनीष कुमार सिंह को गढ़वा से सिमडेगा, अजीत कुमार को गढ़वा से लोहरदगा, प्रिंस कुमार को गढ़वा से कोडरमा, अरविंद कुमार को गढ़वा से पाकुड़, राहुल कुमार को हजारीबाग से सिमडेगा, अमित विक्रम को हजारीबाग से देवघर, रवि रंजन कुमार को हजारीबाग से साहेबगंज, विवेक आनंद कुमार को हजारीबाग से देवघर, रविकांत कुमार को हजारीबाग से पाकुड़, अजीम खान को पाकुड़ से गढ़वा, दीपक कुमार को साहेबगंज से हजारीबाग, विशाल कुमार को गोड्डा से लातेहार, अजीत कुमार को देवघर से गिरिडीह, राहुल कुमार को देवघर से साहेबगंज, पवन कुमार को देवघर से पाकुड़, नवीन कुमार को देवघर से साहेबगंज और रंजीत कुमार को साहेबगंज से हजारीबाग स्थानांतरित किया गया है।

सभी अफसरों को नये जिले में तुरंत काम शुरू करने को कहा गया है और बिना इजाजत तबादले में कोई बदलाव नहीं किया जायेगा। अगले माह का बेतन भी नये पोस्टिंग स्थान से दिया जायेगा।

इरफान अंसारी मामले में 11 जून को होगी सुनवाई

रांची। स्वास्थ्य मंत्री इरफान अंसारी के खिलाफ दर्ज आपत्तिजनक टिप्पणी मामले में अदालत ने उपस्थिति की अगली तारीख 11 जून निर्धारित की है। मामले में उपस्थिति की तारीख पूर्व से निर्धारित थी। लेकिन, मंत्री इरफान अंसारी नहीं पहुंचे। एमपी-एमएलए कोर्ट ने 24 फरवरी मानहानि और शांति भंग करने के इरादे से अपमान करने के मामले में संज्ञान लेते समन जारी किया है। मालूम हो कि योग शिक्षिका राफिया नाज के बारे में इरफान अंसारी ने एक निजी समाचार चैनल पर उसके पहनावे को लेकर आपत्तिजनक टिप्पणी की थी। इससे उनकी छवि धूमिल हुई और धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंची है। इसको लेकर राफिया नाज ने 19 अगस्त 2020 को सिविल कोर्ट रांची में इरफान अंसारी के खिलाफ स्त्री लज्जा भंग करने, भीड़ को हिंसा के लिये उकसाने और पहनावे को लेकर अनुचित टिप्पणी करने का आरोप लगाते हुये शिकायतवाद दर्ज कराई थी। अदालत ने मानहानि और शांति भंग करने के इरादे से अपमान करने के मामले में संज्ञान लिया है।

हत्या के दोषी को उम्र कैद की सजा

रांची। अपर न्यायायुक्त योगेश कुमार की अदालत ने शुक्रवार को हत्या से जुड़े पांच साल पुराने मामले में दोषी करार अभियुक्त कुर्बान उर्फ टेनिया को उम्र कैद की सजा सुनाई है। साथ ही उस पर 15 हजार रुपये का जुर्माना लगाया गया है। अदालत ने उक्त आरोप में 21 मई को दोषी ठहराया था। हिंदपीढ़ी थाना क्षेत्र के नेजाम नगर निवासी कुर्बान ने 21 जनवरी 2020 को किसी विवाद को लेकर सुभान पर चाकू से वार किया। इससे उसकी मौत हो गई थी। घटना को लेकर मृतक के बड़े भाई ने हिंदपीढ़ी थाना में प्राथमिकी दर्ज कराई थी। मामले में सुनवाई के दौरान अभियोजन पक्ष की ओर से ठोस गवाही दर्ज कराई है। इसके आधार पर अदालत ने अभियुक्त दोषी पाकर सजा सुनाई है।

Government of Jharkhand
Directorate of Industries
Jharkhand Government Tool Room, Ranchi
(Formerly Jharkhand Government Mini Tool Room & Training Centre, Ranchi)
Plot No: 38, Phase I, Tatisilwai Industrial Area, Muri Road, Ranchi- - 835103 ,
e-mail: info@jgtr.in, principal@jgtr.in, jgmtrtc_ran@yahoo.co.in Web site: www.jgtr.in
Phone No. 0651-2265966, Fax No.0651-2265578

ONLINE TENDER NOTICE
NIT No. 293/ Date 22.05.2025

Govt. of Jharkhand has set up state-of-the art Tool Room & Training Centre at Tatisilwai, Ranchi & Dumka. The centres requires Maintenance of Coordinate Measuring Machine & EMCO Turning & Milling Machine as pertaining the details furnished in website.

Interested original Tenderer and /or their authorized representatives / dealers having permanent registered office in India and operating in India over last 5 (Five) years are eligible to participate in the tender.

The complete tender document including ITT, GCC, technical specification, price bid, cost of tender, EMD requirements etc. can be downloaded from the web sites www.jharkhandtenders.gov.in & www.jgtr.in from 25th May 2025 onwards.

Note: JGTR, Ranchi reserves the right to reject the application of any or all the intending bidders without assigning reasons whatsoever.

Sd/-
(Director of Industries)

PR 353294 Industries(25-26)#D

कार्यपालक अभियंता का कार्यालय
भवन निर्माण विभाग, भवन प्रमण्डल, रामगढ़

अतिअल्पकालीन निविदा आमंत्रण सूचना सं0–6/2025–26

1. विज्ञापनदाता का नाम एवं पदनाम : कार्यपालक अभियंता, भवन प्रमंडल रामगढ़।
2. परिमाण विपत्र निर्गत की तिथि एवं समय : दिनांक 30/05/2025 को अपराह्न 1:00 बजे तक ।
3. निविदा प्राप्ति की तिथि एवं समय : दिनांक 31/05/2025 को अपराह्न 3:00 बजे तक।
4. निविदा खोलने की तिथि एवं समय : दिनांक 31/05/2025 को अपराह्न 3:30 बजे।
5. परिमाण विपत्र बिक्री का स्थान : (1) अधीक्षण अभियंता, भवन निर्माण विभाग, भवन अंचल हजारीबाग, (2) कार्यपालक अभियंता भवन निर्माण विभाग, भवन प्रमंडल, रामगढ।
6. निविदा प्राप्ति का स्थान : कण्डिका 5, में वर्णित (2)
7. कार्यो का विवरण :–

क्र0 स0	कार्य का नाम	प्राक्कलित राशि	अग्रधन की राशि	परिमाण विपत्र का मुल्य	कार्य समाप्ति की अवधि
1	Construction of PCC road from KK Kolmari Poda to Chururtungi Bastar, Sayal KK Block-Patratu, Ramgarh (Phase-II)	49,02,000/-	98,500/-	5,000/-	6 माह
2	Construction of PCC road from Gram Uchringa Nayak tola to Aganwadi Centre Talatand, Block- Patratu, Ramgarh (Phase-I)	36,65,100/-	74,000/-	5,000/-	6 माह

* निविदा की शर्तें एवं अन्य सूचनाएँ www.jharkhandtenders.gov.in पर भी देखा जा सकता है।

कार्यपालक अभियंता
भवन प्रमंडल ,रामगढ़

PR 353300 (Building)25-26*D

29 से शुरू होगी राष्ट्रीय सरना धर्म न्याय यात्रा

- उदीत नगर राउरकेला से राजी धर्मगुरु बंधन तिग्गा करेंगे शुरुआत

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। आगामी 29 मई से चलें गांव-देहात की ओर राष्ट्रीय सरना धर्म न्याय यात्रा का शुभारंभ किया जाएगा। शुरुआत सरना पूजा स्थल उदीत नगर राउरकेला से राजी धर्मगुरु बंधन तिग्गा करेंगे। ये जानकारी शुक्रवार को हरमू देशावली में हुई प्रेसवार्ता में राजी पड़हा सरना प्रार्थना सभा के केंद्रीय प्रवक्ता संजय पाहन ने दी। बताया कि 29, 30 और 31 मई को तीन दिवसीय ओड़िशा राज्यस्तरीय युवा नेतृत्व सह राष्ट्रीय सरना धर्म न्याय कार्यशाला भी होगी। इसके बाद एक जून को लोहरदगा जिला के कामडरा प्रखंड में, सात और आठ जून को जतरा शक्ति खूंटा पड़हा भवन मुड़मा में, 15 जुलाई को कावगाछी कोलकाता, 20 जुलाई को लातेहार जिला के पलामू, 26 जून को मुड़मा, 29 जून को हजारीबाग, 12 जुलाई को जामताड़ा में राष्ट्रीय सरना धर्म न्याय कार्यशाला होगी।

इस न्याय यात्रा सह कार्यशाला में दो करोड़ सरना अप्रैल 2026 की जनगणना में लिखवाने, मरंगबुरु पर्वत गिरिडीह, मुड़हर पहाड़ सुतियाम्बे गढ़, लुगुबुरु घंटाबाड़ी लालपनिया बोकारो, दिउड़ी दीरी तमाड़ में अतिक्रमणों के विरूद्ध चर्चा की जाएगी। इसके अलावा झारखंड के 13 अनुसूचित जिलों में विदेशी शराब की बिक्री पूर्णतः बंद कराने और केंद्रीय सरना पूजा स्थल सिरम टोली के मुख्य द्वार से रैंप को आगे बढ़ाने जैसे मुद्दों पर चर्चा की जाएगी। मौके पर रवि तिग्गा, चम्पा कुजूर सहित कई लोग मौजूद थे।

न्यू जर्सी पहुंचे सुदेश महतो, बिजाना के समारोह में होंगे विशिष्ट अतिथि

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। झारखंड के पूर्व उपमुख्यमंत्री सुदेश महतो अमेरिका के न्यू जर्सी में बिहार-झारखंड एसोसिएशन ऑफ नार्थ अमेरिका (बिजाना) के स्वर्ण जयंती समारोह एवं ग्लोबल कॉनक्लेव 2025 में विशिष्ट अतिथि के रूप में शामिल होंगे। प्रवासी भारतीयों की संस्था 'बिजाना' का दो दिवसीय स्वर्ण जयंती समारोह कल से आरंभ हो रहा है, जिसमें बिहार-झारखंड की संस्कृति की खुशबू बिखरेगी। समारोह में भारत और विश्व भर से नामी-गिरामी हस्तियां भाग ले रही हैं।

श्री महतो समारोह में शामिल होने के लिए अमेरिका पहुंच चुके हैं। समारोह में श्री महतो के अलावा

विश्व बैंक के ग्लोबल निदेशक सरोज झा, प्रसिद्ध गायक कैलाश खेर, सुपर 30 के संस्थापक आनंद कुमार, आज तक की वरीय संपादक श्वेता सिंह, भोजपुरी फिल्म स्टार अक्षरा सिंह, संगीत निर्देशक विशाख ज्योति, प्रिंसटन विश्वविद्यालय के प्रोफेसर नीरज झा के अलावा कई प्रसिद्ध हस्तियां उपस्थित रहेंगी। समारोह में अमेरिका के अलावा यूरोप के भी बिहार-झारखंड के प्रवासी भारतीय पहुंच रहे हैं।

बिजाना के अध्यक्ष संजीव सिंह झारखंड के ही निवासी हैं। उन्होंने कहा है कि बिजाना द्वारा प्रत्येक वर्ष समारोह आयोजित किया जाता है, लेकिन संस्था के गठन का पचासवां साल होने के कारण होने वाला स्वर्ण जयंती समारोह एक यादगार अनुभव बनने जा रहा है। उन्होंने बताया कि बिजाना की स्थापना 1975 में की गई थी और यह बिहार एवं झारखंड की सांस्कृतिक पहचान को संरक्षित करने, युवा नेतृत्व एवं शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध है। बिजाना विश्व के साथ भारत के संबंधों एवं छवि को सुधारने की दिशा में भी एक सफल मंच साबित हुआ है।

राजधानी में बनेंगे तीन नये वेंडर मार्केट, नगर निगम ने शुरू की प्रक्रिया

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। राजधानी रांची में सड़कों और सार्वजनिक स्थलों पर अनियमित रूप से दुकान लगाने वाले फुटपाथी दुकानदारों को सुव्यवस्थित करने की दिशा में रांची नगर निगम ने महत्वपूर्ण पहल की है। रांची निगम द्वारा शहर में तीन नवीन वेंडर मार्केट के निर्माण की योजना बनाई गई है। जिसके लिए विस्तृत परियोजना प्रतिवेदन (डीपीआर) तैयार किया जा रहा है। नव प्रस्तावित वेंडर मार्केट का निर्माण चुटिया थाना क्षेत्र, लोयला मैदान और दिव्यायन परिसर के पास किया जाएगा। इन स्थलों पर फुटपाथी दुकानदारों को योजनाबद्ध रूप से स्थापित किया जायेगा। जिससे न केवल व्यवसायिक गतिविधियां सुव्यवस्थित होंगी, बल्कि यातायात अवरोध की

समस्या से भी मुक्ति मिलेगी।

सर्वेक्षण के आधार पर योजनाओं को मिल रहा स्वरूप : रांची नगर निगम का उद्देश्य न केवल शहरी सौंदर्यीकरण को बढ़ावा देना है, बल्कि यातायात प्रबंधन को भी सुदृढ़ करना है। विगत में कराए गए एक व्यापक सर्वेक्षण में यह आकलन किया गया था कि नगर क्षेत्र के विभिन्न हिस्सों में कितने फुटपाथी विक्रेता कार्यरत हैं। अब निगम उन्हें चिन्हित स्थानों पर स्थानांतरित कर समुचित ढांचा प्रदान करने की दिशा में अग्रसर है।

पूर्व में सफल हो चुकी है यह पहल

इससे पूर्व नागा बाबा खटाल और कोकर स्थित डिस्टिलरी मार्केट में सैकड़ों फुटपाथी दुकानदारों को व्यवस्थित रूप से स्थान प्रदान किया गया था। इन स्थलों पर निगम द्वारा विद्युत, पेयजल एवं शेड जैसी आधारभूत सुविधाएं उपलब्ध कराई गई हैं। अब वहां शौचालय की व्यवस्था भी की जा रही है। इससे न केवल दुकानदारों को स्थायी व्यवसायिक आधार मिला है, बल्कि स्वच्छता एवं सफाई व्यवस्था में भी अभूतपूर्व सुधार हुआ है। रांची नगर निगम के पीआरओ गौतम प्रसाद साहू ने जानकारी देते हुए कहा कि योजनबद्ध तरीके से कम हो रहा है। डीपीआर भी बन रहा है और जल्द ही रांची में और तीन वेंडर मार्केट बनकर तैयार हो जाएगा। रांची को स्मार्ट सिटी के रूप में डेवलप किया जा रहा है। इसी दिशा में यह पहल शुरू हुई है।

आज से चौकीदार बहाली दौड़, खेलगांव में स्टेडियम के आसपास निषेधाज्ञा होगी लागू

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। जिला में चौकीदार की बहाली प्रक्रिया अब अंतिम चरण में है। लिखित परीक्षा में सफल उम्मीदवारों की शारीरिक जांच और दौड़ का आयोजन 24 से 26 मई तक बिरसा मुंडा एथलेटिक्स स्टेडियम, खेलगांव में किया जाएगा। पुरुषों को 5 मिनट में 1.6 किलोमीटर दौड़ने पर 20 अंक और 6 मिनट में दौड़ पूरी करने पर 10 अंक मिलेंगे। जबकि महिलाओं के लिए यह समय सीमा 8 और 10 मिनट है। आयोजन को शांतिपूर्ण और व्यवस्थित ढंग से संपन्न कराने के लिए प्रशासन ने पूरी तैयारी कर ली है। भीड़ और अव्यवस्था को रोकने के उद्देश्य से स्टेडियम के 200 मीटर के दायरे में निषेधाज्ञा लागू की गई है, जो 23 मई शुक्रवार शाम 7 बजे से 26 मई शाम 7 बजे तक प्रभावी रहेगी।

क्या-क्या चीजें रहेंगी बैन : स्टेडियम के पास कुछ दिन तक खास नियम लागू रहेंगे। इस दौरान पांच या उससे ज्यादा लोग एक साथ जमा नहीं हो सकते (सरकारी काम वाले लोग छोड़कर)। लाउडस्पीकर या कोई भी तेज आवाज वाला यंत्र इस्तेमाल नहीं किया जा सकेगा। साथ ही किसी भी तरह का हथियार या डंडा वगैरह लेकर चलने की भी सख्त मनाही रहेगी। कोई सभा या मीटिंग करना भी इस दौरान मना है।

ब्राउन शुगर, मोबाइल, स्कूटी व चार लाख पचास हजार नगद जब्त

प्रेमी युगल कर रहा था ब्राउन शुगर का धंधा, छापेमारी के बाद गिरफ्तार

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। राजधानी में नशा कारोबारियों के खिलाफ पुलिस का अभियान लगातार जारी है। पुलिस ने कोतवाली थाना क्षेत्र से ब्राउन शुगर के धंधे में शामिल एक युवक व एक युवती को गिरफ्तार किया है। गिरफ्त में आये अभियुक्त सूरज कुमार (बड़की खरारी, थाना-करहगर, जिला-रोहतास, बिहार) और सेजल खान (नूर नगर, पुरानी रांची नियर सौकत कबाड़ी दुकान, थाना-कोतवाली, रांची) के पास से 110 ग्राम ब्राउन शुगर,मोबाइल, स्कूटी व नगद चार लाख पचास हजार रूपये जब्त की है।

इस संबंध में डीआईजी सह एसएसपी चंदन कुमार सिन्हा ने बताया कि पुलिस को गुप्त सूचना मिली थी कि कोतवाली थाना अन्तर्गत पुरानी रांची के नूर नगर में

एक लड़का भारी मात्रा में ब्राउन शुगर लेकर आया है। उक्त सूचना पर पुलिस उपाधीक्षक कोतवाली के नेतृत्व में एक टीम का गठन किया गया। छापामारी टीम ने नूर नगर (खेत मोहल्ला) में अहसन जुनैद के घर पर मकान मालिक के समक्ष करीब तीन बजे रात्रि को सेजल खान के कमरे में छापामारी की, जहां लड़का की तलाशी लेने पर उसके पास से 110 ग्राम ब्राउन शुगर बरामद किया गया। वहीं पुलिस टीम ने कमरे की तलाशी लेने पर सेजल खान और सूरज कुमार के सोये हुए बेड में बिछावन के नीचे छिपाकर रखा हुआ नगद चार लाख पचास हजार रूपया बरामद किया।

पुलिस पूछताछ में दोनों ने बरामद पैसा के बारे में बताया कि यह पैसा ब्राउन शुगर से बिक्री से प्राप्त हुआ है। दोनों काफी समय से सासाराम से ब्राउन शुगर लाकर रांची में बिक्री करते हैं, दोनों के बीच प्रेम प्रसंग भी है।

बिड़ला मैदान से ब्राउन शुगर के साथ दो युवक गिरफ्तार

रांची। सुखदेव नगर थाना की पुलिस ने नशा कारोबार में संलिप्त दो युवक विशाल मित्तल उर्फ हेमंत मित्तल (सेन्ट्रल बैंक गली आखिल मेमोरियल स्कूल रातु रोड, थाना सुखदेवनगर) और आरिफ इकबाल (नाला रोड गली नं0-इ/7 हिन्दपीढ़ी) को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने गिरफ्त में आये अभियुक्तों के पास 2.86 ग्राम ब्राउन शुगर, मोबाइल व एक यामहा बाइक जब्त की है।

इस संबंध में डीआईजी सह एसएसपी चंदन कुमार सिन्हा ने बताया कि पुलिस को गुप्त सूचना मिली थी कि सुखदेवनगर थाना अन्तर्गत बिड़ला मैदान के पास अवैध नशीले पदार्थों का खरीद बिक्री हो रही है। उक्त सूचना पर टीम का गठन किया गया और टीम ने सूचना को सही पाया और अभियुक्त विशाल मित्तल उर्फ हेमन्त मित्तल और आरिफ इकबाल को पकड़ लिया। मौके पर दोनों के पास से ब्राउन शुगर, स्मार्टफोन और एक मोटरसाईकिल (जेएच01डीएल-8656) को जब्त किया गया है। पुलिस पूछताछ में दोनों व्यक्तियों ने बताया कि ब्राउन शुगर सासाराम, बिहार से खरीद कर लाते हैं। उसके बाद हिन्दपीढ़ी, हरमु मैदान, विधानगर, मधुकम, (सुखदेवनगर) क्षेत्र में धूमधूम कर बेचते हैं।

परिजनों पर गाली गलौज व मारपीट करने का आरोप

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। जगन्नाथपुर थाना अंतर्गत हटिया में रहनेवाली पिंकी देवी ने अपने भैसुर राजन प्रसाद व गोतनी किरण देवी के खिलाफ मारपीट और गाली गलौज करने का आरोप लगाते हुये थाने में प्राथमिकी दर्ज करायी है। पुलिस मामले की छानबीन कर रही है।

क्या है मामला : प्राथमिकी में पिंकी देवी ने पुलिस को बताया है कि वह अपने ससुर के द्वारा बनाये गये मकान में रहती है। जिसमें दो फ्लैट को आरोपी भैसुर ने किराया पर लगाया है। बुधवार की रात्रि करीब 11:30 बजे किरायदार धमेंद्र सिंह घर आया और दरवाजा जोर-जोर से पीटने लगा। रात के कारण गेट बंद था। जब आवाज सुनकर दरवाजा खोले तो धमेंद्र सिंह गाली-गलौज करने लगा। इसका विरोध करने पर किरायेदार ने धक्का देकर जमीन पर गिरा दिया। इसकी जानकारी पीसीआर को दी। पीसीआर के जाने के बाद किरायेदार ने घर की बिजली काट दी। दूसरे दिन भैसुर और उसकी पत्नी घर पहुंची और उल्टे गाली गलौज व मारपीट करने लगी।

डॉ. जया चौहान ने डीपीएस की प्राचार्या का पदभार संभाला

रांची। डीपीएस रांची की प्राचार्या के रूप में डॉ. जया चौहान ने शुक्रवार को कार्यभार संभाला लिया। उनकी नियुक्ति हाल ही में दिल्ली पब्लिक स्कूल सोसाइटी, नयी दिल्ली द्वारा की गयी है। लगभग दो दशकों तक डीपीएस रांची में वरिष्ठ अंग्रेजी शिक्षिका के रूप में सेवा देने वाली डॉ. चौहान स्कूल की संस्कृति और मूल्यों से भलीभांति परिचित हैं। संस्था के साथ उनका गहरा जुड़ाव और वर्षों में उनके द्वारा किए गए असाधारण योगदान ने उन्हें व्यापक सम्मान और प्रशंसा दिलाई है। डीपीएस रांची में उनके सबसे उल्लेखनीय योगदानों में से एक है एसएटी केंद्र बनाना जिसने विद्यालय की शैक्षणिक प्रतिष्ठा को उल्लेखनीय रूप से बढ़ाया। उनकी नवोन्मेषी सोच और दूरदर्शी दृष्टिकोण ने पारंपरिक शिक्षण और प्रशासन की सीमाओं को लगातार चुनौती दी है। डीपीएस रांची में वापसी से पूर्व डॉ. चौहान डीपीएस राउरकेला की प्राचार्या थीं।

डालसा सचिव की अध्यक्षता में पीएलवी का क्षमता निर्माण कार्यक्रम

योजनाओं को लेकर ग्रामीणों को जागरूक करें : आर. के. भास्कर

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। झालसा कैलेंडर के अनुसार शुक्रवार को डालसा हॉल रांची में लगभग 60 कार्यरत पीएलवी के साथ डालसा सचिव रवि कुमार भास्कर ने बैठक की। बैठक में उपस्थित पी.एल.वी. के किये गये कार्यों की समीक्षा की एवं कार्यरत सभी पीएलवी की क्षमता निर्माण कार्यक्रम के तहत उन्हें कई दिशा-निर्देश दिये गये। बैठक को संबोधित करते हुए सचिव रवि कुमार भास्कर ने उनके द्वारा किये गये कार्यों की समीक्षा की एवं सभी पीएलवी से कहा कि गांव में ग्रामीणों के बीच नालसा एवं झालसा द्वारा चलाये जा रहे योजनाओं के बारे में बताकर लोगों को जागरूक करें। जरूरतमंदों को वृद्धा पेंशन, विधवा पेंशन एवं सरकारी के द्वारा चलाये जा रहे लाभकारी योजनओं से अवगत कराकर उन्हें लाभ पहुंचाये।

मासिक लोक अदालत का आयोजन

- कुल 755 वादों का हुआ निष्पादन, 26,58,146 रुपये की समझौता राशि हुई प्राप्त

रांची। जिला विधिक सेवा प्राधिकार द्वारा शुक्रवार को सुबह 10:30 बजे से व्यवहार न्यायालय, रांची में मासिक लोक अदालत का आयोजन किया गया। इसके लिये 8 बेंच का गठन किया गया। इस लोक अदालत में कुल 755 वादों का निष्पादन किया गया एवं 26,58,146/- (छब्बीस लाख अंठावन हजार एक सौ छियालिस) रूपयों का निष्पादन विभिन्न वादों में किया गया।

ज्ञात हो कि मासिक लोक अदालत के सफल आयोजन के लिए पूर्व से ही वादकारियों को नोटिस भेजा जा रहा था ताकि अधिक से अधिक लंबित वादों का निस्तारण हो सके।

27 साल बाद अपने घर पर मिला कब्जा

रांची। 27 साल की लंबी कानूनी लड़ाई लड़ने के बाद जेजे रोडए, अपरबाजार निवासी उत्तम कुमार टिंबरेवाल को अपने मकान पर कब्जा लेने में सफलता हाथ लगी। सिविल कोर्ट के सिविल जज चंदन कुमार गोस्वामी की अदालत से पारित आदेश के आधार पर शुक्रवार को मकान पर कब्जा दिलाया गया। कब्जा दिलाने की न्यायिक कार्यवाही सिविल कोर्ट के नाजिर जीशान इकबाल और कार्यपालक दंडाधिकारी जफर हसनात के नेतृत्व में किया गया। उक्त मकान में किरायेदार के रूप में रामगोपाल जालान वर्ष 1998 से रह रहे थे। किरायेदार रामगोपाल जालान मकान पर कब्जा करने की नीयत से मकान में ताला लगाकर कहीं बाहर चले गये थे। व्यक्तिगत रूप से संपर्क करने पर वह मकान को खाली नहीं कर रहे थे। तब मकान मालिक ने वर्ष 1998 में सिविल जज की अदालत में किराएदार को निष्कासित करने को लेकर मुकदमा दर्ज कराया था। इसमें निर्णय मकान मालिक के पक्ष में आया। इसके बाद कोर्ट ने किरायेदार को बलपूर्वक मकान से निष्कासित करने का आदेश दिया।

सदानों के लिए रांची में बने छात्रावास : राजेन्द्र

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। मूलवासी सदान मोर्चा के केंद्रीय अध्यक्ष राजेन्द्र प्रसाद ने सदानों के लिए भी हर जिला मुख्यालय पर छात्रावास निर्माण सरकार कराने की मांग की है। उन्होंने कहा कि शिक्षा में भेद भाव नहीं होना चाहिये। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को बड़ा दिल दिखाना चाहिये। उन्होंने कहा कि कि झारखंड अलग राज्य के आन्दोलन में मूलवासी सदानों ने अपनी शहादत और हर कुर्बानी दी है। लेकिन, राज्य बनने के बाद

कानूनी दांव पेंच से मूलवासी सदानों को उनके अधिकार से वंचित किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि मूलवासी सदानों में इतनी गरीबी है कि आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं होने के कारण शहर में आकर पढ़ाई कर पाने अक्षम है।

दहेज प्रताड़ना का आरोपी साक्ष्य के अभाव में हुआ बरी

रांची। न्यायिक दंडाधिकारी अर्चना कुमारी की अदालत ने दहेज प्रताड़ना से जुड़े एक मामले में आरोपी विक्रांत तिवारी को साक्ष्य के अभाव में बरी कर दिया। सुनवाई के दौरान आरोपी की पत्नी ने कहा कि हमलोगों में आपसी समझौता हो गया। साथ सूचक ने यह भी बयान दिया कि वह केस नहीं लड़ना चाहती है। इसके आधार पर अदालत ने उक्त फैसला सुनाया। आरोपी पर शादी के एक साल बाद ही वाहन खरीदने के लिए बीस लाख रुपये की मांगने और पति द्वारा क्रूरता करने का आरोप था। नवविवाहिता ने 2 जून 2023 को प्राथमिकी दर्ज कराई थी।

डॉ विभा पांडेय को मुक्त करे विभाग : कुलपति

रांची। नीलाम्बर पीताम्बर यूनिवर्सिटी के कुलपति ने शुक्रवार को उच्च शिक्षा विभाग के निदेशक को पत्र लिखकर डॉ विभा पाण्डेय को तुरंत मुक्त करने को कहा है। मालूम हो कि डॉ विभा पाण्डेय का उच्च शिक्षा विभाग में उप निदेशक पद पर तीन वर्ष से ज्यादा समय हो गया था लेकिन, उच्च शिक्षा विभाग उन्हें अवैध रूप से उनसे कार्य ले रही है। रांची विश्वविद्यालय के पूर्व सीनेट सह सिंडीकेट सदस्य डॉ अटल पाण्डेय ने राजभवन और सीएमओ को पत्र लिखकर उन्हें हटाने का आग्रह किया था। उच्च शिक्षा विभाग ने ही नियम बनाया है जो उपनिदेशक तीन वर्ष कार्यकाल पूरा कर लेंगे उन्हें स्वतः विरमित समझा जाएगा। ऐसे में तीन वर्ष से ज्यादा समय देना उच्च शिक्षा विभाग में भ्रष्टाचार संभव है।

डकैती का आरोपी ठोस साक्ष्य के अभाव में बरी

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। अपर न्यायायुक्त एसएन तिवारी की अदालत ने 12 साल पुराने सड़क डकैती मामले में ट्रायल फेस कर रहा आरोपी जाकरिया एक्का को पर्याप्त साक्ष्य के अभाव में बरी कर दिया है। मामले में सुनवाई के दौरान अभियोजन पक्ष की ओर से 10 साल में एक भी गवाह नहीं पहुंचा। इसका लाभ आरोपी को मिला। आरोपी व अन्य पर ट्रक चालक तिलक राज को रॉड और लाठी से पिटाई कर 30 हजार रुपये छीनने का आरोप है। घटना को अंजाम तमाड़ थाना क्षेत्र के एनएच 33 स्थित रुगड़ी हाई स्कूल के समीप 11 अप्रैल 2013

को दिया गया था। मामले में जांच अधिकारी ने जुनुल तिग्गा, दाउद तिर्की, जाकरिया एक्का, मोची राम लोहरा, राजेश्वर मुंडा के खिलाफ धारा 395 आईपीसी के तहत आरोप पत्र दाखिल किया था। जबकि, जोहन टोप्पो के खिलाफ जांच लंबित रखी थी। मामले में जाकरिया एक्का को छोड़ अन्य आरोपियों को अदालत ने दिसंबर 2017 में फरार घोषित कर दिया था। जो अब तक फरार है।

सीसीएल ने आयोजित की उन्नत एमएस ऑफिस एवं एआई पर कार्यशाला, डिजिटल दक्षता को मिला बढ़ावा

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। सेंट्रल कोलफील्ड्स लिमिटेड (सीसीएल) द्वारा शुक्रवार को एक दिवसीय तकनीकी कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसका केंद्र बिंदु था उन्नत एमएस ऑफिस तथा आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) के व्यावहारिक अनुप्रयोग। यह कार्यक्रम नराकास (उपक्रम), रांची के तत्वावधान में सीसीएल मुख्यालय के मानव संसाधन विकास विभाग स्थित प्रकाश सभागार में सम्पन्न हुआ।

इस कार्यशाला में रांची के विभिन्न केंद्रीय उपक्रमों से आए अधिकारियों और कर्मचारियों ने भाग लिया। आयोजन का उद्देश्य था प्रतिभागियों को आधुनिक डिजिटल उपकरणों, विशेषकर एमएस

ऑफिस के नवीनतम संस्करण और एआई आधारित तकनीकों की व्यावहारिक समझ प्रदान करना।

कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए सीसीएल के महाप्रबंधक (राजभाषा) संजय कुमार ठाकुर ने कहा कि डिजिटल युग में दक्षता तभी संभव है जब हम नवीनतम तकनीकों को अपनाएं और उनका व्यावहारिक प्रयोग सीखें। उन्होंने प्रतिभागियों से अपील की कि वे खुलकर प्रश्न पूछें और सीखने की इस प्रक्रिया में पूरी रुचि लें।

मुख्य प्रशिक्षक के रूप में कार्यशाला का संचालन आईटी क्षेत्र के वरिष्ठ विशेषज्ञ ओपी अग्रवाल ने किया। श्री अग्रवाल को कंप्यूटर शिक्षण का 55 वर्षों का अनुभव है और वे विंडोज, माइक्रोसॉफ्ट ऑफिस, गूगल उत्पादों, साइबर सुरक्षा एवं तकनीकी क्षेत्र में हिंदी के प्रयोग के लिए जाने जाते हैं। विशेष बात यह रही कि उन्हें माइक्रोसॉफ्ट के सह-संस्थापक बिल गेट्स द्वारा प्रमाण-पत्र भी प्राप्त हुआ है।

कार्यक्रम में आस्क मी एनीथिंग सत्र प्रतिभागियों के लिए बेहद उपयोगी रहा, जहां उन्होंने अपनी रोजमर्रा की कार्य संबंधी तकनीकी जिज्ञासाओं के समाधान प्राप्त किए। समापन के अवसर पर एक संक्षिप्त प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें विजयी प्रतिभागियों को उपहार देकर सम्मानित किया गया।

राजभाषा विभाग की इस पहल को प्रतिभागियों ने सराहा और इसे कार्यालयों में हिंदी के डिजिटल उपयोग को प्रोत्साहन देने की दिशा में एक सार्थक कदम बताया। कार्यशाला के सफल आयोजन में श्री ठाकुर, डॉ. दिविक दिवेश एवं पूरी राजभाषा टीम की सक्रिय भूमिका रही।

मारपीट और जानलेवा हमला करनेवाले दो साल से फरार आरोपी को भेजा गया जेल

- नामकुम थाना में दर्ज हुई थी प्राथमिकी, दो वर्ष से फरार चल रहा था अभियुक्त

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। नामकुम थाना की पुलिस ने मारपीट व जानलेवा हमला करने के मामले में फरार चल रहे अभियुक्त नौशाद आलम को गिरफ्तार कर शुक्रवार को न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया। पुलिस

की गिरफ्त में आया अभियुक्त मौलाना आजाद कॉलोनी, नामकुम का रहनेवाला है।

इस संबंध में नामकुम थाना प्रभारी मनोज कुमार ने बताया कि नामकुम थाना में 06 अक्टूबर 2023 को कांड संख्या-521 /23 दर्ज की गई थी। जिसमें अप्राथमिकी अभियुक्त नौशाद आलम को गिरफ्तार कर जेल भेजा गया है। अभियुक्त दो वर्ष से फरार चल रहा था। वर्ष 2023 में अमन बस पर सवार होकर बुंडू एसडीओ के गार्ड जा रहे थे। इसी दौरान किराए को लेकर विवाद उत्पन्न हुई थी। जिसमें बस के कंडक्टर एवं चालक ने मिलकर गार्ड की बुरी तरह पिटाई की थी।

रांची विश्वविद्यालय में अगले सत्र से होगी बीपीएड एमपीएड और बीपीएस की पढ़ाई

- कुलपति डॉ अजीत कुमार सिन्हा ने दी हरी झंडी, कई कमेटियां बनीं

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। रांची विश्वविद्यालय अगले सत्र से बीपीएड एमपीएड और बीपीएस की पढ़ाई शुरू करेगा। इसके लिए शुक्रवार को कुलपति डॉ अजीत कुमार सिन्हा ने हरी झंडी दे दी। कुलपति की अध्यक्षता में हुई बैठक में विश्वविद्यालय में इन कोर्सेज को शुरू करने के विभिन्न मुद्दे पर गंभीर चर्चा हुई। इसके कार्यान्वयन के लिए विभिन्न कमेटियों का गठन किया गया। जिसमें यह तय किया गया कि इन विभिन्न कमेटियों का काम इस हेतु पत्राचार अविलम्ब करना, खेल मैदान को तैयार करना तथा क्लास रूम और अन्य काम के लिए जमीन चिन्हित करना रहेगा। नए भवन के निर्माण के लिए नक्शा का डीपीआर बनाने का भी आदेश दिया गया है, जिसके लिए भी एक कमेटी बनाई गई। इन सबों के अतिरिक्त सिलेबस कमेटी का गठन किया गया।

वहीं विश्वविद्यालय में पढ़ाई के लिए फीस का निर्धारण खेल विभाग को सौंपा गया है।

इसके अतिरिक्त प्रोफेसर अरुण सिंह और डॉ राजेश गुप्ता की दो सदस्यों वाली टीम को विभिन्न जगह का दौरा कर पूर्ण ब्योरा देने को कहा गया है।

इस बैठक में विशेष रूप कुलपति डॉक्टर अजीत कुमार सिन्हा, डीएसडब्ल्यू डॉ सुदेश कुमार साहू, रजिस्ट्रार डॉ गुरुचरण साहू, डिप्टी रजिस्ट्रार प्रीतम कुमार, स्पोर्ट्स कोऑर्डिनेटर डॉ राजेश कुमार गुप्ता, डोरंडा कॉलेज के प्राचार्य राजकुमार शर्मा, पूर्व डीएसडब्ल्यू पीके वर्मा, सीटीसी डॉक्टर पीसी झा, प्रोफेसर अनिल, वीरेंद्र कुल्लू, राम मुरमू उपस्थित थे।

बैठक के बाद झारखंड के विभिन्न खेल संघों के खिलाड़ी और अधिकारियों ने कुलपति को गुलाब फूल देकर राज्य और खिलाड़ियों के हित में लिए गए इस निर्णय के लिए स्वागत किया। जिसमें मुख्य रूप से कबड्डी, खो-खो, एथलेटिक्स बैडमिंटन, फुटबॉल के खिलाड़ी शामिल रहे। इनके अतिरिक्त विभिन्न कॉलेजों के पीटीआई राजू साहू, रामप्रसाद, शम्मी सिंह, शिवसागर, तपन रावत, हरीश कुमार सहित कई प्रशिक्षक अधिकारी उपस्थित थे जिन्होंने कुलपति महोदय, विश्वविद्यालय प्रशासन एवं सभी कमिटी के सदस्यों को धन्यवाद दिया।

इक्फाई विश्वविद्यालय झारखंड में राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। इक्फाई विश्वविद्यालय झारखंड ने मे शुक्रवार को 5जी और उससे आगे संचार और नेटवर्किंग में क्रांतिकारी बदलाव पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति कर्नल डॉ. रंजीत सिंह ने किया। संगोष्ठी का उद्घाटन इक्फाई विश्वविद्यालय झारखंड के रजिस्ट्रार प्रोफेसर डॉ. जे. बी. पटनायक ने किया। उन्होंने इस मौके पर डिजिटल परिदृश्य को आकार देने में 5जी की परिवर्तनकारी क्षमता को रेखांकित करते हुए विषय पर विस्तार से चर्चा की।

इस कार्यक्रम में देवी प्रसाद दास, सलाहकार, टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस), डॉ. जीतेश प्रधान (एनआईटी जमशेदपुर), डॉ. अरविंद कुमार पांडे (अर्का जैन विश्वविद्यालय), विजय भूषण पांडे, उप महानिदेशक, दूरसंचार विभाग (डीओटी), झारखंड और डॉ. नीला चप्तोराज (बीआईटी मेसरा) सहित प्रतिष्ठित वक्ताओं और अध्यक्षों ने भाग लिया। तकनीकी सत्रों में अत्याधुनिक विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला को शामिल किया गया, जैसे एआई-संचालित नेटवर्क अनुकूलन, 5जी कनेक्टिविटी के माध्यम से स्मार्ट कृषि, क्लाउड-आधारित वातावरण में साइबर सुरक्षा और एज कंप्यूटिंग एकीकरण, क्वांटम सूचना प्रसंस्करण और भारत के राष्ट्रीय दूरसंचार विजन की रणनीतिक दिशा।

इन चर्चाओं ने इस बारे में समृद्ध अंतर्दृष्टि प्रदान की कि कैसे 5जी और उससे आगे कृषि से लेकर राष्ट्रीय बुनियादी ढांचे के क्षेत्रों में क्रांति ला सकते हैं। डॉ. चंचला ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

झारखंड प्रांतीय मारवाड़ी युवा मंच ने राज्य के स्वास्थ्य मंत्री से की मुलाकात

रांची। झारखण्ड प्रांतीय मारवाड़ी युवा मंच प्रतिनिधिमंडल ने शुक्रवार को स्वास्थ्य मंत्री इरफान अंसारी से शिष्टाचार मुलाकात की। प्रांतीय अध्यक्ष विशाल पाड़िया ने स्वास्थ्य के क्षेत्र को प्रभावी बनाने हेतु कई महत्वपूर्ण सुझाव दिए। उन्होंने कहा की झारखण्ड प्रांतीय (प्रदेश) मारवाड़ी युवा मंच को कृत्रिम अंग सेवा के क्षेत्र में ब्रांड एम्बेसडर के रूप में अधिकृत मान्यता प्रदान की जाए ताकि यह संस्था और प्रभावी ढंग से जनसेवा कर सके। स्वास्थ्य मंत्री ने प्रतिनिधिमंडल के सुझावों की सराहना की और आश्वस्त किया कि वे इस दिशा में गंभीरता से विचार करेंगे तथा संबंधित विभागों से आवश्यक कार्यवाही करवाएंगे। ये जानकारी जनसूचना संपर्क प्रांतीय संयोजक अमित शर्मा ने दी। प्रतिनिधिमंडल में महासचिव दीपक गोयंका, मुख्यालय उपाध्यक्ष श्वेता जालान,सह-मुख्यालय उपाध्यक्ष श्वेता भाला, सह सचिव विकाश अग्रवाल पारुल शामिल थी।

सीएमपीडीआई और डीजीएच के बीच एमओयू

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। सीएमपीडीआई और हाइड्रोकार्बन महानिदेशालय (डीजीएच) ने गैर-परंपरागत हाइड्रोकार्बन संसाधनों पर विशेष ध्यान देते हुए डेटा साझाकरण और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण के लिए एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए हैं। डीजीएच की महानिदेशक डॉ. पल्लवी जैन गोविल और सीएमपीडीआई के अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक मनोज कुमार की उपस्थिति में डीजीएच के एडीजी (विकास) सचिव कुमार और सीएमपीडीआई के

महाप्रबंधक (बिजनेस डेवलपमेंट) आरके अमर ने समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए। इस अवसर पर ओएनजीसी, आईओसीएल, सीबीएम ऑपरेटरों और शैक्षणिक संस्थानों के प्रतिनिधि भी मौजूद थे।

इस समझौते का उद्देश्य कोल बेड मिथेन (सीबीएम), शेल गैस और अन्य गैर-परंपरागत स्त्रोतों की खोज व विकास के लिए संयुक्त शोध, पायलट परियोजनाओं और प्रशिक्षण कार्यक्रमों को बढ़ावा देना है।

इस मौके पर डॉ पल्लवी जैन गोविल ने भारत के ऊर्जा भंडार की पूरी क्षमता को अनलॉक करने में अंतर-एजेंसी सहयोग के महत्व पर जोर दिया। सीएमपीडीआई के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक मनोज कुमार ने सीबीएम, शेल गैस और अन्य गैर-परंपरागत हाइड्रोकार्बन के विकास के लिए सीएमपीडीआई के कार्य के बारे में जानकारी दी। कहा कि यह समझौता ज्ञापन भविष्य के संयुक्त अध्ययनों, पायलट परियोजनाओं और प्रशिक्षण कार्यक्रमों का मार्ग प्रशस्त करेगा, भारत की ऊर्जा सुरक्षा को मजबूत करेगा।

हजरत मौलाना अख़्तर मजाहिरी कांके कब्रिस्तान में सुपुर्द ए खाक

रांची। झारखंड के सबसे बड़े आलिम दीन मदरसा आलिया अरबिया कांके पतराटोली कांके के प्रिंसिपल और दर्जनों मदरसों के संरक्षक हजरत मौलाना अख्तर हुसैन अल-मुजाहिरी का (80) निधन शुक्रवार को हो गया। (इन्ना लिल्लाही व इन्ना इलैहे राजीऔंन)। कांके ईदगाह में नमाज जनाजा अदा की गई और कांके कब्रिस्तान में सुपुर्द ए खाक किया गया। नमाज जनाजा उनके पुत्र कारी मुजफ्फर ने पढ़ाई। मौलाना मुकर्रम, कारी मुजफ्फर, कारी अशरफुल हक, कारी सोहेब, मौलाना समीउल हक, मौलाना मंसूर, मौलाना शाहबुद्दीन ने कहा कि हजरत मौलाना अख़्तर साहब जितने अच्छे आलिम दीन थे उतना ही अच्छे प्रिंसिपल थे और उतना अच्छे गार्जियन थे। मिट्टी में शामिल होने वालों में मुफ्ती नजर तौहीद, मुफ्ती सनाउल्लाह, कारी सोहेब, मौलाना रिजवान, मौलाना मंसूर, मौलाना शाहबुद्दीन, मुफ्ती तल्हा नदवी, मौलाना ओबैदुल्लाह कासमी, मौलाना जियाउलहोदा, मौलाना नसीम अनवर नदवी, मुफ्ती अनवर कासमी, मौलाना समीउल हक, मौलाना तल्हा, झामुमो मुश्ताक, पूर्व केंद्रीय मंत्री सुबोध कांत सहाय, विधायक सुरेश कुमार बैठा, मौलाना निजामुद्दीन, मौलाना मोहम्मद, मुफ्ती इमरान, कारी अशरफुल हक, मौलाना फिरोज, मौलाना शफीउल्लाह, मंजूर अंसारी, ऐनुल हक अंसारी, मजीद अंसारी समेत सैकड़ों लोग थे।

श्रीलक्ष्मी वेंकटेश्वर मंदिर में अचला एकादशी व्रत पर वैदिक ऋति से हुआ महाभिषेक

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। दिव्यदेशम श्रीलक्ष्मी वेंकटेश्वर (तिरुपति बालाजी) मंदिर में ज्येष्ठ मास कृष्णपक्ष की अचला एकादशी व्रत के उपलक्ष्य पर शुक्रवार को अखिलाण्ड कोटि ब्रह्माण्ड के अधिनायक परात्पर ब्रह्म परमात्मा श्रीमन्नारायण का आयोजित पूजोपचार -अनुष्ठानादि की प्रक्रिया पारात्र आगम विधान के अंतर्गत ब्रह्म मुहूर्त में प्रातः 4:30 बजे विश्वरूप दर्शन, सुप्रभातम, मंगलाशासनम और तिरूवाराधन के बाद वैदिक ऋति से महाभिषेक कराया गया। जिसमें दूध, दही, हरिद्रा चूर्ण और सुगंधित चंदन से अनुलेपन तथा शहद, डाभयुक्त जल और गंगाजल से सहस्त्रधारा, कलशधारा, शंखधारा एवं चक्रधारा से अलग-अलग महाभिषेक किया गया। इसके बाद आभूषणों से अलंकार समर्पण करके दिव्य सुगंधित पुष्पों से भव्य श्रृंगार हुआ। पुनः-पुनः पंचोपचार और षोडषोपचार आदि पूजा करके नक्षत्र कुंभ और कर्पूर से महाआरती की गयी। फिर श्रुति, उपनिषद एवं देशिक स्तोत्र मालाओं से महास्तुति किया गया।

प्रातः पूजा, आराधना, वंदन इत्यादि के बाद आम श्रद्धालु भक्तों के लिए मंदिर गोपुरम के बाहरी कपाट खोल दिया गया। अर्चक श्री सत्यनारायण गौतम श्री गोपेश आचार्य और श्री नारायण दास जी ने मिलकर दिन भर के अनुष्ठान को विधिवत संपन्न कराया। मौके पर राम अवतार नारसरिया, अनूप अग्रवाल, प्रभास मित्तल, प्रदीप नरसरिया, घनश्याम दास शर्मा, सीता शर्मा, शंभू नाथ पोद्दार, ओम प्रकाश गरोड़िया, यशोदा देवी, छाया दुबे, भोलानाथ बरनवाल सहित अन्य भक्त शामिल थे।

अचला एकादशी पर श्याम मंदिर में भक्तों ने लगायी हाजिरी

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। हरमू रोड स्थित श्री श्याम मंदिर में शुक्रवार को अचला एकादशी के अवसर पर मंदिर के पट खुलते ही भक्तों की भीड़ लगी रही। प्रातः कालीन श्रृंगार के बाद श्रृंगार आरती में भक्तों ने अपनी अर्जी के साथ बाबा के दरबार में हाजिरी लगायी। एकादशी का दिन श्याम भक्तों के लिए विशेष दिन होता है। दोपहर में विश्राम आरती के बाद मंदिर का पट बंद कर दिया गया। दोपहर के विश्राम के बाद बाबा श्याम का द्वितीय अनुपम संध्या श्रृंगार किया गया। लाल गुलाब, रजनीगंधा, तुलसीदल, गेंदा, गुलबहार मुरुगन फूल की मोटी मालाओं से बाबा श्याम को अद्भुत रूप से सजाया गया। एकादशी संकीर्तन का मुख्य कार्यक्रम मंडल के अध्यक्ष सुरेश सरावगी के नेतृत्व में प्रारंभ हुआ।

.. .तेरा मेरा सांवरे ऐसा नाता है दिन हो चाहे रात हो तेरा सपना आता है

मंडल के कोषाध्यक्ष पंकज गाड़ोदिया, दीपाश्री गाड़ोदिया, तेजस, खुशी गाड़ोदिया ने खाटू नरेश के दिव्य पावन अखंड ज्योति प्रज्वलित की। पंकज गाड़ोदिया ने अखंड ज्योति में फल पेड़ा मेवा रबड़ी और मगहीपान अर्पित कर बाबा के आगे अपनी अर्जी लगायी। मंडल के अध्यक्ष सुरेश सरावगी, महामंत्री विश्वनाथ नारसरिया, उपाध्यक्ष श्रवण ढानढनिया, मंत्री गौरव अग्रवाल मोनू, मंत्री श्यामसुंदर शर्मा, कोषाध्यक्ष पंकज गाड़ोदिया, उपमंत्री अनिल नारनौली सहित कई भक्तों ने बाबा के दरबार में हाजिरी लगायी।

बही मधुर भजनों की धारा

इस अवसर पर कदम कदम पर निभा रहा है ये तू ही है सब चला रहा है..., तेरा मेरा सांवरे ऐसा नाता है दिन हो चाहे रात हो तेरा सपना आता है... सहित कई मधुर भजनों की प्रस्तुती भक्तों ने दी। एकादशी संकीर्तन में भोग लगने के बाद मंदिर में आए सभी दर्शनार्थियों को निरंतर प्रसाद का वितरण किया गया।

भक्तिभाव व श्रद्धा के साथ मना एकादशी उत्सव

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। अग्रसेन पथ स्थित श्री श्याम मन्दिर में शुक्रवार को अपरा एकादशी उत्सव अत्यन्त भक्तिभाव व श्रद्धा के साथ मनाया गया । इस मौके पर श्याम तेरे भरोसे मेरा परिवार है, तू ही मेरी नाव मांझी तू ही पतवार है भजनों की लय पर भक्तगण भाव विभोर हुए। प्रातकाल में श्री श्याम प्रभु को नवीन वस्त्र (बागा) पहनाकर स्वर्ण आभूषणों से अलंकृत कर विभिन्न प्रकार के फूलों जैसे गुलाब, जूही, बेला, मोगरा, गेंदा व तुलसी दल से मनभावन श्रृंगार किया गया। साथ ही मन्दिर में विराजमान शिव परिवार एवम बजरंगबली का भी इस अवसर पर विशेष श्रृंगार किया गया।

रात्रि 9 बजे श्री श्याम देव के जयकारों के बीच ज्योत प्रज्वलित कर भक्तगण कतारबद्ध होकर ज्योत में आहुति प्रदान कर मंगलमय जीवन की कामना कर रहे थे। श्री श्याम मण्डल के सदस्यों द्वारा संगीतमय संकीर्तन प्रारम्भ कर भजनों की अमृतवर्षा की गई। श्याम नाम मुख से बोल भाई काम आवेगो, अलबेली इनकी सरकार रटेजा श्याम प्यारे, श्याम तेरा साथ हमको दो जहां से प्यारा है, हम तुम्हारे थे प्रभु जी तुम हमारे हो इत्यादि भजनों की लय पर देर रात तक भक्तगण श्री श्याम प्रभु को रिझाते रहे। इस अवसर पर श्री श्याम प्रभु को विभिन्न प्रकार के मिष्ठान - फल - मेवा का भोग अर्पित किया गया। वहीं रात्रि 12 बजे महाआरती व प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में रमेश सारस्वत, ओम जोशी, चन्द्र प्रकाश बागला, धीरज बंका, विवेक ढांढनीयां, विकाश पाडिया, ज्ञानप्रकाश बगला, प्रियांश पोद्दार, अजय शंकर साबू, प्रदीप अग्रवाल, जीतेश अग्रवाल एवम राजेश सारस्वत का विशेष सहयोग रहा।

आरपीएफ ने अंतर्विभागीय क्रिकेट टूर्नामेंट में की जीत हासिल

रांची। पवन कुमार, डीएससी के नेतृत्व में आरपीएफ टीम ने हटिया में आयोजित अंतर्विभागीय क्रिकेट टूर्नामेंट में मैकेनिकल टीम को हराकर विजेता बनने का गौरव प्राप्त किया है। आरपीएफ टीम ने पूरे टूर्नामेंट में शानदार प्रदर्शन करते हुए सभी मैचों में विजय हासिल की और अजेय बनी रही। फाइनल मैच में आरपीएफ टीम के कांस्टेबल बी. एल. मीणा 'मैन ऑफ द मैच' रहे। हेड कांस्टेबल संजय को टूर्नामेंट का सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाज तथा कांस्टेबल बी.एल. मीणा को ही सर्वश्रेष्ठ गेंदबाज घोषित किया गया।

बाल पत्रकारों ने अपने अधिकारों से जुड़े मुद्दों को प्रस्तुत किया

- यूनिसेफ ने बाल पत्रकार सम्मेलन वॉयस ऑफ चेंज का किया आयोजन

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। यूनिसेफ झारखंड ने नवभारत जागृति केंद्र (एनबीजेके) के सहयोग से बाल पत्रकार सम्मेलन वॉयस ऑफ चेंज का आयोजन शुक्रवार को किया।

इस समिट में रांची एवं पश्चिमी सिंहभूम जिलों के 10 प्रखंडों के 170 से अधिक बाल पत्रकार शामिल हुए, जिन्होंने अपनी कला, एवं रचनात्मकता के माध्यम से बाल अधिकार के मुद्दों को प्रस्तुत किया और सभी बच्चों के लिए बेहतर स्वास्थ्य, शिक्षा, पोषण और संरक्षण की आवश्यकता को रेखांकित किया।

इस अवसर पर बोलते हुए जेईपीसी के राज्य परियोजना निदेशक शशि रंजन ने बाल पत्रकारों के साहस और अभिव्यक्ति क्षमता की सराहना करते हुए कहा इन बाल पत्रकारों द्वारा प्रदर्शित आत्मविश्वास और जागरूकता अत्यंत प्रशंसनीय है।

यूनिसेफ झारखंड की प्रमुख डॉ कनीनिका मित्र ने अपने संबोधन के दौरान बच्चों की आवाजों को सुनने और उनके अनुकुल वातावरण निर्माण की आवश्यकता पर बल दिया।

यूनिसेफ झारखंड की संचार विशेषज्ञ आस्था अलंग ने बाल संवाददाता कार्यक्रम के बारे में विस्तार से जानकारी देते हुए कहा कि यह कार्यक्रम रांची एवं पश्चिमी सिंहभूम जिले के 22 प्रखंडों के 115 सरकारी विद्यालयों में लागू किया जा रहा है।

इस मौके पर बादल राज, डीएसई विनय कुमार, डीईओ टोनी प्रेमराज टोप्पो, यूनिसेफ पारुल शर्मा सहित अन्य लोग मौजूद थे।

हर बच्चे को स्वस्थ दिल के साथ जीवन शुरू करने का अधिकार : निलेंदु सिंह

- सीसीएल ने झारखंड के पांच जिलों में जन्मजात हृदय रोग से पीड़ित बच्चों के ईलाज के लिए शुरू किया परियोजना 'नन्हा सा दिल'

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। सेंट्रल कोलफील्ड्स लिमिटेड (सीसीएल) के सीएमडी निलेंदु कुमार सिंह ने शुक्रवार को एक महत्वकांक्षी परियोजना 'नन्हा सा दिल' का शुभारंभ किया। इस दौरान निदेशक, मानव संसाधन, हर्षनाथ मिश्र एवं सीसीएल के कई विभागाध्यक्ष भी उपस्थित रहे। परियोजना की शुरूआत करते हुए सीसीएल सीएमडी निलेन्दु कुमार सिंह ने कहा कि हर बच्चे को स्वस्थ दिल के साथ जीवन शुरू करने का अधिकार है, सीसीएल परिवार जन्मजात हृदय रोग के प्रति जागरूकता और उपचार के लिए सदैव प्रतिबद्ध है और उस दिशा में यह परियोजना एक सार्थक पहल है।

इस परियोजना की शुरूआत रामगढ़ जिले के सात महीने के बच्चे अभिराज महतो और आठ वर्षीय बच्ची बिंदिया कुमारी की स्क्रीनिंग के साथ की गई, जो अपने माता जी के साथ कार्यक्रम में

उपस्थित थे। इस परियोजना के तहत सीसीएल द्वारा प्रदत एक सुसज्जित मोबाइल वैन के माध्यम से गांव-गांव में बच्चों की निःशुल्क स्क्रीनिंग और निदान किया जाएगा। जिन बच्चों में सीएचडी की पुष्टि होती है, उनका इलाज पूरी तरह से निःशुल्क किया जाएगा। इसके अलावा ईलाज के बाद तीन बार तक, मरीज के साथ परिजनों को चेकअप के लिए हॉस्पिटल आने-जाने तक का खर्च, सीसीएल के द्वारा वहन किया जाएगा। इस मौके पर सीसीएल सीएमडी निलेंदु कुमार सिंह और निदेशक मानव संसाधन हर्ष नाथ मिश्र ने 'नन्हा सा दिल' परियोजना के तहत गांव-गांव तक चलने वाली जांच वैन का विधिवत पूजा अर्चना कर और हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

श्री सत्य साई हेल्थ एंड एजुकेशन ट्रस्ट के साथ मिलकर, सीसीएल के इस महत्वाकांक्षी सीएसआर परियोजना को शुरू किया गया है। इस परियोजना का उद्देश्य झारखंड के पांच जिलों लातेहार, हजारीबाग, रामगढ़, गिरिडीह और पलामू जिलों में जन्मजात हृदय रोग से पीड़ित बच्चों की मुफ्त जांच, निदान और उपचार प्रदान करना है।

आपको बता दें कि इससे पहले वर्ष 2024 में सीआईएल ने इसी परियोजना की शुरूआत तीन जिलों- चतरा, रांची और बोकारो में की थी, जहां अब तक 300 सफल सर्जरी की जा चुकी है और 65,000 बच्चों की स्क्रीनिंग पूरी हो चुकी है। अब, इस परियोजना का विस्तार करते हुए इसे सीसीएल के सभी आठ परिचालन जिलों तक पहुंचाया गया है। परियोजना अवधि 2 साल है एवं परियोजना की लागत : 9.54 करोड़ निर्धारित है।

लायंस क्लब ऑफ रांची हरिकनक ग्रेटर के अध्यक्ष बने अमित मिश्रा

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। लायंस क्लब ऑफ रांची हरिकनक ग्रेटर के वर्तमान अध्यक्ष लायन राजेश केडिया की अध्यक्षता में आम सभा की बैठक शुक्रवार को संपन्न हुई।

आम सभा सर्वसम्मति से लायन अमित मिश्रा को आगामी सत्र 2025-2026 के लिए क्लब का अध्यक्ष चुना गया है। साथ ही लायन दीपक कुमार साहू को प्रथम उपाध्यक्ष, लायन डॉ. दीपक कुमार को सचिव, लायन अंकित सर्राफ को कोषाध्यक्ष एवं लायन शिव किशोर शर्मा को पी.आर.ओ. का पदभार सर्वसम्मति से सौंपा गया। इस आम सभा में क्लब के प्रशासक लायन प्रेमशंकर मिश्रा, लायन अनूप आनन्द, लायन साकेत अग्रवाल सहित क्लब के अन्य सदस्य गण मौजूद थे।

सिल्ली में जनता दरबार का आयोजन

ग्रामीणों ने बिजली, पेयजल, जमीन विवाद, मईया सम्मान योजना, अबुआ आवास, वृद्धा पेंशन समेत कई समस्याओं को लेकर अपनी बातें रखीं

खबर मन्त्र संवाददाता

सिल्ली। सिल्ली प्रखंड परिसर में शुक्रवार के दिन एकदिवसीय जनता दरबार का आयोजन किया गय। जनता दरबार में मुख्य रूप में सिल्ली के विधायक अमित कुमार महतो उपस्थित हुए। विधायक के द्वारा जनवरी माह में सिल्ली प्रखंड के 20 पंचायतों में जनता दरबार का आयोजन किया गया था जिसमें आमजनों की बहुत सारी समस्याएं बताई गई थी, जिसको लेकर सिल्ली विधायक प्रखंड परिसर के जनता दरबार में उपस्थित हुए। जनता दरबार में उपस्थित ग्रामीणों ने अपनी अपनी समस्याओं को रखा। मौके पर ही विधायक के पहल पर बहुत सारी समस्याओं का निष्पादन प्रखंड के पदाधिकारियों द्वारा किया गया। जनता दरबार में जिला परिषद सदस्य (पूर्वी) लक्ष्मी कुमारी ने भी समस्याओं को गंभीरता पूर्वक सुना। ग्रामीणों ने बिजली, पेयजल, जमीन विवाद, मैया सम्मान योजना, अबुआ आवास, वृद्धा पेंशन समेत अन्य कई समस्याओं को लेकर अपनी बातें रखीं। अबुआ आवास को लेकर लोग ज्यादा परेशान दिखे साथ ही मैय्या समान योजना को लेकर बहुत सी महिलाएं जनता दरबार में पहुंची।

कार्यक्रम के दौरान अंचलाधिकारी अरुणिमा एक्का, प्रखंड विकास पदाधिकारी अनिल कुमार, सिल्ली थाना प्रभारी दिनेश ठाकुर, मुरी ओपी के अवर निरीक्षक उत्तम कुमार, विद्युत विभाग के कनीय अभियंता, पेय जल विभाग के कनीय अभियंता, कृषि पदाधिकारी एवं हर पंचायत के पंचायत सचिव मौजूद रहे। कार्यक्रम के अंत में सिल्ली प्रखंड के आमजनताओ ने विधायक के प्रति आभार व्यक्त किया। मौके पर झारखंड मुक्ति मोर्चा के सक्रिय कार्यकर्ताओं समेत विभिन्न गांवों के ग्रामीण मौजूद रहे।

अपनी कार में आग लगा युवक फरार

खबर मन्त्र संवाददाता

अंसार नगर में जलाया गया कार।

ओरमांझी। थाना क्षेत्र के अंसार नगर करमा में शुक्रवार को एक अल्टो कार धू-धूकर जल गई। सुबह सात बजे के करीब हुई घटना के संबंध में बताया गया कि एक युवक कार संख्या जेएच09ए-1689 में सवार होकर पहुंचा, और कार अचानक खेत में उतार दिया। वह कार से उतरा और कार में आग लगा दिया। कार को जलता देख लोग हो हल्ला करते घटना स्थल पर पहुंचे। तबतक कार को जलाने वाला युवक वहां से फरार हो गया। स्थानीय लोगों के अनुसार कार में इतनी तेजी से आग पकड़ी, जैसे युवक कार को पूरी तरह जला देने की तैरी करके पहुंचा था। आशंका जताई जा रही है कि उक्त कार से कोई अपराधिक घटना को अंजाम दी गई है, और कार की पहचान होने व पकड़े जाने से बचने के लिए ही कार को ठिकाने लगा दिया गया। सूचना मिलने पर पहुंची ओरमांझी थाना पुलिस ने लोगों से घटना व युवक के बारे में जानाकारी ली, थाना प्रभारी अनिल कुमार तिवारी ने कहा की मामला संदिग्ध प्रतित होता है। पुलिस द्वारा मामले की पता लगाए जा रहे हैं।

कार्यालयः जिला स्वास्थ्य समिति, कोडरमा
Email ID :- cs.koderma4@gmail.com

Walk in Interview

नगर परिषद, झुमरीतिलैया, नगर पंचायत, कोडरमा एवं नगर पंचायत डोमचाँच के शहरी क्षेत्र में 15वें वित्त आयोग (स्वास्थय) के तहत संचालित किए जाने वाले Poly Clinic तथा Urban Aayushman Arogya Madnir (UAAM) के संचालन हेतु विशेषज्ञ चिकित्सकों/चिकित्सा पदाधिकारी की सेवा प्राप्त किया जाना है। चिकित्सकों के चयन हेतु दिनांक 30.05.2025 को सिविल सर्जन कार्यालय, कोडरमा में पूर्वाह्न 11:00 बजे **Walk in Interview** निम्न विवरणी के अनुसार निर्धारित किया गया है।

क्र.सं.	विवरणी	आवश्यक शर्तें
	विशेषज्ञ चिकित्सकों हेतु	
1	शहरी प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र सह पॉलिक्लिनिक, गुमो एवं फरिंदा	**Medicine, Obs & Gynae, Paediatrics, Ophthalmology, Dermatology, and Psychiatry** उपरोक्त पदो हेतु आवश्यकतानुरुप विशेषज्ञ चिकित्सकों का चयन किया जाएगा।
	विशेषज्ञ चिकित्सा पदाधिकारी हेतु न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता	मेडिकल काउन्सिल ऑफ इंडिया से मान्यता प्राप्त किसी भी संस्थान से M.B.B.S. की डिग्री एवं उपरोक्त वर्णित विषयों में P.G Degree अथवा Speciality
	उम्र सीमा	अधिकतम 67 वर्ष
	मानदेय	Negotiable at the time of interview. मानदेय का भुगतान उनके द्वारा प्रति घंटा किये गये कार्यों के आधार पर किया जाएगा।
	कार्य का समय	09.00 बजे पूर्वाह्न से 03.00 बजे अपराह्न तक।
2	चिकित्सा पदाधिकारी हेतु	
A	Urban Aayushman Arogya Madnir वार्ड नं0 13 पाण्डेटोला कोडरमा एवं झुमरीतिलैया वार्ड नं0 03, नगर पंचायत डोमचाँच वार्ड नं0 05 शिवसागर	नियुक्त किये जाने वाले चिकित्सा पदाधिकारी की संख्या– 03
B	चिकित्सा पदाधिकारी हेतु न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता	मेडिकल काउन्सिल ऑफ इंडिया से मान्यता प्राप्त किसी भी संस्थान से M.B.B.S. की डिग्री।
C	उम्र सीमा	अधिकतम 67 वर्ष
D	मानदेय	रू0 63000.00 प्रत्येक माह।
E	कार्य का समय	09.00 बजे पूर्वाह्न से 03.00 बजे अपराह्न तक।
3	सूचीबद्ध किये गये विशेषज्ञ चिकित्सकों/चिकित्सा पदाधिकारी के द्वारा भविष्य के लिए नियमितीकरण हेतु किसी भी प्रकार का दावा मान्य नहीं होगा।	
4	Walk in Interview में उपस्थित होने के लिए किसी भी प्रकार का यात्रा भत्ता देय नहीं होगा।	

इच्छुक उम्मीदवार Walk in Interview के लिए अपना बायोडाटा एवं सभी मूल प्रमाण–पत्र तथा इसके छाया–प्रति के साथ सिविल सर्जन कार्यालय, कोडरमा में दिनांक 30.05.2025 को पूर्वाह्न 11:00 बजे से अपराह्न 03:00 बजे तक उपस्थित होना सुनिश्चित करेंगे।

मुख्य चिकित्सा पदाधिकारी सह
मुख्य कार्यपालक पदाधिकारी, DHS, कोडरमा

PR 353352 (Health Med Edu and Family Welfare)25-26*D

जरिया मे 40 खंभों से बिजली के तार की चोरी

खबर मन्त्र संवाददाता

बेड़ो। बेड़ो थाना क्षेत्र के जरिया पंचायत के जरिया पुरना डीह से सरना टोली तक के समीप कृषि कार्य के लिए लगाए गए 40 खंभों से विधुत तार की चोरी गुरुवार की रात अज्ञात चोरों द्वारा कर ली गई। ग्रामीणों ने बताया कि बिजली विभाग के द्वारा सिंचाई के लिए तार लगाया गया था। जिससे कई एकड़ भूमि की सिंचाई की जाती थी। इधर तार की चोरी से किसान चिंतित हैं। किसानों के सिंचाई के लिए विद्युत विभाग द्वारा गांव में सिंचाई के लिए ट्रांसफार्मर पोल व तार लगाया गया था। तार के चोरी होने से दर्जनों किसान सिंचाई से वंचित हो जायंगे। ज्ञात हो कि बेड़ो प्रखंड में एक बार फिर से तार चोर सक्रिय हो गए है। इससे पूर्व भी कई गांवो में तार की चोरी कर ली गई थी। वहीं प्रगतिशील किसान ब्रजेश महतो ने कहा है कि किसानों के सिंचाई के लिए गांव में बिजली का नया पोल व तार लगाया गया था। किसानों को सिंचाई में दिक्कत न हो इसके लिए फिर से बिजली विभाग से तार लगाने की मांग की है।

डायट में पांच दिनी ग्रीष्मकालीन कला प्रशिक्षण शिविर

बच्चों ने बिखेरी मनमोहक कला की छटा

120 बच्चे ले रहे हिस्सा

27 तक चलेगा कार्यक्रम

खबर मन्त्र संवाददाता

रातू। स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग, झारखंड सरकार, शिक्षा परियोजना परिषद की ओर से झारखंड शैक्षणिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केंद्र में आयोजित पांच दिनी ग्रीष्मकालीन कला प्रशिक्षण शिविर शुरू हो गया है। इसका उद्घाटन पद्मश्री मधु मंसूरी हंसमुख व जेसीआरटी के उप निदेशक प्रदीप कुमार चौबे, विंध्याचल पांडेय, जेसीआरटी के सलाहकार कामेश्वर सिंह, कार्यक्रम पदाधिकारी धीरसेन सोरेंग ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्जवलित कर किया। इसमें रांची जिले के 120 बच्चे भाग ले रहे हैं। गायन में 70 बालक और बालिका, नृत्य में 30 और वाद्य यंत्र में 20 बालिका भाग ले रही है। शिविर का समापन 27 को होगा। राष्ट्रीय कला उत्सव के पदक विजेता विकास महली स्वर्ण पदक, पूजा मुर्मू रजत पदक व लक्ष्मी कुमारी कांस्य पदक को अतिथियों ने पुष्प कुछ और अंग वस्त्र देकर सम्मानित किया। बच्चों ने मनमोहक कला की छटा बिखेरी। संचालन चंद्रदेव सिंह कर रहे हैं।

दुर्घटना में बाइक सवार युवक की मौत

सिकिदिरी। सिकिदिरी थाना क्षेत्र के सोसो गांव के समीप एक बाइक अनियंत्रित होकर दुर्घटनाग्रस्त हो गई। इस घटना में बाइक सवार युवक दिनेश मुंडा (21) पिता मलजु मुंडा की मौत हो गई। मृतक दिनेश सिकिदिरी थाना क्षेत्र के मैनीछापर गांव का रहने वाला था। घटना गुरुवार की रात करीब आठ बजे की है। मिली जानकारी के अनुसार दिनेश बाइक से अपने एक परिचित को छोटकी गोडांग से छोड़कर अपने घर लौट रहा था।

90 फीसदी छात्र-छात्राएं आंखों की बीमारी से ग्रसित

निशुल्क शिविर में की जा रही आंखों की जांच

खबर मन्त्र संवाददाता

अपनी आंखों की जांच कराते स्कूली बच्चें।

ओरमांझी। प्रखंड क्षेत्र के कस्तुरबा अवासीय विद्यालय की छात्राओं व सरस्वती शिशु विद्या मंदिर ओरमांझी के 90 प्रतिशत छात्र-छात्राओं की आंख रोग से ग्रसित पाए जाने के बाद अन्य स्कूल के बच्चों की भी आंखों की जांच हो रही है। शुक्रवार को भी थर्ड आई क्लिनिक इरबा के द्वारा सरस्वती शिशु विद्या मंदिर कुल्ही में निशुल्क आंख जांच शिविर लगाया गया था। जिसमें किए गए छात्र-छात्राओं की आंख की जांच में 20 प्रतिशत से भी कम बच्चों में आंख रोग पाए गए। विद्यालय के बच्चें आंख रोग से ग्रसित नही होने पर विद्यालय के प्राचार्य जयप्रकाश महतो व सचिव चन्नू महतो ने कहा कस्तुरबा व ओरमांझी शिशु विद्या मंदिर के छात्र-छात्राओं में इतनी अधिक आंख रोग से ग्रसित होने पर अपने विद्यालय के बच्चों की आंखों की भी चिंता हुई थी। उन्होने उन दोनो विद्यालय जैसे, इस विद्यालय के बच्चों में रोग नही पाए जाने पर संतोष जताया और सभी को अपने बच्चों के आंखों का जांच करवाने की अपील किया। वहीं समाधान के विनोद सिंह ने कहा दो विद्यालय में इस प्रकार के रोक पाया जाना अन्य स्कूल व अभिभवकों को भी चिंतित कर दिया है। मौके पर कालेज के अध्यक्ष बिरजू महतो, संरक्षक भरत प्रसाद गुप्ता, दिलेश्वर साहू, नेवालाल महतो, कलेश्वर महतो आदि उपस्थित थें।

फाइलेरिया के प्रति लोगों को किया गया जागरूक, लोगों के बीच किट का वितरण

खबर मन्त्र संवाददाता

सिल्ली/मुरी। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र सिल्ली के डॉक्टर विवेक कुमार की टीम ने शुक्रवार को छोटामुरी में लोगों के बीच फाइलेरिया किट का वितरण किया और इसका उपयोग बताकर लोगों को इसके प्रति जागरूक किया। डॉ विवेक कुमार ने लोगों को बताया कि फाइलेरिया का लक्षण दिखने पर नजदीकी स्वास्थ्य केंद्र जाकर चिकित्सक से परामर्श अवश्य लें ताकि शुरूआती दौर में ही फाइलेरिया पर नियंत्रण पाया जा सके। सामान्य रूप से फाइलेरिया होने पर रोगियों को मौसमी और संतुलित आहार लेने की जरूरत है क्योंकि यह आहार उनके शरीर के लिए सबसे ज्यादा उपयोगी होता है। भोजन में विटामिन युक्त आहार आवश्यक रूप से लें क्योंकि बैक्टीरिया को मारने के लिए विशेष गुण भी होते हैं साथ ही लोगों को परामर्श दिया कि सोने से पहले मच्छरदानी का उपयोग हमेशा करें। अपने आसपास के क्षेत्रों में साफ सफाई पर विशेष रूप से ध्यान दें ताकि गंदगी ना फैले, चूकीं गंदगी के कारण ही मच्छर उत्पन्न होते हैं।इस कीट के अंतर्गत बाल्टी, शेवलोन, रुई, पाउडर, दवा इत्यादि दी गई।

कृषि पशुपालन एवं सहकारिता विभाग (कृषि प्रभाग) झारखण्ड सरकार
कार्यालय-उप कृषि निदेशक (पौधा संरक्षण),
उत्तरी छोटानागपुर परिक्षेत्र, हजारीबाग।

सामयिक सूचना अंक–01/ वर्ष 2025–26
टमाटर में लगने वाले कीटो एवं व्याधियों के रोकथाम

टमाटर में रोपाई से लेकर फसल की कटाई तक बड़ी संख्या में कीट एवं रोग फसल को नुकसान करते है। कीट जैसे फल छेदक, माहू, पत्ती खनिक मकड़ी और सफेद मक्खी । सफेद मक्खी उपज को कम करते है साथ ही ये टमाटर पत्ती कर्ल वायरस जैसे संयंत्र रोगों को फैलाने में मदद करते है।

टमाटर में लगने वाले कीटो एवं उनके रोकथाम

1. **टमाटर फल छेदक** :– इस कीट की सूंडिया फलों में छेद करके इनके अंतः पदार्थ को खाती है। इस प्रकार फलो की गुणवत्ता खराब हो जाती है।

प्रबंधन :–
- टमाटर की प्रति 10 पंक्तियों पर फसल ट्रेप के रूप में गेंदा की एक पंक्ति लगाए।
- फेरोमोन प्रपंच 12 प्रति हेक्टेयर की दर से लगाए।
- नीम बीज अर्क 5 प्रतिशत या HaNPV (एन पी बी) 250 मिली प्रति हेक्टेयर की दर से या बेसिलस थुरिजेंसिस 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- पक्षी आश्रय 12 प्रति एकड़ की दर से लगाऐ।
- फ्लूबेंडिएमाइड 20 डब्ल्यू जी 5 ग्राम / 10 लीटर या इंडोक्साकार्व एस सी 8 मिली / 10 लीटर या स्पिनेटोरियम 11.70% एस सी 5 ग्राम / 10 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

2. **सफेद मक्खी** :– इस कीट के शिशु एवं व्यस्क दोनों ही पत्ती से रस चूसते हैं। जिससे पत्तियाँ मुड़ जाती है और प्रकाश संश्लेषण की क्रिया प्रभावित होती है। सफेद मक्खी पत्ती कर्ल वायरस जैसे रोगों को फैलाने में मदद करती है।

प्रबंधन :–
- पीले चिपचिपे जाल का उपयोग 10 प्रति एकड़ की दर से करें।
- रोपाई से पहले पौधे की जड़ को 30 मिनट तक के लिए इमीडाक्लोप्रिड 1 मिली प्रति 3 लीटर पानी में डुबोकर रखे।
- नीम तेल या नीम अधारित कीटनाशक 2 मिली प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- कीट दिखाई देते ही इमिडाक्लोप्रिड 17.8% एस.एल. 1 मिली प्रति 3 लीटर पानी में या थियामेथोक्साम 25% डब्लू जी 1 ग्राम प्रति 3 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

3. **लाही** :– लाही एक रस चसने वाले कीट है। जिससे पत्तियों का मुड़ना, पीला पड़ना, विकास में रूकावट और चिपचिपा हनीडयू, कालिख जैसी फफूंद मुख्य लक्षण है।

प्रबंधन :–
- पीले चिपचिपे जाल का उपयोग 10 प्रति एकड़ की दर से करें।
- रोपाई से पहले पौधे की जड़ को 30 मिनट तक के लिए इमीडाक्लोप्रिड 1 मिली प्रति 3 लीटर पानी में डुबोकर रखे।
- नीम तेल या नीम आधारित कीटनाशक 2 मिली प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- कीट दिखाई देते ही इमिडाक्लोप्रिड 17.8% एस.एल. 1 मिली प्रति 3 लीटर पानी में या थियामेथोक्साम 25% डब्लू जी 1 ग्राम प्रति 3 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

4. **लाल मकड़ी** (Red mite) :– मकड़ी जैसे लाल रंग घुन, पत्तों के नीचले स्तर से रस चूसते है। जिससे पत्तो का ऊपरी भाग पीले रंग जैसा दिखाई देता है। बाद में पत्ते मुड़कर पूरी तरह से सूख जाता है। जिससे पैदावार पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

प्रबंधनः–
- कीट दिखाई देते ही स्पाइरोमेसिफेन 22.9% एस.सी 1 मिली लीटर या एबामेक्टिन 1.9 ई.सी 1 मिली लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

5. **पत्ती खनिक या पत्ती सुरंगक** (Leaf Miner) :– यह कीट पत्तों में सुरंग बनाते है, जिससे पत्तियाँ पीली या भूरी हो जाती है और मुरझा जाती है लार्वा पत्तियों के ऊपरी या निचली सतह पर खनन करती है जिससे प्रकाश संश्लेषण प्रभावित होते है और पौधे कमजोर हो जाते है, अतंतः उपज कम हो जाती है।

प्रबंधन :–
- पौधों के प्रभावित हिस्सो को काटकर अलग कर दे। इससे कीटो का प्रसार रोका जा सकता है।
- नीम तेल या नीम आधारित कीटनाशक 2 मिली प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- लक्षण दिखाई देते ही इमिडाक्लोप्रिड 17.8% एस.एल. 1 मिली प्रति 3 लीटर पानी में या थियामेथोक्साम 25% डब्लू जी 1 ग्राम प्रति 3 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

टमाटर में लगने वाले प्रमुख रोग एवं उनके रोकथाम

1. **अगेती झुलसा रोग** :– रोग का लक्षण पत्तियों पर छोटे– छोटे धब्बे के रूप में दिखाई देता है। प्रारंम्भ में ये बिखरे हुए गोलाकार या कोणीय होते है। धीरे– धीरे पत्तियाँ पीली झुलसी हुई दिखाई देती है और अंततः झड़ जाती है। इससे फल सड़ जाते है और उपज पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

प्रबंधन :–
- यह एक मृदाजनित रोग है मिट्टी उपचार करना अति आवश्यक है। मृदाजनित के साथ यह बीजजनित रोग है इसलिए बीज उपचार करना चाहिए। फसल में लक्षण दिखाई देते ही मैकोजेब या रिडोमिल गोल्ड 500–600 ग्राम प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करे। आवश्यकतानुसार दूसरा छिड़काव 15 दिनों के अंतराल में करें।

2. **पछेती झुलसा रोग** :– पहले पौधों के निचली पत्तियों के किनारे पर भूरे रंग के धब्बे बनने शुरू होता है धीर–धीरे धब्बों की परिधि पर रोगजनक कवक की वृद्धि दिखाई देती है। लक्षण पत्तियों के साथ–साथ शाखाओं, तनों एवं फलों पर भी दिखाई देते है। अत्यधिक संक्रमण होने पर फलों पर जैतनी रंग के धब्बे दिखाई देते है जो बढ़कर पूरे फल पर फैल जाते है।

प्रबंधन :–
- यह एक बीज जनित रोग है बीज उपचार करना अति आवश्यक है। लक्षण दिखाई देते ही मैकोजेब या मैकोजेब 64%+ मेटालैक्सिल 4% का मिश्रित या सिमोक्सानिल 8%+ मैकोजेब 64% का मिश्रण 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। आवश्कतानुसार दूसरा छिड़काव 15 दिनों के अंतराल पर करें।

3. **सेप्टोरिया पर्णचिती** :– पौधों के निचली सतह पर गोलाकार छोटे–छोटे धब्बे बनते है। जिनका रंग भूरा होता है और पीले रंग से घिरा होता है। धब्बों के बीच में काले बिन्दुनुमा संरचना देखी जाती है जिसे पिकनिडियम कहते है। इसी प्रकार धब्बे शाखाओं एवं तनों पर भी दिखाई देते है।

प्रबंधन :–
- संक्रमित पौधों को काटकर अलग करें।
- लक्षण दिखाई देते ही मैकोजेब 75% डब्लू.पी. 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

4. **उगठा रोग** :– यह रोग टमाटर की फसल में मुख्यतः दो रोगजनक के कारण होता है।

I. **कवक (फ्यूजेरिअम)** :– कवक आरंम्भ में जड़ों के माध्यम से पूरे पौधों को संक्रमित करते है। संक्रमित पौधों की शाखाएँ एवं पत्ते पीले हो जाते है। एक गहरे भूरे रंग की संवहनी तने में फैल जाती है, जो तने को काटने पर दिखाई देते है।

II. **जीवाणु (राल्स्टोनिया सोलानेसीरम)** :– जीवाणु विकसित पौधों को तेजी से एवं पूर्ण रूप से मूर्छित कर देते है। जीवाणु संवहनी ऊतक में सीमित रहते है।

संक्रमित पौधे के हिस्सो को जब काटकर साफ पानी में डुबोया जाए तो, कटे हुए सिरे से जीवाणुयुक्त तरल पदार्थ की तरह एक सफेद धार निकलती हुई दिखाई देती है।

प्रबंधन :–
- फसल चक्र को अपनाएँ।
- यह एक मृदाजनित रोग है। इसलिए मिट्टी उपचार करें। बुवाई के 2–3 सप्ताह पूर्व 5 टन प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद में 5 किलो ट्राइकोर्डमा वीरीडे मिश्रित करके डाले। इस उपचार के बाद मिट्टी में नमी बनाए रखें।
- खेतों की गहरी जुताई करें।
- पौधों को खेतों में लगाने से पहले पौधा की जड़ों को स्यूडोमोनस फ्लोरसेंस 5 ग्राम 1 लीटर की घोल में डुबाएँ।
- पौधों की जड़ों की मिट्टी के आसपास कॉपर आक्सीक्लोराइड 30 ग्राम+ स्ट्रेप्टोसाइक्लिन 1 ग्राम प्रति 10 लीटर पानी में घोलकर डाले।

सहायक कृषि निदेशक (पौधा संरक्षण)
उत्तरी छोटानागपुर परिक्षेत्र, हजारीबाग।

PR.NO.353378 Agriculture(25-26):D

झारखंड आंदोलनकारी संघर्ष मोर्चा की बैठक आज

बेड़ो। झारखंड आंदोलनकारी संघर्ष मोर्चा दक्षिण छोटानागपुर प्रमण्डल की बैठक का आयोजन शनिवार को महादानी मैदान बेड़ो के रंगमंच पर किया जायेगा। जिसमें आंदोलनकारियों को विभिन्न सरकारी योजनाओं में पेंशन, अबुआ आवास, आरक्षण व रोजगार का लाभ दिलाने के लिए व्यापक विचार विमर्श किया जाएगा। मौके पर बतौर मुख्य अतिथि मोर्चा के केंद्रीय अध्यक्ष पुष्कर महतो व गुमला के विधायक भूषण तिर्की के साथ साथ गुमला, सिमडेगा, लोहरदगा, खूंटी व रांची जिला के आंदोलनकारी मौजूद रहेंगे। यह जानकारी मोर्चा के बेड़ो प्रखंड सचिव सहिन्द्र लकड़ा ने दी है।

जिप सदस्य ने मृतक के परिवार को दी मदद

चान्हो। जिला परिषद सदस्य सह जन सेवी आशुतोष तिवारी ने शुक्रवार को अपने प्रतिनिधि से मृत परिवार को खाद्य सामग्री उपलब्ध कराए। बताते चले कि दस दिन पूर्व चोरेया के हरिजन महल्ला निवासी विजय राम कि पत्नी के देहांत हो गया था। वह काफी दिनों से बीमार थी, जिनसे उनकी आर्थिक स्तिथी काफी दैनिय हो गई है। इस बात कि खबर मिलते ही श्री तिवारी अपने प्रतिनिधि से के विजय कि पत्नी के दष्कर्म के लिए खाद्य सामग्री भेज वाए। इस मौके पर शिव नारायण राम, लखन साहू, बिन्दे राम, प्रशाद महतो, अजय राम, डॉ अनिल साहू, विजय राम सहित अन्य मौजूद थे।

मारपीट के आरोप में पांच लोग जेल भेजे गये

सोनाहातू। थाना क्षेत्र के जाहेरडीह गांव में आपसी विवाद में पति-पत्नी को पीट कर गंभीर रूप से घायल किया था। शुक्रवार को सोनाहातू पुलिस ने मारपीट के आरोप में पांच लोगों डोमन महतो, मकर महतो, नितेश महतो, महेंद्र नाथ महतो, भूतनाथ महतो, को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। घायल के माता सोरी देवी ने प्राथमिकी दर्ज करवाई थी। प्राथमिकी के अनुसार घटना 20 मई रात की है। इन पांच लोगों ने मामूली विवाद में घर का दरवाजा तोड़ बेटा पशुराम महतो को पीट के पैर तोड़ दिया और बेहोश कर दिया था। बीच बचाव करने पर पुतहु प्रमिला देवी को भी पीटा गया। घटना की सूचना देने पर तत्काल पुलिस गांव पहुंच कर दिनों घायल को सोनाहातू अस्पताल में इलाज करने के बाद बेहतर ईलाज के लिए रिम्स रेफर कर दिया था। प्राथमिकी में नाम दर्ज लोगों को पुलिस ने गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है।

मंडा पूजा धार्मिक रीति रिवाज के साथ धूमधाम से मनाने का निर्णय

खबर मन्त्र संवाददाता

पिस्कानगडी। मंडा पुजा का आयोजन को लेकर नगडी स्थित होटल कोयल में प्रेस कांफ्रेंस के आयोजन किया गया। प्रेस कांफ्रेंस में लोक आस्था और श्रद्धा का पर्व मंडा पूजा को शिव भक्ति और धार्मिक रीति रिवाज के साथ धूमधाम एवं हर्षोल्लास के साथ मनाने का निर्णय के बारे में जानकारी दी गई है।

मौके पर उपस्थित नगडी मंडा पूजा समिति के अध्यक्ष चुडामणी महतो, महामंत्री दिनेश केसरी, कार्यकारी अध्यक्ष बालकरण महतो, राहुल चौधरी और सह कोषाध्यक्ष रवि केसरी ने उपस्थित पत्रकारों को बताया कि नगडी प्रखंड का ऐतिहासिक मंडा पूजा पिछले 70 साल से हमारे पुर्वज धूमधाम के साथ अर्धनारीश्वर जी भगवान शिव का पूजा शिवामनी महेश के साथ आयोजन करते आ रहे हैं इस सिलसिला को जारी करते हुए आगामी 28 मई को फुलसुंदी और 29 मई दिन को झुलन सह मेला का भव्य आयोजन राधाकृष्ण मंदिर परिसर, नगड़ी में आयोजन किया जाएगा। इस मंडा पूजा में बंगाल से 25 महिलाओं के द्वारा रामायण और महाभारत पर आधारित छऊ नृत्य प्रस्तुत करेंगे। दो दिवसीय मंडा पूजा को सफल सचालन हेतु एक कमिटि का गठन किया गया है। जिसमें अध्यक्ष के रूप में समाजसेवी चुड़ामणि महतो, कार्यकारी अध्यक्ष-बालकरण महतो, राहुल चौधरी, महामंत्री-दिनेश केशरी, कोषाध्यक्ष-आदित्य केशरी, सह-कोषाध्यक्ष-रवि केशरी वही वरीय संरक्षक के रूप में दौलत राम केसरी, तपेश्वर केशरी, केशव कु. भगत, केदार महतो, डॉक्टर त्रिवेणीनाथ साहू, संरक्षक-बंधन महतो, मधुसुदन साहु, शंकर चौधरी, शशिभुषण भगत, प्रेमसागर केशरी, रामजीवन केसरी, लक्ष्मी नारायण, मनीष केसरी, सहित दर्जनों सदस्यों का चयन किया गया है।

इटकी से 42 सदस्यीय हज यात्रियों का जत्था रवाना

खबर मन्त्र संवाददाता

इटकी से हज पर जाने वाले आजमीन ए हज।

इटकी। इटकी से आजमीन- ए-हज का 42 सदस्यीय एक जत्था शुक्रवार को हज के लिए रवाना हुआ। ये सभी हज यात्री इटकी से रांची और रांची से कोलकाता के लिए रेलवे मार्ग से रवाना हुए। रवानगी से पूर्व इटकी जामा मस्जिद में विदाई कार्यक्रम में हज प्रशिक्षक हाजी कैसर अलम व मौलाना मंजूर कासमी ने हज से संबंधित कई महत्वपूर्ण जानकारी दी जबकि वसीम अकरम व मो सारीब ने दिलकश आवाज में नात पेश किया। मौलाना तलहा नदवी ने आसान और मकबूल हज के साथ देश में अमन चैन और खुशहाली की सामूहिक दुआ कराई। मौके पर पूर्व मंत्री बंधु तिर्की हज़ यात्रियों को विदा करने इटकी पहुंचे और उनसे मिलकर शुभकामनाएं दी। हज यात्रा में जाने वालों में मुख्य रूप से मो खुर्शीद, अबू नसर सोनु, मो. वसीम, मो. इफ्तेखार, अब्दुल करीम, उस्मान गनी, मुहसिन जफर, मो. जहीर आलाम, मो. तौहीद, शम्स तबरेज, मो. शारिब, हाजी तनवीर जमाल, परवेज आदिल, मो. अरशद, हाजी अफरोज आलाम, मो. समीउद्दीन, मो. उबौदुल्लाह, मो. सईद, मो. इम्तियाज, मो. इमदादुल्लाह, मो. शमीम सहित अन्य महिला हज यात्री शामिल हैं। इटकी वालों का सौभाग्य है कि इस वर्ष इटकी से हज यात्रियों के सेवा के लिए डॉ शाकिब जमाल भारत सरकार के चिकित्सा दल में शामिल होकर मक्का में अपनी सेवा दे रहे है। जबकि नायाब जेबा राज्य हज निरीक्षक के रूप में सेवा देने के लिए आज के दल के साथ जा रही है। ये सभी हज यात्री 26 मई को नेता जी सुभाष चन्द्र बोस अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा कोलकाता से फ्लाईट संख्या एस जी 5126 के द्वारा जद्दा के लिए उड़ान भरेंगे। हाजियों को विदा करने के लिए भारी संख्या में लोग जामा मस्जिद पहुंचे थे। सैकड़ों लोग कतार लगा कर हज यात्रियों से मिले और शुभकामनाएं देकर रवाना किया।

खबर मन्त्र

रांची. शनिवार .24 मई 2025

अभिव्यक्ति

epaper.khabarmantra.net

चीन की करतूत

चीनी सरकारी मीडिया भी कुप्रचार व भ्रामक समाचार फैलाने में पाक के साथ खड़ा नजर आ रहा है। अब उसने अपनी नई करतूत अरुणाचल प्रदेश के स्थानों का नाम बदलकर उजागर की है। हालांकि, ऐसा पहली बार नहीं हुआ है। लगातार तीसरे साल चीन ने भारतीय राज्य अरुणाचल प्रदेश के स्थानों का नाम बदला है। चीन अरुणाचल को जांगनान के नाम से दशार्ता है। वहीं इसे तिब्बत के दक्षिणी हिस्से के रूप में होने का दावा करता है। भारत सरकार ने चीन के इन बेतुके दावों को सिरे से खारिज कर दिया है। भारत सरकार ने फिर से दोहराया है कि अरुणाचल भारत का अभिन्न और अविभाज्य हिस्सा था और हमेशा रहेगा। दरअसल, चिंता की बात यह है कि चीन ने यह करतूत ऐसे समय में की है जब पहलगाम हमले और उसके जवाब में सफल ऑपरेशन सिंदूर के चलते भारत-पाक के बीच तनाव कायम है। निश्चय ही इन स्थितियों में चीन का यह भड़काऊ कदम है। भारतीय उपमहाद्वीप में हाल ही में हुई उथल-पुथल के दौरान पाकिस्तान को उसके सदाबहार दोस्त बीजिंग का भरपूर समर्थन मिला है। जिससे पता चलता है कि अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर भारत से दोस्ती का हाथ बढ़ाने तथा व्यापार-कारोबार बढ़ाने की बात करने वाला चीन भारत के प्रति कैसी दुर्भावना रखता है। ऐसी घटनाएं हमें सतर्क करती हैं कि चीन के साथ मैत्री संबंधों के निर्धारण के दौरान हमें सजग व सचेत रहना चाहिए। अन्यथा चीन पीठ पर वार करने से नहीं चूकने वाला है। इतना ही नहीं वह फिर से भौगोलिक क्षेत्रों के नामों के मनमाने मानकीकरण के साथ आगे बढ़ गया है। लेकिन सवाल इस करतूत के समय का है। जाहिर बात है कि बीजिंग ने ऐसा न केवल चुनौतीपूर्ण समय में भारत का ध्यान भटकाने के लिये किया है, बल्कि पाकिस्तान के साथ एकजुटता दिखाने के लिये भी किया है।

तिब्बत और शिंजियांग को लेकर चीन का झूठा दावा

चीन के सत्ता प्रतिष्ठान की नीति हमेशा से यह रही है कि वह इतिहास को अपने हिसाब से गढ़ता है और उसे एक हथियार की तरह इस्तेमाल करता है। इसका सबसे बड़ा उदाहरण तिब्बत और शिंजियांग जैसे क्षेत्रों पर चीन के ह्यऐतिहासिक अधिकारह्ण का दावा है। चीन लगातार यह प्रचार करता आया है कि ये दोनों क्षेत्र प्राचीन काल से उसके अंग रहे हैं, लेकिन जब हम वास्तविक इतिहास और स्वतंत्र स्रोतों को खंगालते हैं, तो यह स्पष्ट होता है कि बीजिंग का यह दावा ऐतिहासिक तथ्यों पर नहीं, बल्कि राजनीतिक उद्देश्य पर आधारित है।

तिब्बत जो कभी स्वतंत्र था1. मंगोल और युआन वंश का बहानाचीन यह दावा करता है कि तिब्बत 13वीं शताब्दी से ही उसका हिस्सा है, जब मंगोल सम्राट कुबलई खान के नेतृत्व में युआन वंश ने चीन और आसपास के क्षेत्रों पर आधिपत्य जमाया था। लेकिन सच्चाई यह है कि युआन साम्राज्य मंगोलों द्वारा स्थापित था, न कि चीनी लोगों द्वारा। तिब्बत ने स्वयं को युआन वंश के अधीन कभी नहीं माना। युआन साम्राज्य एक बहु-राष्ट्रीय प्रशासनिक संरचना थी, जिसमें तिब्बत को धार्मिक केंद्र के रूप में स्वायत्तता दी गई थी।

2. छिंग वंश का नाममात्र नियंत्रण1644 से लेकर 1912 तक का छिंग वंश भी चीन का तिब्बत पर दावा करने का आधार बनता है। लेकिन इतिहासकारों का मानना है कि छिंग वंश का तिब्बत पर प्रभाव नाममात्र का था। चीन द्वारा भेजे गए प्रतिनिधि (अंबान) केवल सलाहकार की भूमिका में थे। तिब्बत का प्रशासन, न्याय, शिक्षा और धार्मिक व्यवस्था पूरी तरह तिब्बती नेतृत्व के हाथ में थी।

3. स्वतंत्र तिब्बत और 1950 का आक्रमण1912 में छिंग वंश के पतन के बाद तिब्बत ने खुद को स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में स्थापित किया। वहां स्वतंत्र सरकार बनी, तिब्बती मुद्रा चलने लगी, विदेशों से सीमित राजनयिक संबंध बनाए गए। लेकिन 1950 में पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना ने ह्यशांतिपूर्ण मुक्तिह्ण के नाम पर तिब्बत में अपनी सेना घुसाई और एकतरफा रूप से इसे हड़प लिया। वर्ष 1959 में तिब्बती विद्रोह के बाद दलाई लामा को भारत में शरण लेनी पड़ी। तब से लेकर आज तक तिब्बत पर चीन का अवैध कब्जा बना हुआ है, और वहां की धार्मिक, सांस्कृतिक और भाषाई पहचान को मिटाने की कोशिश लगातार जारी है।

4. सांस्कृतिक दमनचीन ने तिब्बती भाषा की जगह मंदारिन थोप दी है। बौद्ध मठों को तोड़कर धार्मिक गतिविधियों पर प्रतिबंध लगाया है और दलाई लामा के चित्र रखने तक को अपराध माना जाता है। हजारों तिब्बतियों को जेलों में डाला गया है और स्वतंत्र अभिव्यक्ति का कोई स्थान नहीं बचा है।

शिंजियांग ह्न उइगर संस्कृति पर हमला1. अलग सांस्कृतिक पहचानशिंजियांग, जिसे चीन ह्यझिंजियांग उइगर स्वायत्त क्षेत्रह्ण कहता है, ऐतिहासिक रूप से तुर्किक मूल के उइगर मुसलमानों का क्षेत्र रहा है। इनकी भाषा, परंपराएं और धार्मिक मान्यताएं चीन की मुख्यधारा से बिल्कुल अलग हैं। यह क्षेत्र सिल्क रूट पर स्थित होने के कारण व्यापार और सांस्कृतिक आदान-प्रदान का केंद्र था।2. चीन का देर से दावा1949 में माओ त्से तुंग के नेतृत्व में कम्युनिस्ट शासन स्थापित होने के बाद चीन ने शिंजियांग पर नियंत्रण किया। इससे पहले यह क्षेत्र बहुत हद तक आत्मनिर्भर था। चीन ने यहां हान चीनी आबादी को बसाकर जनसांख्यिकीय संतुलन को बदलने की कोशिश की। उइगरों की आबादी में गिरावट दर्ज की गई है जबकि हान चीनी की संख्या लगातार बढ़ रही है।3. दमन और निगरानीचीन ने शिंजियांग में बड़े पैमाने पर ह्यपुनः शिक्षा केंद्रह्ण बनाए हैं, जहां लाखों उइगर मुसलमानों को जबरन रखा गया है। इन केंद्रों में धार्मिक पहचान मिटाई जाती है, कुरान पढ़ने और नमाज पढ़ने पर रोक है, और धार्मिक प्रतीकों को जबरन हटाया जाता है। कई रिपोर्टों में खुलासा हुआ है कि इन शिविरों में शारीरिक और मानसिक उत्पीड़न आम बात है।4. तकनीकी निगरानी का प्रयोगशिंजियांग विश्व का सबसे अधिक निगरानी वाला क्षेत्र बन चुका है। हर व्यक्ति की गतिविधियों पर कैमरों और चेहरा पहचानने वाले सॉफ्टवेयर से नजर रखी जाती है। मोबाइल ऐप के जरिए लोगों की धार्मिक गतिविधियों, यात्रा, बातचीत और यहां तक कि सोने-जागने की दिनचर्या तक पर रिपोर्ट बनती है।

चीन की रणनीतिह्न ऐतिहासिक झूठ को दोहराकर उसे ह्यसचह्ण बनानाबीजिंग की रणनीति साफ है ह्न बार-बार झूठ बोलो ताकि लोग उसे सच मानने लगें। तिब्बत और शिंजियांग को लेकर उसका दावा उसी झूठ का हिस्सा है। लेकिन इतिहास को हमेशा झुठलाया नहीं जा सकता। दस्तावेज, अंतरराष्ट्रीय अध्ययन, स्वतंत्र शोध और स्वयं वहां के लोगों की पीड़ा चीख-चीख कर यह बता रही है कि चीन ने इतिहास को तोड़ा-मरोड़ा है और अपनी साम्राज्यवादी नीति को न्यायोचित ठहराने के लिए ऐतिहासिक छल का सहारा लिया है।

अंतरराष्ट्रीय समुदाय की जिम्मेदारीअब समय आ गया है कि अंतरराष्ट्रीय समुदाय चीन के इस ऐतिहासिक झूठ को बेनकाब करे। तिब्बत और शिंजियांग के लोगों की पहचान, संस्कृति और अधिकारों की रक्षा केवल निंदा करके नहीं हो सकती। जरूरत है कड़े राजनीतिक, कूटनीतिक और मानवीय हस्तक्षेप की। अन्यथा बीजिंग इतिहास को हथियार बनाकर न केवल इन दो क्षेत्रों को, बल्कि पूरे एशिया को अस्थिर कर सकता है।उल्लेखनीय है कि 1959 में चीन से निर्वासित होने के बाद तिब्बती धर्मगुरु दलाई लामा भारत में रह रहे हैं। दलाई लामा तिब्बती इतिहास में एक विशिष्ट और अद्वितीय स्थान रखते हैं। वे सदियों से न केवल आध्यात्मिक गुरु, बल्कि तिब्बत के लौकिक नेतृत्वकर्ता भी रहे हैं।

दलाई लामा की परंपरा 14वीं शताब्दी में गेडुन ड्रब से शुरू हुई, जिन्हें मरणोपरांत पहले दलाई लामा के रूप में मान्यता दी गई। 17वीं सदी से लेकर 20वीं सदी तक, दलाई लामाओं ने तिब्बत की गैंडेन फोडरंग सरकार का नेतृत्व किया। इस दौरान पोटाला पैलेस का निर्माण हुआ, जो ल्हासा में दलाई लामाओं की आधिकारिक सीट बना। 14वें दलाई लामा, तेनज़िन ग्यात्सो, का जन्म 1935 में हुआ और उन्होंने 1950 में तिब्बत की राजनीतिक जिम्मेदारी संभाली।

1959 में चीन के खिलाफ तिब्बती विद्रोह केबाद उन्हें निर्वासन में भारत आना पड़ा। तब से वे धर्मशाला में रह रहे हैं और वहीं निर्वासित तिब्बती सरकार की स्थापना की गई। आज दलाई लामा पूरी दुनिया में अहिंसा, करुणा और तिब्बती स्वायत्तता के शांतिपूर्ण संघर्ष के प्रतीक बन चुके हैं।

उनका भारत में रहना, न केवल तिब्बती लोगों के लिए बल्कि भारत के लिए भी गहराई से सांस्कृतिक और आध्यात्मिक महत्व रखता है।

- ओम पराशर

दलाई लामा की परंपरा 14वीं शताब्दी में गेडुन ड्रब से शुरू हुई, जिन्हें मरणोपरांत पहले दलाई लामा के रूप में मान्यता दी गई। 17वीं सदी से लेकर 20वीं सदी तक, दलाई लामाओं ने तिब्बत की गैंडेन फोडरंग सरकार का नेतृत्व किया। इस दौरान पोटाला पैलेस का निर्माण हुआ, जो ल्हासा में दलाई लामाओं की आधिकारिक सीट बना।

आज का राशिफल

मेष : सुबह-सुबह की महत्वपूर्ण सिद्धि के बाद दिन-भर उत्साह रहेगा। किसी लाभदायक कार्य के लिए व्ययकारक स्थितियां पैदा होगी। अल्प-परिश्रम से ही लाभ होगा। कामकाज में आ रहा अवरोध दूर होकर प्रगति का रास्ता मिल जाएगा। घरेलू बहुमूल्य वस्तुओं के क्रय का योग है। शुभांक-1-5-7

वृष : परामर्श व परिस्थिति सभी का सहयोग मिलेगा। अधिकारी वर्ग से आपकी निकटता बढ़ेगी। व्यावसायिक उपक्रम में उलटफेर की शुरूआत हो सकती है। स्थाई सम्पति के निर्माण, मरम्मत व पुर्नस्थापना पर व्यय भार बढ़ेगा। किसी की टीका-टिप्पणी से आपको परेशानी हो सकती हैं। शुभांक-2-5-6

मिथुन : विश्वस्त लोगों के कहे अनुसार चलें। राजकीय कार्यो में सतर्कता बरतें। मान-सम्मान को ठेस लग सकती है। जोश से कम व होश में रहकर कार्य करें। नये आगंतुकों से लाभ होगा। कार्यक्षेत्र में संतोषजनक सफलता मिलेगी। परिवार के साथ मनोरांजनिक स्थल की यात्रा होगी। शुभांक-5-7-9

कर्क : पुरानी पारिवारिक समस्याओं का समाधान होगा। परिश्रम प्रयास से कार्य सफल होंगे। व्यापार व व्यवसाय में ध्यान देने से सफलता मिलेगी। बुरी संगति से बचें। नौकरी में सावधानीपूर्वक कार्य करें। अपनों का सहयोग मिलेगा। पत्नी व संतान पक्ष से थोड़ी चिंता रहेगी। मनोरथ सिद्धि का योग है। शुभांक-1-3-6

सिंह : दाम्पत्य जीवन में तनाव का वातावरण बन सकता हैं। शारीरिक सुख के लिए व्यसनों का त्याग करें। आत्मचिंतन करें। पुराने मित्र से मिलन होगा। पठन-पाठन में स्थिति कमजोर रहेगी। खान-पान में सावधानी रखें। अपने अधीनस्थ लोगों से कम सहयोग मिलेगा। भ्रातृपक्ष में विरोध होने की संभावना है। शुभांक-5-7-9

कन्या : रुका हुआ पैसा वसूलने में मदद मिल जाएगी। व्यर्थ प्रपंच में समय नहीं गंवाकर अपने काम पर ध्यान दीजिए। अच्छे कार्य के लिए रास्ते बना लेंगे। अपने हित के काम सुबह-सवेरे निपटा लें। पूर्व नियोजित कार्यक्रम सरलता से संपन्न हो जाएंगे। व्यापार व व्यवसाय में स्थिति उत्तम रहेगी। शुभांक-3-5-7

तुला : संतान की ओर से हर्ष के प्रसंग बनेंगे। समय को देखकर कार्य करना ज्यादा हितकर रहेगा। परिश्रम अधिक करना पड़ेगा तभी आप लाभ की आशा कर सकते हैं। कार्य क्षेत्र में पदोन्नति के योग बनेंग। व्यवसायिक अभ्युदय भी होगा और प्रसन्नताएं भी बढ़ेंगी। शुभांक-4-6-7

वृश्चिक : कर्म बल पर आपको सफलता मिलेगी। व्यवसायिक क्षेत्र में वर्तमान क्षमता को बढ़ाएंगे उपक्रम का विस्तार करने का प्रयास सफल होगा। आप अच्छी सफलताएं प्राप्त करेंगे। बुद्धि कौशल से चुनौतीपूर्ण कार्यो में सफलता मिलेगी। आर्थिक दृष्टि से समय उपलब्धिकारक रहेगा। भाई-बहनों का प्रेम बढ़ेगा। शुभांक-4-6-8

धनु : मानसिक एवं शारीरिक शिथिलता पैदा होगी। कामकाज सीमित तौर पर ही बन पाएंगे। स्वास्थ्य कमजोर बना रहेगा। कुछ आर्थिक संकोच पैदा हो सकते हैं। महत्वपूर्ण कार्य को समय पर बना लें तो अच्छा ही होगा। श्रम अधिक करना पड़ सकता है। वरिष्ठजनों से मतभेद उभर सकते हैं। शुभांक-3-5-7

मकर : शनैः-शनैः स्थिति पक्ष की बनने लगेगी। मेल-मिलाप से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। यात्रा का दूरगामी परिणाम मिल जाएगा। सुखद समय की अनुभूतियां प्रबल होगी। लाभदायक कार्यो की चेष्टाएं प्रबल होंगी। पारिवारिक प्रेमभाव बढ़ेगा। शुभांक-2-4-6

कुंभ : विकास के लिए बनाई योजना सफल होगी। अच्छा हो कि आप अपने उद्देश्य को लेकर सचेत रहें। प्रियजनों से समागम का अवसर मिलेगा। कार्यक्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य सौंपे जा सकते है जो कि अतिविश्वसनीय व्यक्तियों को ही दिये जाते हैं। कार्य साधक दिन है व्यर्थ न गंवाऐ। नैतिक दायरे में रहें। शुभांक-5-7-9

मीन : क्षमता से अधिक कार्य करने की नौबत आ सकती हैं। उत्तरदायित्व की अधिकता निजी जीवन में अपने ही ढंग की परेशानियां पैदा करेगी। कारोबार की उन्नति के लिये एक से अधिक सीढ़ी चढ़कर लोगो को आश्चर्य में डाल देगें। बौद्धिक क्षेत्र में प्रतियोगिता जीतने का मौका मिलेगा। शुभांक-1-5-8

संस्थापक
स्व. डॉ अभय कुमार सिंह

स्वामित्व वृन्दा मीडिया पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए
मुद्रक, प्रकाशक
मंजू सिंह

द्वारा चिरौंदी, बोड़ेया रोड, रांची (झारखंड) से मुद्रित एवं प्रकाशित।
प्रधान संपादक
सौरभ कुमार सिंह
संपादक
अविनाश ठाकुर*
फोन : 95708-48433
पिनः -834006
e-mail
khabarmantra.city@gmail.com
R.N.I No.
JHAHIN/2013/51797

धनबाद कार्यालय
लुबी सर्कुलर रोड, धनबाद 826001 से प्रकाशित।
(R.N.I No. आवेदित)

*पीआरबी एक्ट के अंतर्गत खबरों के चयन के लिए उत्तरदायी। प्रकाशित खबरों से संबंधित किसी भी विवाद का निपटारा रांची न्यायालय में ही होगा।

लेटर टू एडिटर

जैव विविधता की रक्षा

22 मई को अंतर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस मनाया जाता है, जिसका उद्देश्य प्रकृति और पर्यावरण के बीच संतुलन बनाए रखना है। जैव विविधता का अर्थ है—जीव-जंतुओं और पेड़-पौधों में विविधता, जो एक-दूसरे पर निर्भर हैं। आधुनिकता की अंधी दौड़ ने इस संतुलन को बिगाड़ दिया है। हमें पर्यावरण संरक्षण के माध्यम से जैव विविधता को बचाना होगा।

- राजेश कुमार जमशेदपुर

सतर्कता जरूरी

जेएन-1 वेरिएंट के खतरे को लेकर जागरूक करता है। केरल, महाराष्ट्र और तमिलनाडु में इसके ढाई से अधिक मामले मिले हैं। बुजुर्गों में एंटीबॉडी की कमी इसका प्रमुख कारण है। सरकार को पहले से चिकित्सा व सजगता के पुख्ता इंतजाम कर लेने चाहिए।

- अनिल कौशिक, रांची

भीतर छिपे दुश्मन

तकनीक के सहारे देशविरोधी गतिविधियां अब सरल हो गई हैं। यूट्यूब की आड़ में देश की गुप्त जानकारियां लीक करना गंभीर अपराध है। ऐसे देशद्रोहियों को कड़ा दंड मिलना चाहिए।

-अमृतलाल रांची

ट्वीट

जैसा कि आप जानते हैं भारत ने पिछले आतंकवाद के विरुद्ध ऑपरेशन सिंदूर की शुरूआत की और सफलता पूर्वक पाकिस्तान में मौजूद आतंकवाद के कई ठिकानों पर करारा प्रहार किया और बड़ी संख्या में आतंकवादी मारे गए। भारतीय सेनाओं ने एक कुशल डॉक्टर और सर्जन की तरह काम किया है। वह जल्दी मानता नहीं है। मंदिर, गुरुद्वारों और गिरजाघरों पर निशाना बनाया गया। उसके जवाब में भारतीय सेनाओं ने जो कारवाई की है। **- राजनाथ सिंह रक्षा मंत्री**

संकटकाल में शत्रु को लाभ पहुंचाने वाले सवाल

विकास सक्सेना

सामयिक

लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष और कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने ऑपरेशन सिंदूर को लेकर ह्यहमारे कितने विमान गिरेह्ण जैसे अवांछित सवाल पूछे हैं। उनके सवालों को पाकिस्तान, भारत के खिलाफ हथियार की तरह इस्तेमाल कर रहा है। इसके अलावा कई मीडिया संस्थानों की गैरजिम्मेदाराना रिपोर्टिंग और सोशल मीडिया में सक्रिय बुद्धिजीवियों ने लोगों के मन में सवाल पैदा कर दिया है कि क्या सरकार ने विदेशी ताकतों के दवाब में आकर हड़बड़ी में सीज फायर का फैसला लिया?

सब चाहते थे कि पाकिस्तान को इसका सबक सिखाया जाए। इसके बाद सबसे पहले हमारी सरकार ने सिंधु जल संधि को स्थगित करके पाकिस्तान के सामने बड़ा संकट खड़ा कर दिया। फिर ऑपरेशन सिंदूर के तहत सात मई को पाकिस्तान और पीओके में मौजूद आतंकवादी ठिकानों को ध्वस्त कर दिया। सैन्य कार्रवाई में जिन नौ ठिकानों को नष्ट किया गया उनमें जैश ए मोहम्मद का बहावलपुर स्थित मुख्यालय भी शामिल है। ऑपरेशन सिंदूर की आतंक के आकाओं को इतनी गहरी चोट लगी कि जैश ए मोहम्मद का सरगना मसूद अजहर फूट-फूट कर रोने लगा।

ऑपरेशन सिंदूर के तहत महज 25 मिनट में नौ आंतकवादी ठिकानों को नष्ट करके 100 से ज्यादा दहशतगर्दों को उनके अंजाम तक पहुंचाने के बाद हमारे सैन्य अधिकारियों ने साफ कर दिया था कि भारत ने जो कार्रवाई की है वह सिर्फ आतंकवादियों के खिलाफ थी। यह न तो पाकिस्तान के आम नागरिकों के खिलाफ थी और न ही पाकिस्तानी सेना के खिलाफ। उन्होंने साफ किया कि अगर पाकिस्तान की ओर से किसी भी तरह का दुस्साहस करने का प्रयास किया गया तो भारत उसका समुचित जवाब देगा।

आतंकियों के खिलाफ की गई कार्रवाई से बौखलाए पाकिस्तान ने चीन और दूसरे देशों प्राप्त हथियारों के दम पर ड्रोन, मिसाइल और लड़ाकू विमानों के जरिए भारत पर हमला करने की कोशिश की लेकिन हमारी सेना ने वायु रक्षा प्रणाली और उन्नत तकनीकी से उन कोशिशों को नाकाम कर दिया। हालांकि इसके जवाब में भारत की ओर से की गई कार्रवाई में पाकिस्तान की वायु रक्षा प्रणाली ध्वस्त हो गई। उसके अधिकांश हवाई अड्डे निष्प्रयोज्य कर दिए गए। भारत की प्रतिक्रिया इतनी तीखी होगी इसकी कल्पना शायद पाकिस्तान के आकाओं को भी नहीं थी। जो पश्चिमी मीडिया भारत के खिलाफ लगातार झूठे विमर्श गढ़ रहा था उसे भी सैटेलाइट से प्राप्त तस्वीरों के आधार पर यह स्वीकार करना पड़ा कि भारत ने पाकिस्तान की वायु रक्षा प्रणाली को ध्वस्त कर उसके सैन्य हवाई अड्डों को भारी नुकसान पहुंचाया है।

रूस-यूक्रेन और इजराइल-हमास युद्ध के अनुभव के आधार पर भारत विरोधी ताकतें उसे पाकिस्तान के साथ लम्बे युद्ध में फंसाना चाहती थीं जिससे उसकी आर्थिक प्रगति को बाधित किया जा सके। लेकिन भारतीय रणनीतिक सूझबूझ, सैन्य कुशलता और कूटनीतिक तैयारियों ने इन ताकतों के मंसूबों पर पानी फेर दिया। इसीलिए अब भ्रम फैलाने के लिए वे अनर्गल बयानबाजी कर रहे हैं। जिन लक्ष्यों को लेकर ऑपरेशन सिंदूर शुरू किया गया था प्रथम दृष्टया, उससे अधिक सफलता प्राप्त की जा चुकी है।

ऑपरेशन सिंदूर का प्रमुख उद्देश्य नरसंहार के दोषियों और पाकिस्तान में बैठे उनके आकाओं को सबक सिखाना था जो सात मई को पाकिस्तान और पीओजेके में मौजूद आतंकवादी अड्डों को नष्ट करके पूरा कर दिया गया। इसके बाद पाकिस्तान में जिस तरह भारत पर हमला किया उसके जवाब में तीनों भारतीय सेनाओं ने अपने अदम्य पराक्रम को प्रदर्शन करके तीन दिनों के भीतर ही पाकिस्तान को घुटनों पर ला दिया।

भारतीय सेना के पराक्रम, युद्ध कौशल और सटीक रणनीति ने पाकिस्तान और उसे हथियार मुहैया कराने वाले चीन और दूसरे देशों के पसीने छुड़ा दिए। जो देश भारत को लम्बे युद्ध में फंसाकर उसकी आर्थिक प्रगति को बाधित करने का ख्वाब संजोए बैठे थे, अपने विमानों, मिसाइलों और ड्रोनो के लगातार ध्वस्त होने से उसकी चिंता बढ़ गई। खबर है कि भारतीय सेना ने तुर्किये के ड्रोन, चीनी वायु रक्षा प्रणाली एसक्यू 9, चीनी विमान जेएफ 17 और अमरीकी विमान जे 16 समेत कई उन्नत मिसाइलों को मार गिराया। चीन अपनी पीएल 15 मिसाइल को दुनिया की सबसे आधुनिक मिसाइल बता रहा था इसे भारतीय वायु रक्षा प्रणाली ने मार गिराया और इसका मलबा भारत के पास सुरक्षित है। इसके बाद दुनिया के हथियार बाजार में साख गिरने के डर से चीन और अमेरिका जैसे देशों में हडकम्प मचा हुआ है। जानकारों का कहना है कि भारत की बढ़ती ताकत को देखकर ही अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने चीन के साथ ट्रेड वार को स्थगित कर दिया।

सौरिया पहाड़िया समुदाय की गुली पहाड़िन की जीत

तीन अनाथ पोतियों को मिली शिक्षा की रोशनी

राजमहल पहाड़ियों से एक प्रेरणादायक पहल की कहानी

शिखा पहाड़िन

प्रेरणा

साहिबगंज, झारखंड झारखंड के राजमहल पहाड़ियों में निवास करने वाला सौरिया पहाड़िया समुदाय आज भी शिक्षा और मूलभूत सुविधाओं से वंचित है। इस समुदाय को कई बार ह्यब्लूपति की कगार पर खड़ाह्ण कहा जाता है, और इसका एक प्रमुख कारण शिक्षा की भारी कमी है, जो समुदाय को मुख्यधारा से जोड़ने में सबसे बड़ी बाधा बनती है।

ऐसे ही हालातों से जूझ रही हैं गुली पहाड़िन, जो पिछले एक वर्ष से अपनी तीन अनाथ पोतियों के भविष्य को लेकर चिंतित थीं। गुली पहाड़िन का बेटा अब इस दुनिया में नहीं रहा, और उसकी पत्नी भी उन्हें छोड़ गई। अब इन तीन मासूम बच्चियों की परवरिश की पूरी जिम्मेदारी गुली के कंधों पर है।

गुली पहाड़िन चाहती थीं कि उनकी पोतियों को अच्छी शिक्षा

मिले, लेकिन आर्थिक तंगी और कागजी प्रक्रियाओं की उलझनों ने उन्हें बार-बार निराश किया। झारखंड सरकार द्वारा संचालित विशिष्ट पहाड़ीयाण आवासीय विद्यालयों में बच्चों का नामांकन गुली का सपना था, लेकिन उम्र और जानकारी की कमी के कारण दो वर्षों तक बच्चियों का नाम सूची में नहीं आया।

फरवरी 2025 में इस मामले पर सामाजिक कार्यकर्ता होने के कारण मैंने मार्गदर्शन और समर्थन के सहारे काम करना आंरभ किया। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण में आवेदन दिया गया, और विशिष्ट पहाड़ी कल्याण पदाधिकारी से संपर्क किया गया। इसके बाद उपायुक्त तक भी गुहार लगाई गई ताकि अनाथ बच्चियों को उनका शिक्षा का अधिकार मिल सके।

लगातार तीन महीनों के प्रयासों और अधिकारियों के सहयोग से अंततः तीनों बच्चियों के नामांकन की मंजूरी मिल गई। यह न केवल गुली पहाड़िन की व्यक्तिगत जीत है, बल्कि यह उन तमाम आदिवासी महिलाओं और बच्चों की उम्मीद भी है जो अब भी ऐसे ही हालातों में जीवन बिता रहे हैं।

यह घटना यह दशार्ती है कि भाषा और शिक्षा की कमी आज भी लोगों को उनके अधिकारों से वंचित कर रही है। यदि गुली पहाड़िन को समय पर सहायता न मिली होती, तो शायद इन बच्चियों को शिक्षा का अधिकार नहीं मिल पाता। यह तो आंरभ है। समाज के सबसे निचले तबके उठाने का सार्थक कदम।

(समाजसेविका मोटिवेटर)

देश का पहला बुलेट ट्रेन मार्ग मुम्बई से अहमदाबाद अगले साल बनकर तैयार हो जायेगा। इस पर बुलेट ट्रेन का संचालन आंरभ हो जायेगा। निर्माण का नयनाभिराम दृश्य। (साभार माई रेलवे डॉट कॉम से)

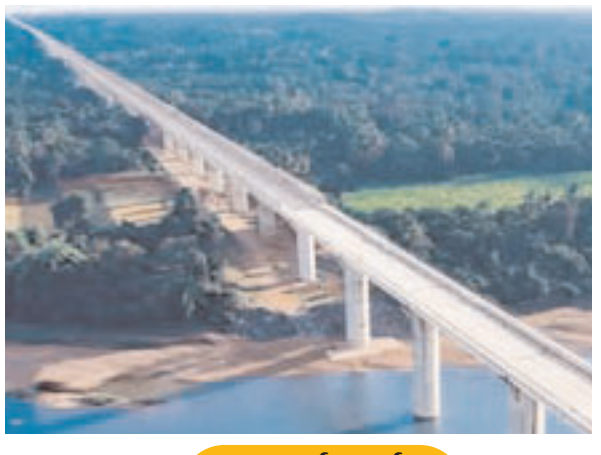

कार्टून वर्ल्ड

स्पीड न्यूज

इंटक इफिको कमेटी का विस्तार

रामगढ़। रिफ्रैक्ट्रीज सिरामिक्स मजदूर कांग्रेस इंटक सेल इफिको,मरार की बैठक शुक्रवार को इफिको फैक्ट्री मुख्य द्वार समक्ष हनुमान मंदिर परिसर में हुई। बैठक में यूनियन के महामंत्री खोगेंद्र साव उपस्थित थे। बैठक की अध्यक्षता यूनियन अध्यक्ष आनंद प्रताप सिंह व संचालन सचिव केडी मिश्रा ने किया। बैठक में संगठन को मजबूत बनाने पर विचार विमर्श किया गया। खोगेंद्र साव ने इंटक यूनियन कमेटी का विस्तार किया गया।जिसमें सह सचिव के रूप में प्राणदीप बक्शी,सहायक सचिव अरुण सिंह,संगठन मंत्री घूमेश्वर महतो,संगठन सचिव सुशील कुमार बनाए गए।साथ हीं बलराम गिरी,शिवचरण मुंडा, शंकर महतो,कलिंदर महतो, राजेश कुमार,चंदन सिंह,प्रमोद कुमार सिंह और शंभू पांडेय को कार्यकारिणी सदस्य बनाया गया। सभी नवनियुक्त यूनियन पदाधिकारियों एवं सदस्यों को महामंत्री खोगेंद्र साव द्वारा फूलमाला पहनाकर यूनियन में आने का स्वागत करते हुए सभी नवनियुक्त पदाधिकारियों-सदस्यों को नियुक्ति पत्र दिया गया। बैठक में यूनियन उपाध्याय नंदकिशोर बेदिया, उपाध्यक्ष संतोष कुमार सिंह, अवधेश सिन्हा,गुप्तेश्वर मिश्र, राजू वर्मा,शंकर,राजेश कुमार, सुशील कुमार,चंदन कुमार सिंह, प्रमोद कुमार सिंह,शंभू पांडेय, फलिंदर महतो, भुवनेश्वर महतो, अरुण सिंह आदि उपस्थित थे।

बारीडीह पंचायत में लगा मंडा मेला

भुरकुंडा (रामगढ़)। श्रीश्री मंडा पूजा समिति बारीडीह के तत्वावधान में गुरूवार की देर शाम बारीडीह पंचायत में श्रीश्री शिव मंडा पूजा समिति द्वारा मंडा मेला का उद्घाटन विधायक रोशन लाल चौधरी, झामुमो के केंद्रीय सचिव संजीव कुमार बेदिया, जिला पार्षद जयराम बेदिया, बारीडीह पंचायत के मुखिया भुनेश्वर बेदिया, पूजा समिति के अध्यक्स कामेश्वर बेदिया, उपाध्यक्ष छोटेलाल सिंह, सचिव संजय बेदिया, सह सचिव कृष्णा बेदिया और आजसू के जिलाध्यक्ष दिलीप दांगी ने संयुक्त रूप से फीता काटकर किया। इसके पूर्व नागेश्वर पहान द्वारा पूरे विधि-विधान एवं पारंपरिक रीति-रिवाज से पूजा-अर्चना कर क्षेत्र की हरियाली-खुशहाली और सुख-समृद्धि की कामना की गई। रोशनलाल चौधरी ने कहा कि ऐसे धार्मिक और सांस्कृतिक आयोजन समाज में एकता, समरसता और परंपरा को जीवित रखने का कार्य करते हैं। यह सिर्फ एक पूजा या मेला नहीं, बल्कि हमारी आस्था, संस्कृति और सामाजिक जुड़ाव की मिसाल है।

कुजू में नोडल अधिकारी ने की बैठक

कुजू। सीसीएल मुख्यालय रांची के नोडल अधिकारी सिक्युरिटी कुमार गौरव ने शुक्रवार को जीएम कार्यालय कुजू के सुरक्षा अधिकारी कक्ष में विभागीय अधिकारियों के साथ बैठक किया। इस दौरान नोडल अधिकारी सिक्युरिटी कुमार गौरव ने क्षेत्र में जारी अवैध कोयला खनन की लगातार मिल रही सूचना के बाद कुजू क्षेत्रीय सुरक्षा अधिकारी तबरेज आलम सहित अन्य अधिकारियों से कहा कि सीसीएल की खदानों के आसपास ही नहीं बल्कि सीसीएल लीज होल्ड एरिया में किसी भी तरह का अवैध खनन नहीं होने दिया जाएगा। वहीं अवैध खनन में शामिल लोगों को चिन्हित करते हुए वरीय पुलिस अधिकारियों को जानकारी दी जाएगी। सीसीएल की बंद पड़ी खदानों से अवैध कोयला खनन कराने वालों के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई की जाएगी। बैठक में हेमंत सिंह, कुजू कोलियरी शिवधर महतो, पुंडी रामप्रसाद बेदिया, करमा यासर अराफात, तोपा शंकर राम, पिंडरा भूखर कुम्हार, आरा सुरेंद्र नोनिया,सारूबेड़ा मुन्ना नोनिया शामिल हुए।

सड़क निर्माण की जांच हो : सिन्हा

भुरकुंडा (रामगढ़)। पतरातू प्रखंड के बुध बाजार शिवनगर से इमलीगाछ छठ घाट तक लगभग 99 लाख की लागत से बन रहे पीसीसी सड़क निर्माण की गुणवत्ता की निरंतर मिल रही शिकायतों को देखते हुए शुक्रवार को आजसू पार्टी के प्रतिनिधिमंडल ने उक्त निर्माणाधीन सड़क की जांच की। जांच के दौरान विभिन्न प्रकार की अनियमितता पाई गई है। जिसमें ढाल दिए गए सड़क में गिट्टी का प्रकार निर्धारित प्रकार से भिन्न प्रतीत हुआ। सड़क की ढलाई कई जगहों पर पांच इंच पाई गई। प्लिंथ लेवल को भी नहीं उखाड़ा गया है। जिन हिस्सों में सड़क की ढलाई हुई है उसके सीमेंट, गिट्टी एवं बालू के अनुपात में भी विसंगतियां प्रतीत हो रहीं हैं। ढलाई उपरांत पानी छिड़काव नहीं किया जा रहा है। सिन्हा ने कहा कि उक्त सड़क निर्माण में इस्तेमाल हुए मैटेरियल की लैब जांच की मांग हेतू पत्र लिखा जाएगा। संवेदक द्वारा ग्रामीणों को केस करने की धमकी देने का मामला भी प्रकाश में आया है जो कि अत्यंत निंदनीय है। घटिया सड़क निर्माण के खिलाफ आवाज बुलंद करने वाले ग्रामीणों को केस करने की धमकी देने वाले ठेकेदार के खिलाफ जरूरत पड़ी तो भ्रष्टाचार निरोधक विभागों में प्राथमिकी दर्ज कराई जाएगी।

बुढ़वा महादेव मंदिर तक बनेगा रोड

भुरकुंडा (रामगढ़)। पतरातु प्रखंड के श्रद्धा और आस्था का प्रमुख केंद्र बुढ़वा महादेव मंदिर अब सुलभ मार्ग से जुड़ने जा रहा है। सांसद मनीष जायसवाल ने ग्रामीण कार्य विभाग को भुरकुंडा तीन नंबर चीप हाउस से बुढ़वा महादेव मंदिर तक पथ निर्माण हेतु अनुशंसा की है। यह निर्णय क्षेत्रवासियों व शिवभक्तों के लिए अत्यंत हर्ष का विषय है। इस सराहनीय पहल पर श्रीश्री बुढ़वा महादेव मंदिर समिति, शिवभक्तगण तथा भुरकुंडा और आसपास के ग्रामीणों ने सांसद मनीष जयसवाल के प्रति आभार और धन्यवाद ज्ञापित किया है। जनता ने आशा जताई है कि इस पथ के निर्माण से न केवल मंदिर तक पहुंचना आसान होगा, बल्कि पर्यटन और स्थानीय विकास को भी गति मिलेगी।

आज तमिलानाडु जायेंगे श्रवण व विपुल

रजरप्पा।। 26 से 31 मई तक केएसआर इंजीनियरिंग कॉलेज तमिलनाडु में होने वाली 25वीं राष्ट्रीय सब जूनियर वुशू प्रतियोगिता खेलने के लिए शनिवार को कोडरमा से तमिलनाडु के लिए रजरप्पा वुशू एकेडमी के वुशू खिलाड़ी श्रवण कुमार महतो अंडर 52 किलोग्राम भार और विपुल कुमार अंडर 48 किलोग्राम भार दोनों सीसीएल रजरप्पा प्रोजेक्ट के महाप्रबंधक कल्याण जी प्रसाद एवं सीएसआर पदाधिकारी आशीष झा से मिलकर आशीर्वाद के साथ जीत की अग्रिम बधाई दी। क्षेत्रीय कांग्रेस यूनियन के नेता किशोरी प्रसाद, रामगढ़ जिला वुशू एसोसिएशन के सचिव सह कोच गौरी शंकर महतो, उप सचिव तपेश्वर महली, वुशू खिलाड़ी सौरभ कुमार, राजकुमार, खुशी कुमारी, रानी कुमारी नीतीश कुमार ने दी बधाई।

72 घंटे बाद भी नहीं मिला मजदूरों का सुराग

हजारीबाग की अवैध कोयला खदानों में तीन मजदूरों की हुयी मौत

▶▶ सिंडिकेट सिस्टम बना नरक का दरवाजा, आखिरकार खबर मन्त्र में छपी खबर सच हुयी साबित

खबर मन्त्र ब्यूरो

हजारीबाग में धधक रहा कोयले का अवैध कारोबार

खाकी, कलम और सत्ता की मिलीभगत है कोयला तस्करी
तीनों के सिंडिकेट ने चरही-मांडू को किया बर्बाद, हजारीबाग जिला बना भ्रष्टाचार का अखाड़ा
कौन-कौन हैं इस खेल के बड़े खिलाड़ी

हजारीबाग। झारखंड की जमीन एक बार फिर लहूलुहान है। लेकिन इस बार किसी माओवाद या अपराध से नहीं, बल्कि उस सड़े-गले भ्रष्ट सिस्टम से जो मुनाफे की खातिर इंसानी जानों को मिट्टी में दफना देता है। हजारीबाग के केरेडारी में तीन मजदूरों की जल समाधी ने साबित कर दिया है कि जो खबरें खबर मन्त्र अखबार महीनों से छाप रहा था, वो सिर्फ शब्द नहीं, कड़वी हकीकत थीं।

प्रमोद साव (45), उमेश कुमार (25) और नौशाद आलम (25), ये तीन नाम अब सरकारी आंकड़ों में लापता हैं, लेकिन असल में ये वो बदनसीब हैं जिन्हें उस अवैध कोयला तस्करी की सुरंगों ने निगल लिया जो एक गहरे सिंडिकेट और सत्ता की चुप्पी से संचालित होती हैं। तेज बारिश में अचानक खदान पानी से भर गई और तीनों मजदूर अंदर फंस गए।

72 घंटे से ज्यादा बीत चुके हैं, लेकिन उनकी कोई खबर नहीं। इन मजदूरों को हर दिन अपनी जान की बाजी लगाकर महज 400-500 रुपये मिलते हैं। लेकिन जब मौत दस्तक देती है, तो मुआवजे की एक औपचारिक रस्म अदा कर दी जाती है। और फिर वही खदान, वही सिंडिकेट, वही तस्करी, सब कुछ पहले की तरह चलता रहता है। खबर मन्त्र लगातार इन अवैध सुरंगों, कोयला सिंडिकेट और फर्जी पत्रकारों के गठजोड़ को उजागर करता रहा है। लेकिन प्रशासन, पुलिस और स्थानीय तंत्र की चुप्पी कहीं न कहीं इस मौत के व्यापार में हिस्सेदार बन जाती है। आखिर कब तक खदानों से कोयला नहीं, लाशें निकलेंगी? कब तक मजदूरों की मौतें सिर्फ फाइलों और खबरों तक सीमित रहेंगी? और सबसे अहम, कब जागेगा सिस्टम? यह हादसा कोई ह्यअचानक आई आपदाह्ल नहीं, बल्कि उस व्यवस्था का नतीजा है जिसने इंसानी जान की कीमत कुछ सिक्कों में तय कर रखी है। अब खामोश रहना भी उतना ही बड़ा अपराध है, जितना कि यह अवैध व्यापार।

क्या कहते हैं सांसद

इस मामले पर हजारीबाग सांसद मनीष जायसवाल ने खुलकर कहा कि अवैध माइनिंग की बात को नाकारा नहीं जा सकता। पूरे झारखण्ड के कोयला के क्षेत्र में अवैध माइनिंग जोरो पर है। हर दिन ये अखबार की सुर्खिया बनती है। लेकिन कोई इसपर प्रशासनिक पहल नहीं देखी गयी है। प्रशासन को इस तरह के अवैध कोयला के खदानों के छेदों को कंक्रीट से बंद कर देना चाहिए।

रामगढ़ में धंधार तालाब का होगा सौंदर्यीकरण : उपायुक्त

खबर मन्त्र संवाददाता

रामगढ़। रामगढ़ तालाब बचाओ योजना के तहत बड़ी पहल की जा रही है। योजना के तहत उपायुक्त के निर्देश पर जिले के अलग-अलग क्षेत्र में तालाबों को चिन्हित कर उनसे अतिक्रमण हटाने और सौन्दर्यीकरण कार्य किया जाना है। शुक्रवार को डीसी चंदन कुमार ने रामगढ़ शहर अंतर्गत बंगाली टोला में स्थित धंधार तालाब का निरीक्षण किया।

उपायुक्त ने तालाब के वर्तमान स्थिति का जायजा लेते हुए तालाब के क्षेत्रफल आदि की जानकारी ली। मौके पर उपायुक्त ने स्थानीय लोगों से भी तालाब से संबंधित कई महत्वपूर्ण जानकारियां ली। इसके बाद उन्होंने तालाब से अतिक्रमण हटाते हुए तालाब का सौंदर्यीकरण करने का निर्देश दिया। उल्लेखनीय है कि रामगढ़ तालाब बचाओ योजना के तहत जिला प्रशासन की ओर से सभी जिले वासियों से अपील की गई है कि वे अपने-अपने क्षेत्र में स्थित तालाबों का विशेष ध्यान रखें, तालाबों पर श्रमदान करें अथवा श्रमदान के समान राशि दान करें। ऐसे दान कर्ताओं के नाम से तालाब परिसर में वृक्षारोपण कर उन्हें सम्मानित किया जाएगा। इस दौरान अनुमंडल पदाधिकारी, प्रभारी पदाधिकारी गोपनीय शाखा, अंचल अधिकारी रामगढ़ सहित अन्य उपस्थित थे।

कूजू में बाबूलाल ने वर वधु को दिया आशीर्वाद

कुजू। पूर्व मुख्यमंत्री बाबूलाल मरांडी व पूर्व मंत्री रामेश्वर उरांव शुक्रवार को करमा निवासी समाज सेवी सह सीसीएल ऑल इंडिया एसटी एससी ओबीसी काउंसिल के सचिव नरेश मुंडा के बहन के शादी में शामिल होकर वर-वधु को आशीर्वाद दिया। साथ ही सुखमय जीवन की कामना की। इससे पूर्व बाबूलाल मरांडी व रामेश्वर उरांव का लोगों ने बुके देकर जोरदार स्वागत किया। इस अवसर पर मांडू जिप सदस्य दयामंती देवी, ज्योतिन्द्र प्रसाद साहू, समाजसेवी रामरतन मुंडा, संजय मुंडा, मिहिर चन्द मुंडा,संजय रजवार,सुनील मुंडा,राजेश मुंडा आदि शामिल थे।

अंबा प्रसाद ने सड़क दुर्घटना में घायल युवक को दिया एक लाख

भुरकुंडा (रामगढ़)। पूर्व विधायक अंबा प्रसाद ने गुरुवार को न्यू बैरक निवासी सिकंदर कुमार को मुख्यमंत्री राहत कोष से एक लाख रुपये की आर्थिक सहायता प्रदान की। मालूम हो कि सिकंदर कुछ माह पूर्व सड़क दुर्घटना में गंभीर रूप से घायल हो गए थे, और आर्थिक तंगी के कारण उनका इलाज कराना कठिन हो गया था। इस परिस्थिति को देखते हुए अंबा प्रसाद ने मानवीय पहल करते हुए मुख्यमंत्री राहत कोष से उन्हें सहायता दिलवाई। वहीं दूसरी ओर अपना सामाजिक दायित्व निभाते हुए अंबा प्रसाद ने जवाहर नगर पंचायत के पुराना सिनेमा हॉल भुरकुंडा निवासी छोटेलाल नायक के घर पहुंचीं और उनका हालचाल जाना। जानकारी के अनुसार, वे छत से गिर गए थे। जिसके कारण उनका दोनों पैर गंभीर रूप से घायल हो गया है। परिवार की कमजोर आर्थिक स्थिति को देखते हुए उन्हें भी अंबा प्रसाद ने आर्थिक मदद दी गई। मौके पर राजकिशोर पांडेय, बलदेव राम, देवानंद प्रसाद, जयंत तुरी, विक्कू रजक, फि रदौस आलम, रंजीता करमाली, खुशबू कुमारी व अन्य मौजूद थे।

तिरंगा यात्रा को ले मनोज यादव ने जताया आभार

बरही। भारतीय सेना के सफल ऑपरेशन सिंदूर की उपलब्धि के उपलक्ष्य में गुरुवार को बरही में भव्य तिरंगा यात्रा निकाली गई। यह यात्रा भाजपा बरही मंडल के तत्वावधान में भगवती मंदिर स्थित पार्टी कार्यालय से आरंभ होकर बरही चौक, तिलैया रोड, हजारीबाग रोड, गया रोड होते हुए पुनः बरही चौक पर सम्पन्न हुई। इस यात्रा का नेतृत्व बरही विधायक मनोज कुमार यादव ने किया। उन्होंने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर ने न केवल पाकिस्तान को करारा जवाब दिया, बल्कि भारत की प्रतिष्ठा और ताकत को वैश्विक मंच पर साबित कर दिया। यात्रा के माध्यम से सेना के शौर्य, बलिदान और अनुशासन को नमन किया गया। जिप उपाध्यक्ष संघ के प्रदेश अध्यक्ष किशुन यादव ने कहा कि यह यात्रा सैनिकों के प्रति हमारी श्रद्धा और सम्मान का प्रतीक है।

रामगढ़ में 25 किलो गांजा जब्त, दो तस्कर गिरफ्तार

खबर मन्त्र संवाददाता

रामगढ़ । पुलिस ने पतरातू से दो तस्करों को गिरफ्तार किया है. पुलिस ने दोनों के पास से लगभग 25 किलो गांजा बरामद किया। जिसका बाजार मूल्य लगभग छह लाख बताया जा रहा है। दोनों तस्करों की पहचान बिहार के पटना जिले के शत्रुघ्न कुमार और लालू कुमार के रूप में हुई है। मौके से 2 मोबाइल और 5 बैग में गांजा बरामद किया गया है। दोनों ओडिशा से रामगढ़ के रास्ते दिल्ली में गांजा को बेचा करते थे। एसपी अजय कुमार को गुप्त सूचना मिली थी कि ओडिशा से कुछ लोग बैग में नशीला प्रदार्थ लेकर पतरातू से ट्रेन पकड़ कर दिल्ली जाने वाले हैं। सूचना मिलने के बाद पतरातू एसडीपीओ गौरव गोस्वामी के नेतृत्व में टीम बनाई गई। टीम ने पतरातू जाने वाले रास्ते में जगह-जगह चेकिंग अभियान चलाया। इसी क्रम ने गैरवा टांड़ नदी पुल के पास बैग लिए हुए दोनों तस्कर पुलिस को देख भागने लगे। इस दौरान पुलिस ने दोनों का पीछा करते हुए पकड़ लिया। दोनों के बैग की तलाशी ली। बैग से 25 पैकेट्स टेप लपेटा हुआ मिला उसे खोलने पर गांजा पाया गया।

शिलापट्ट तोड़ने पर आजसू और ग्रामीणों में आक्रोश

दोषियों की जल्द करे गिरफ्तार पुलिस : ग्रामीण

खबर मन्त्र संवाददाता

भुरकुंडा (रामगढ़)। देवरिया से कुरसे कमलाटांड़ तक 540 मीटर लंबी सड़क के निर्माण को लेकर स्थानीय ग्रामीणों में उत्साह और उम्मीद की लहर है। लघु सिंचाई विभाग द्वारा प्रस्तावित इस सड़क का निर्माण बरसात से पहले कराने की मांग ग्रामीणों द्वारा लगातार उठाई जा रही है। लेकिन इस विकास कार्य से पहले ही एक विवाद सामने आ गया है।

देवरिया उप स्वास्थ्य केंद्र परिसर में लगे शिलापट्ट को गुरूवार शाम कुछ असामाजिक तत्वों द्वारा तोड़ दिया गया, जिससे ग्रामीणों में भारी आक्रोश फैल गया। इस घटना की कड़ी निंदा करते हुए ग्रामीणों ने पुलिस-प्रशासन से दोषियों की जल्द गिरफ्तारी की मांग की है। उनका कहना है कि यह घटना न केवल एक सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान पहुंचाने की साजिश है, बल्कि विकास कार्यों में बाधा डालने की कोशिश भी है।

इधर आजसू पार्टी के जिला उपाध्यक्ष अनिल सोनी ने इस घटना पर कड़ी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि शिलापट्ट तोड़ने की यह हरकत विपक्षी दलों की बौखलाहट को दशार्ती है। विधायक रोशन लाल चौधरी के नेतृत्व में जिस रफ्तार से क्षेत्र में विकास कार्य हो रहे हैं, उससे विपक्ष परेशान हो गया है। लेकिन याद रखिए, एक पत्थर तोड़ने से विकास की राह नहीं रुकेगी। सड़क निर्माण सहित हर विकास कार्य तय समय पर पूरा होगा। ग्रामीणों का कहना है कि देवरिया उप स्वास्थ्य केंद्र से कुरसे कमलाटांड़ तक की सड़क उनके लिए जीवनरेखा जैसी है। बरसात के मौसम में यह रास्ता कीचड़ और गड्ढों से भर जाता है, जिससे मरीजों और स्कूली बच्चों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ता है। ग्रामीणों की मांग है कि लघु सिंचाई विभाग और ठेकेदार मिलकर तुरंत सड़क निर्माण का कार्य शुरू करें, ताकि बरसात से पहले इसका लाभ जनता को मिल सके। सड़क निर्माण की मांग करने वालो में मैक्स सिंह, अर्जुन तुरी, प्रभु तुरी, चमन तुरी, अर्जुन बेदी, चरकी देवी सहित दर्जनों ग्रामीण महिला-पुरूष शामिल हैं।

एक नजर में

मुन्ना सिंह ने हजारीबाग की जर्जर सड़कों को लेकर ग्रामीण विकास मंत्री को सौंपा ज्ञापन

हजारीबाग। जब अधिकतर नेता चुनाव हारने के बाद जनता से दूरी बना लेते हैं, तब कांग्रेस नेता मुन्ना सिंह एक नई मिसाल कायम कर रहे हैं। वे न केवल सक्रिय हैं, बल्कि जनसमस्याओं को लेकर सड़क से कार्यालय तक संघर्ष कर रहे हैं। चुनाव में हार ने उन्हें कहीं खो नहीं दिया, बल्कि एक जुझारू जनप्रतिनिधि में बदल दिया है। शुक्रवार को मुन्ना सिंह ने सदर प्रखंड की वर्षों से उपेक्षित जर्जर सड़कों को लेकर इंद्रपुरी स्थित ग्रामीण कार्य विभाग कार्यालय पहुंचकर मंत्री दीपिका पांडे सिंह के नाम ज्ञापन सौंपा। उन्होंने कार्यपालक अभियंता को भी ज्ञापन की प्रतिलिपि दी। ज्ञापन में रोला मोड़ से सरौनी और मरहेता मोड़ से पौंता बस्ती तक की सड़कों के नवनिर्माण की मांग की गई। मुन्ना सिंह ने बताया कि ये सड़कें पिछले 15व 20 वर्षों से पूरी तरह बदहाल हैं। बरसात में हालात इतने खराब हो जाते हैं कि स्कूली बच्चे, मरीज और ग्रामीण भारी कठिनाइयों से जूझते हैं। उन्होंने कहा कि यह सड़कें अब विकास नहीं, बल्कि उपेक्षा की पहचान बन चुकी हैं। मुन्ना सिंह ने कहा कि यह केवल सड़कों की मरम्मत की मांग नहीं, बल्कि हजारों ग्रामीणों की रोजमर्रा की तकलीफों से राहत की गुहार है। यदि सरकार शीघ्र पहल करे तो यह क्षेत्र विकास की पटरी पर लौट सकता है। उनका यह कदम आने वाले समय में जनसेवा की नई परिभाषा गढ़ सकता है।

केजीबीवी में नामांकन को लेकर बैठक

हजारीबाग। समाहरणालय सभाकक्ष में कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय (केजीबीवी) और झारखंड बालिका आवासीय विद्यालय में कक्षा 6 से 9 तक की नामांकन प्रक्रिया को लेकर एक अहम बैठक आयोजित की गई। यह बैठक हजारीबाग सांसद मनीष जयसवाल के निर्देश पर हुई, जिसमें कटकमसांडी के पूर्व विधायक प्रतिनिधि किशोरी राणा ने भाग लिया। बैठक में छात्राओं के नामांकन प्रक्रिया, विद्यालयों की आधारभूत सुविधाएं, सुरक्षा व्यवस्था और अन्य जरूरी पहलुओं पर गंभीर चर्चा हुई। जिला स्तरीय इस बैठक में सभी संबंधित विभागों के अधिकारियों की उपस्थिति रही, जिसमें जिला शिक्षा अधीक्षक प्रवीण रंजन, जिला शिक्षा पदाधिकारी आकाश कुमार, एडीपीओ कौशल रंजन, सभी प्रखंड शिक्षा प्रसार पदाधिकारी और विद्यालयों के वार्डन शामिल थे।

बभनवै में सड़क सुरक्षा को लेकर निकली रैली

हजारीबाग। हजारीबाग के गौतम बुद्ध शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, मुकुंदगंज के प्रशिक्षुओं ने शुक्रवार को सड़क सुरक्षा को लेकर जागरुकता अभियान चलाया। दो दिवसीय कार्यक्रम के अंतिम दिन महाविद्यालय की एनएसएस इकाई के स्वयंसेवकों ने बभनवै गांव में सेव ड्राइव, सेव लाइफ का नारा देते हुए जनजागरुकता रैली निकाली और नुक्कड़ नाटक के माध्यम से ग्रामीणों को सड़क सुरक्षा के नियमों की जानकारी दी। नाटक और प्रचार के माध्यम से हेलमेट के महत्व, सीट बेल्ट की अनिवार्यता, नशे की हालत में वाहन न चलाने, रैश ड्राइविंग से बचने, जेब्रा क्रॉसिंग, ट्रैफिक सिग्नल, रॉन्ग साइड ड्राइविंग और ट्रिपल राइडिंग से होने वाले खतरों को बताया गया। इस अभियान का संचालन एनएसएस को-ऑर्डिनेटर एस.एस. मैती, सहायक प्राध्यापक दिलीप कुमार सिंह, कुमारी अंजलि और निर्मला बेंग के मार्गदर्शन में हुआ।

मुआवजा शिविर का ग्रामीणों ने किया विरोध

बड़कागांव। बादम कोल खनन परियोजना एनटीपीसी लिमिटेड के लिए बादाम और अंबाजीत मौजा में अर्जित की जा रही भूमि के मुआवजा भुगतान हेतू पूर्व नियोजित शिवर का आयोजन शुक्रवार को अंचल कार्यालय में जिला भू अर्जन पदाधिकारी एवं अंचलाधिकारी के उपस्थिति में किया गया। जिसका गोंदलपुरा, हाहे, गाली, बालोदर, रूदी, राउतपारा, बदाम और अंबाजीत से आए सैकड़ो की संख्या में ग्रामीणों ने एनटीपीसी वापस जाओ, प्रशासन तेरी मनमानी नहीं चलेगी सहित अन्य विरोध के नारे लगाते हुए अपना विरोध दर्ज कराया।वही सभी ग्रामीणों ने एक स्वर में कहा कि हम किसी भी कीमत पर कंपनी को जमीन नहीं देना चाहते हैं इसलिए हम कोई भी किसान अपना मुआवजा नहीं लेना चाहते हैं।ग्रामीण भू अर्जन पदाधिकारी और अंचल अधिकारी मनोज कुमार को लिखित आवेदन देकर उसका रिसिविंग लिया जिसमें ग्रामीणों ने अपने हस्ताक्षर युक्त आवेदन दिया जिसमें मुआवजा नहीं लेने की बात कही गई है।

बरकट्ठा : आंधी से सोलर पंप हुआ क्षतिग्रस्त

बरकट्ठा। बरकट्ठा प्रखंड में शुक्रवार देर शाम आए तेज अंधड़ और तूफान ने व्यापक तबाही मचाई। तेज हवाओं के साथ आए इस तूफान ने कई इलाकों में पेड़ गिरा दिए और बिजली व्यवस्था भी बाधित कर दी। गैड़ा पंचायत अंतर्गत कुरचुनो गांव में किसान मनोज यादव के सोलर पंप पर एक बड़ा पेड़ गिर गया, जिससे सोलर सिस्टम पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया। पीड़ित किसान मनोज यादव ने बताया कि वह सोलर पंप का उपयोग खेतों में सिंचाई के लिए करते थे। पंप के क्षतिग्रस्त हो जाने से उनकी खेती बुरी तरह प्रभावित होगी और उन्हें सिंचाई के लिए वैकल्पिक उपाय खोजना होगा। उन्होंने बताया कि यह सोलर सिस्टम उनकी कृषि जीवनरेखा था, जिसे तूफान ने छीन लिया। मनोज यादव ने प्रशासन से मांग की है कि क्षति का आकलन कर उन्हें सरकारी सहायता प्रदान की जाए ताकि वे दोबारा खेती कर सकें। गांव के अन्य किसानों ने भी बताया कि अंधड़ ने कई घरों और फसलों को नुकसान पहुंचाया है। स्थानीय लोगों का कहना है कि अगर समय रहते प्रशासन राहत और सहायता पहुंचाता है, तो प्रभावित किसानों को दोबारा खड़ा होने में मदद मिलेगी।

गंगादोहर में महावीर मंदिर का शिलान्यास

बड़कागांव। ग्राम गंगादोहर में पुजारी कृष्ण कुमार कौशल महावीर मंदिर निर्माण का किया शिलान्यास। शिलान्यास में केंद्रीय कुशवाहा अध्यक्ष सह मंदिर निर्माण समिति संयोजक सोहनलाल मेहता,अध्यक्ष सुरेश प्रसाद दांगी,सचिव प्रवीण कुमार, कोषाध्यक्ष रामवृक्ष प्रसाद, ग्राम अध्यक्ष महेंद्र महतो, नंदकिशोर मेहता,उपमुखिया राजु कुमार मेहता,लखन लाल मेहता, तापेश्वर प्रसाद तापस,प्रभु दयाल कुशावहा, इंद्रदीप प्रसाद,पवन कुमार,देवकी महतो,राजेन्द्र प्रसाद सहित दर्जनों उपस्थित थे।

इचाक में ठनका गिरने से दो गायों की मौत

इचाक: प्रखंड अंतर्गत ग्राम रतनपुर के अजीत प्रसाद मेहता की दो गायों की मौत वज्रपात से हो गई ज्ञात हो कि गुरुवार शाम भारी बारिश के दौरान इनकी दो गए एक काले रंग की और एक गोल रंग की जो सायल खुर्द स्थित चोंढीनदी के तरफ चर रही थी जो वज्रपात की चपेट में आने से दोनों गायों की मौत हो गई जिसमें एक गाय दुधारू गाय थी जब लोगों को पता चला तो जहां चोंढींनदी के समीप चर रही थी वहां जाकर देखा गया तो दोनों गाएं मर चुकी थी।कोडरमा सांसद प्रतिनिधि मुखिया प्रतिनिधि ओमप्रकाश मेहता ने जिला प्रशासन के साथ-साथ प्रशासन से उचित मुआवजा देने की मांग की।

बीडीओ ने की विकास योजनाओं की समीक्षा

बरही। बीडीओ जयपाल महतो ने शुक्रवार को पंचायत सेवक, रोजगार सेवक व अन्य कर्मियों के साथ विभिन्न पंचायतों में चल रहे विभिन्न योजनाओं को लेकर की समीक्षा बैठक की। उन्होंने बारी-बारी से पंचायतों में चल रही मनरेगा योजना, प्रधानमंत्री आवास योजना, अबुवा आवास योजना आदि अन्य योजनाओं की पंचायतवार समीक्षा की। मौके पर बीडीओ ने पंचायत व रोजगार सेवक को निर्देश देते हुए कहा कि पंचायत में चल रही जनकल्याणकारी योजनाओं के कार्य में तेजी लाएं। उन्होंने कहा कि पंचायत में चल रही योजनाओं को जल्द से जल्द पूर्ण कर बंद करें।

हूल क्रांति के नायक सिदो मांझी की चर्चा ब्रितानी अखबारों में लंदन तक

रानी राज

सन्थाल हुल (1856) के नायक सिदु मांझी का पोट्रेट

(वीर सिदो मांझी का इकलौता चित्र)

हुल क्रांति के नायक सिदो मांझी का इकलौता वास्तविक चित्र सन्थाल हुल (1856) के नायक सिदु मांझी का पोट्रेट

1857 की क्रांति से पूर्व के आदिवासी स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों का चित्र मिलना दुर्लभ है। यह स्तिथि संथाल हुल के नायकों को लेकर भी है। सिदो , कान्हू , चाँद और भैरव चारों भाइयो में केवल सिदो मांझी का एक सैक्र उपलब्ध है जिसे आप इस वीडियो में देख रहे हैं ।

सिदो , कान्हू , चाँद और भैरव चारो भाइयों ने आजादी के महासंग्राम में स्वयं को झोंक कर अंग्रेजो की गुलामी का विरोध किया था। इनके बारे में अंग्रेजी इतिहासकारों और तात्कालिक समाचार पत्रों ने भी विद्रोह की पल पल की घटनाओं की जानकारी दी लेकिन यह बहुत ही दुर्लभ है की इनके नायकों का कोई चित्र इनमें प्रस्तुत किया गया हो। फिर भी संथाल हुल के नायक सिदो मांझी का एक रेखा चित्र जरूर मिलता है। आइये उसी चित्र के बारे जानते हैं। नीचे के फोटो को आप सन्थाल हुल के विषय में कई जगह देखते होंगे ,भारत सरकार ने इस पर सन्थाल हुल के संदर्भ में 2002 में डाक टिकट भी जारी किए हैं।इसे 1856 को इलुस्ट्रेर्ट लंदन न्यूज में छापा गया था। यह चित्र द इलुस्ट्रेर्ट लंदन न्यूज 1856 के 23 फरवरी के अंक के पेज नंबर 200 में छपा था। 23 फरवरी 1856 के इलस्ट्रेटेड लंदन न्यूज में संथालो से सबंधित कई जानकारिया और विद्रोह से संबंधित रेखा चित्र प्रस्तुत किये थे। ये चित्र एक अंग्रेज अधिकारी ने तब बनाया था जब वीर सिदो और अन्य संताल आंदोलनकारियों को अंग्रेजी फौज ने पकड़ कर भागलपुर जेल में डाल दिया था । वह अंग्रेज अधिकारी वाल्टर स्टैनहोप शेरविल (1815-1890) था । वह बंगाली सेना का अधिकारी था। इसने संथाल विद्रोह पर इलस्ट्रेटेड लंदन न्यूज पेपर के लिए रिपोर्ट भी की थी। उसने 1834 से 1861 तक ईस्ट इंडिया कंपनी की सेवा सर्वेक्षक और मानचित्रकार के रूप में की और 1853 से बंगाली प्रेसीडेंसी में सीमा आयुक्त के रूप में काम किया, जो अब पश्चिम बंगाल, झारखंड और बिहार में विभाजित है। इस काम से उसे क्षेत्र के बारे में बहुत जानकारी मिली और वह आदिवासी आबादी के संपर्क में आया। संथाल विद्रोह के दौरान उसने लेफ्टिनेंट कर्नल के पद पर कार्य किया। उसने संथाल विद्रोह के दौरान लेफ्टिनेंट कर्नल के रूप में कार्य किया और क्षेत्र के बारे में जानकारी एकत्र की। उन्होंने ₹द इलस्ट्रेटेड लंदन न्यूज₹ के लिए भी काम किया। उसने द इलस्ट्रेटेड लंदन न्यूज के लिए संथाल विद्रोह से संबंधित रेखाचित्र बनाए, जो उस समय के ब्रिटिश समाज को भारत के इस आदिवासी विद्रोह की स्थिति और परिस्थितियों को समझाने में सहायक रहे। उनके रेखाचित्रों ने न केवल विद्रोह के दृश्यों को चित्रित किया, बल्कि संथाल लोगों के जीवन, संस्कृति और पर्यावरण को भी दशार्या।वाल्टर शेरविल और उनके रेखाचित्रों की विशेषताएँ- वाल्टर शेरविल एक प्रशिक्षित सर्वेक्षक और भूवैज्ञानिक था जिसने 19वीं सदी में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के लिए बंगाल और बिहार के क्षेत्रों में काम किया। संथाल विद्रोह (1855-56) के दौरान, उसने संथाल परगना (आज का झारखंड और पश्चिम बंगाल का कुछ हिस्सा) में न केवल प्रशासनिक और सैन्य भूमिका निभाई, बल्कि एक चित्रकार के रूप में भी योगदान दिया। उसके रेखाचित्र द इलस्ट्रेटेड लंदन न्यूज में प्रकाशित हुए, जो उस समय ब्रिटेन का एक प्रमुख समाचार पत्र था। इन रेखाचित्रों की कुछ प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखत हैं-यथार्थवादी चित्रणः शेरविल के रेखाचित्र अत्यंत विस्तृत और यथार्थवादी थे। उसने संथाल विद्रोह के दृश्यों, जैसे युद्ध के मैदान, विद्रोही समूहों, और ब्रिटिश सैन्य कार्रवाइयों को जीवंत रूप में दशार्या। उसके चित्रों में संथाल लोगों के हथियार (जैसे तीर-कमान, भाले) और उनकी रणनीतियाँ स्पष्ट रूप से दिखाई देती थीं।

सांस्कृतिक और नृजातीय विवरण:

शेरविल ने संथाल समुदाय की संस्कृति, वेशभूषा, और जीवनशैली को भी अपने रेखाचित्रों में शामिल किया। उदाहरण के लिए, उसके चित्रों में संथाल पुरुषों और महिलाओं के पारंपरिक परिधान, गाँवों की संरचना, और उनके दैनिक जीवन के दृश्य देखे जा सकते हैं। यह उस समय के यूरोपीय पाठकों के लिए संथालों के बारे में एक नई समझ प्रदान करता था।

भौगोलिक परिप्रेक्ष्य:

एक सर्वेक्षक होने के नाते, शेरविल के रेखाचित्रों में भौगोलिक सटीकता थी। उसने संथाल परगना के जंगल, पहाड़, और नदियों को अपने चित्रों में शामिल किया, जो विद्रोह के भौगोलिक संदर्भ को समझने में मदद करते थे। यह ब्रिटिश प्रशासन के लिए भी रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण था।

प्रचार और दस्तावेजीकरण का मिश्रण:

द इलस्ट्रेटेड लंदन न्यूज के लिए बनाए गए उसके रेखाचित्र न केवल समाचार के रूप में कार्य करते थे, बल्कि ब्रिटिश साम्राज्यवादी दृष्टिकोण को भी बढ़ावा देते थे। इनमें संथालों को कभी-कभी ₹जंगलीः या ₹विद्रोहीः के रूप में चित्रित किया गया, जो उस समय की औपनिवेशिक मानसिकता को दशार्ता है। फिर भी, उनके चित्र ऐतिहासिक दस्तावेज के रूप में आज भी मूल्यवान हैं।

(वित्त अधिकारी बिहार सरकार)

जंगल सफारी में रखें ध्यान कायदे-कानूनों का

विवेक कुमार

भारत की अद्वितीय जैवविविधता की प्रसिद्धि दुनिया में है। हर साल दुनिया से लाखों पर्यटक यहां घूमने के लिए आते हैं। पूर्व हो या पश्चिम, उत्तर हो या दक्षिण, भारत के जंगलों में दुनिया के दुर्लभतम जानवर पाये जाते हैं। इन घने जंगलों, घास के मैदानों और दलदलों में स्थित भारत के जंगलों में देखने के लिए बहुत कुछ होता है। अगर आप भी गर्मी के इन छुट्टियों में कहीं घूमने के लिए जा रहे हैं तो जंगल की सफारी का भी मजा ले सकते हैं। इसके कुछ नियम कायदे-कानून होते हैं।

हर जंगल सफारी में अनुभवी गार्ड और पार्क के अधिकारियों द्वारा जो सुरक्षा निर्देश जारी किए जाते हैं, उनके बारे में पर्यटकों को पहले से अवगत कराया जाता है। उनकी जरा-सी भी अनदेखी पर्यटकों के लिए ही नहीं बल्कि वन्यजीव दोनों की सुरक्षा के लिए खतरा साबित हो सकती है। सफारी के लिए सबसे पहला नियम तो यह है कि जंगल के भीतर कोई भी अपना पर्सनल वाहन नहीं ले जा सकता। इसके लिए जंगल प्रशासन द्वारा ही गाड़ी मुहैया करायी जाती है। सफारी के दौरान रंग-बिरंगे कपड़े पहनने की बजाय ब्राउन और हरे रंग के कपड़े जो वहां के वातावरण से मेल खाते हैं, उन्हें ही पहनकर जाना चाहिए। सफारी के दौरान गाड़ी से बाहर नहीं निकलना चाहिए। जानवरों को नजदीक से देखने का मोह नहीं पालना चाहिए। सफारी की गाड़ी खुली होती है, जिसमें आप इत्मीनान से अगर जंगली जानवर दिखता है तो उसे देख सकते हैं।

हालांकि यह जरूरी नहीं कि आपको जानवर पास से देखने को मिले, क्योंकि सफारी द्वारा जंगल के भीतर जो रास्ता बनाया जाता है, उसी सड़क पर चलना होता है। इन रास्तों को पर्यटकों की सुरक्षा और वन्यजीवों के संरक्षण को मद्देनजर रखते हुए बनाया जाता है। गाड़ी से बाहर निकलकर जानवर को नजदीक से देखने के चक्कर में या उसको करीब से फोटो लेने से भी बचना चाहिए। वैसे तो जंगल की सफारी में फ्लैश फोटोग्राफी की अनुमति नहीं दी जाती; क्योंकि कैमरे की फ्लैश से जानवर परेशान हो सकते हैं और वो घबराकर आप पर हमला भी कर सकते हैं।

सफारी का उद्देश्य वन्यजीवों को दूर से देखना होता है। उनको बहुत करीब से देखने के चक्कर में उनके पास नहीं जाना चाहिए। क्योंकि इससे वे डर सकते हैं, तनाव में आ सकते हैं और आप पर हमला भी कर सकते हैं। यदि आपके साथ गाइड है तो आप उसे ज्यादा करीब ले जाने के लिए नहीं कह सकते। उसे देखने के लिए दूरबीन या लंबी दूरी के कैमरा लैंस रखने चाहिए।

जानवरों को देखकर उन्हें आवाजें लगाना, भयानक आवाजें निकालना, इससे उनका प्राकृतिक व्यवहार बिगड़ सकता है। उनके पास जाकर अनावश्यक शोर नहीं करना चाहिए, न ही संगीत बजाना चाहिए। तेज आवाज वाले इलेक्ट्रॉनिक उपकरण ले जाने की मनाही होती है। इससे भी बचना चाहिए। यदि आपको जानवर पास से दिखाई दे तो उन्हें खाने के लिए कुछ न दें। इससे उनको स्वास्थ्य संबंधी दिक्कतें पैदा हो सकती हैं और उनके भोजन का चक्र बदल सकता है। सफारी से उतरकर इधर उधर पैदल न घूमें। यदि गलती से आप रास्ता भटक गये हैं या खो जाते हैं तो हो सकता है खतरनाक जीवों से आपका सीधे सामना हो जाए और आपकी जान भी जा सकती है।

जंगल में खाने के लिए आप जो भी सामान लेकर जाते हैं, कोल्ड ड्रिंक की बोतल, पानी की बोतलें, चिप्स के पैकेट इन सबका कूड़ा वहां न छोड़कर आएं बल्कि इन्हें अपने साथ लाएं। जंगल में रहने वाले स्थानीय आदिवासियों से भी अनावश्यक मेलमिलाप न करें। उनकी तस्वीर उनकी अनुमति के बगैर न लें। आदिवासियों की संस्कृति और रीति-रिवाजों का सम्मान करते हुए उनकी गरिमा बनाये रखें और उनकी परंपराओं तथा प्रथाओं का उल्लंघन न करें। सफारी के लिए राज्य

जवाई बांध तेंदुआ संरक्षण रिजर्व ऑफ, राजस्थान

काबिनी वाइल्ड लाइफ सेंचुरी, कर्नाटक

जिम कार्बेट नेशनल पार्क उत्तराखंड

रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान, राजस्थान

काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान, असम

कान्हा राष्ट्रीय उद्यान, मध्य प्रदेश, सुंदरवन राष्ट्रीय उद्यान, पश्चिम बंगाल, पेरियार राष्ट्रीय उद्यान, केरल

बांधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान, मध्य प्रदेश,बांदीपुर राष्ट्रीय उद्यान, कर्नाटक

ताडोबा अंधारी टाइगर रिजर्व, महाराष्ट्र

पेंच राष्ट्रीय उद्यान, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र

उमंग से बाल विवाह में आयी कमी किशोरियों में हौसला भी बढ़ा

फलक फातिमा

मन में है कि एक दिन आगे पढ़ लिखकर भारतीय प्रशासनिक सेवा का अभिन्न अंग बनू। परंतु सामाजिक कुरीतियां व परिवारिक पृष्ठभूमि ऐसी कि उसे लंबी उड़ान के लिए बाधा बन रही थी।

यह कहानी है झारखंड के अति पिछड़े जिले **जामताड़ा के सत्तसाल गांव** की। जिसमें अल्पसंख्यक समुदाय से ताल्लुक रखने वाली आशिया और पूजा जो 11 वीं की परीक्षा लिख चुकी थी और अब 12 वीं की कक्षा में जाने के बाद आगे भी पढ़ाई-लिखाई जारी रखना चाहती थी। परंतु परिवार वालों ने बीच मझधार में साथ छोड़ दिया और इन्हें बाल विवाह जैसी सामाजिक बुराई की ओर धकेलने का मार्ग तैयार करने लगे। परंतु उमंग से जुड़ने के बाद इन किशोरियों के जीवन में बदलाव आया। जो बाते ये परिवार वालों से बोल नहीं पाती थी, वे खुलकर अपनी इच्छाओं व आगे बढ़ने लालसा को साझा की। परिणाम यह हुआ कि सामूहिक प्रयास से दोनों के अभिभावकों को समझाया गया और जो दोनों के लिए रूकावटें थी, एक हद तक दूर हो पाई। ऐसी ही कई कहानियां है, जो जामताड़ा और गोड्डा जैसे जिले में मिल जाएंगी। परंतु इंटरनेशनल सेंटर फॉर रिसर्च ऑन विमेन (आईसीआरडब्ल्यू), बदलाव फाउंडेशन, साथी संस्था, ढउक (प्रोजेक्ट कंसर्न इंटरनेशनल) द्वारा एवं झारखण्ड सरकार के सहयोग से चलाई जा रही इस कार्यक्रम के कारण किशोरियों के सशक्त होने के कारण बाल विवाह जैसे आंकड़ों में 2024 में कई परिवर्तन देखने को मिला।

क्या कहते है बाल विवाह के आंकड़े

एनएफएचएस - 5 (2020-21) के सर्वे के अनुसार गोड्डा जिला में 59 प्रतिशत और जामताड़ा जिले में 58 प्रतिशत बाल विवाह दर के आंकड़े सामने आए है। इसी को देखते हुए उमंग कार्यक्रम को गोड्डा के 44 स्कूलों और 128 गावों और जामताड़ा जिला के 27 स्कूलों और 81 गावों में चलाया गया जिससे बाल विवाह की दर और स्कूल ड्रॉप आउट दर में कमी लाया जा सके। टीम द्वारा गांव में पहुंचकर ड्रॉप आउट बच्चियों-बच्चों से बातचीत की और कारणों को समझने का प्रयास किया। **एनएफएचएस - 4** के (2015-2016) के आंकड़ों पर गौर करे तो झारखंड में 37.9 प्रतिशत महिलाओं की 20-24 वर्ष वालों की पूर्व में 18 वर्ष से पहले कर दी गई थी। 12 प्रतिशत लड़कियां जिनकी उम्र 15-19 वर्ष थी, मां बन चुकी थी या गर्भवती थी। 59 प्रतिशत साक्षर महिलाओं में से सिर्फ 28.7 प्रतिशत महिलाओं ने 10 या अधिक कक्षा तक की पढ़ाई की थी। विवाहिता महिलाओं में से 34 प्रतिशत ने पति या साथी द्वारा कई तरह के हिंसा का अनुभव किया। जबकि 35.2 प्रतिशत महिलाओं के पास मोबाइल फोन था। जिसका वे उपयोग कर सकती थी।

क्या कहते है जामताड़ा के आंकड़े व क्या है बाल विवाह के दुष्परिणाम :

वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार जामताड़ा जिले में कुल जनसंख्या 791,042 है, जिसमें 404,830 पुरुष और 386,212 महिलाएं है। पूरे जिले में 155,275 परिवार रहते हैं। औसतन लिंग अनुपात 954 हैं। इसमें 9.6 प्रतिशत शहरों, 90.4 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्रों में रहते है। शहरी क्षेत्रों का औसतन साक्षरता दर 82.6 प्रतिशत, ग्रामीण क्षेत्रों का साक्षरता दर 62.6 प्रतिशत है। पुरुषों का साक्षरता दर 63.79 प्रतिशत और महिलाओं का साक्षरता दर 43.51 प्रतिशत हैं। जामताड़ा में अनुसूचित जाति की संख्या 9.2 प्रतिशत, अनुसूचित जनजाति 30.4 प्रतिशत है। धर्म के आधार पर इस जिले में हिंदूओं की आबादी 69.6 प्रतिशत, मुसलमानों की आबादी 20.78 प्रतिशत, ईसाईयों की आबादी 0.56 प्रतिशत, सिख की 0.07 प्रतिशत, बौद्ध की 0.01 प्रतिशत, जैन की 0.1 प्रतिशत हैं। वहीं अन्य धर्म में सरना-आदिवासी धर्म मानने वालों की संख्या 8.67 प्रतिशत हैं।

यदि आंकड़ों पर गौर करे तो बहुसंख्यक वाले आबादी में बाल विवाह के ज्यादा मामले आते हैं, इसमें 12 से 13 वर्ष की उम्र में शादी करवा दी जाती है।

शोध में पाया कि जिन किशोरियों की विवाह 15-16 वर्ष की आयु में होता है, वे इस उम्र में दो बच्चों की मां बन जाती हैं और कम उम्र में बच्चें जनने के कारण बच्चा व जच्चा दोनों की स्वास्थ्य हालत खराब रहती हैं। इसमें पोषण, विटामिन, खून की कमी के कारण अधिकतर मामलों में बच्चा और मां की मौत ज्यादा होती हैं।

(यूनिसेफ झारखंड)

घरेलू बचत का गिरना आर्थिक मंदी का खतरनाक संकेत

प्रशांत झा

लगातार महंगाई का बढ़ना भी न केवल आमजन के लिये बल्कि सरकार के लिये चिन्ता का कारण है। उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपीआई) के अनुमानों से पता चलता है कि जुलाई (7.4 प्रतिशत) की तुलना में अगस्त में यह घटकर 6.8 फीसदी हो गई है।

आगामी लोकसभा एवं विधानसभा चुनाव के मध्यनजर महंगाई का लगातार बढ़ते रहना चिंता का विषय है। घरेलू बचत, महंगाई, बढ़ता व्यक्तिगत कर्ज, बढ़ते व्यक्तिगत खर्चे आदि को लेकर निम्न एवं मध्यम वर्ग परेशान है। इस परेशानी के समाधान की बजाय सत्ता एवं विपक्ष दल एक दूसरे पर दोषारोपण कर रहे हैं। भारतीय रिजर्व बैंक ने अपनी ताजा मासिक बुलेटिन में माना है कि खाद्य मुद्रास्फीति को काबू करना कठिन साबित हो रहा है। आरबीआई द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार, भारत की घरेलू बचत दर वित्त वर्ष 2022-23 में पांच दशकों के निचले स्तर पर पहुंच गई। 18 सितंबर को जारी इन आंकड़ों के मुताबिक वित्त वर्ष 2022-23 में देश की शुद्ध घरेलू बचत पिछले साल की तुलना में 19 फीसदी कम रही है। 2021-22 में देश की शुद्ध घरेलू बचत जीडीपी के 7.2 फीसदी पर थी जो इस साल और घटकर सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के लगभग 5 दशक के निचले स्तर 5.1 प्रतिशत पर आ गई है।

अनेक मोर्चों पर भारत की तस्वीर आशा का संचार कर रही है, लेकिन आर्थिक मोर्चे पर चिन्ता का सबब लगातार बना हुआ है, हालांकि समूची दुनिया में आर्थिक असंतुलन बना हुआ है, भारत ने फिर भी खुद को काफी संभाले हुए हैं। किसी देश की अर्थव्यवस्था इस पैमाने पर भी आंकी जाती है कि उसकी घरेलू बचत, प्रति व्यक्ति आय और क्रयशक्ति की स्थिति क्या है। भारतीय स्टेट बैंक की रिपोर्ट के मुताबिक पिछले वित्त वर्ष में परिवारों की शुद्ध वित्तीय बचत में करीब पचपन फीसद की गिरावट आई और यह सकल घरेलू उत्पाद के 5.1 फीसद पर पहुंच गई। वित्त मंत्रालय ने घरेलू बचत में गिरावट पर सफाई देते हुए कहा है कि लोग अब आवास और वाहन जैसी भौतिक संपत्तियों में अधिक निवेश कर रहे है। इसका असर घरेलू बचत पर पड़ा है। मंत्रालय ने भरोसा दिलाया है कि संकट जैसी कोई बात नहीं है। सरकार ने यह भी कहा है कि पिछले दो साल में परिवारों को दिए गए खुदरा ऋण का 55 फीसद आवास, शिक्षा और वाहन पर खर्च किया गया है।

परिवारों के स्तर पर वित्त वर्ष 2020-21 में 22.8 लाख करोड़ की शुद्ध संपत्ति जोड़ी गई थी। 2021-22 में लगभग सत्रह लाख करोड़ और वित्तवर्ष 2022-23 में 13.8 लाख करोड़ रुपये की वित्तीय संपत्तियां बढ़ी हैं। इसका मतलब है कि लोगों ने एक साल पहले और उससे पहले के साल की तुलना में इस साल कम वित्तीय संपत्तियां जोड़ी हैं। सरकार के अनुसार ऐसा इसलिए हुआ, क्योंकि वे अब कर्ज लेकर घर और वाहन जैसी भौतिक संपत्तियां खरीद रहे हैं। आंकड़ों के मुताबिक पिछले दो साल में आवास और वाहन ऋण में दोहरे अंक में वृद्धि हुई है। अर्थशास्त्रियों का कहना है कि महामारी के बाद से लोग काफी सचेत हुए हैं। वे जोखिम वाले निवेश से बच रहे हैं। दूसरी बात बचत खातों पर ब्याज पर दर बहुत आकर्षक नहीं हैं। भारतीय उद्योग परिसंघ द्वारा आयोजित बी-20 बैठक में बोलते हुए वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा भी कि ब्याज दरें बढ़ाकर महंगाई नियंत्रित करने की कीमत आर्थिक विकास को चुकानी भारी पड़ सकती है। सरकार चाहे जो तर्क दे पर घरेलू बचत गिरना कोई शुभ संकेत नहीं कहा जा सकता। लगातार महंगाई का बढ़ना भी न केवल आमजन के लिये बल्कि सरकार के लिये चिन्ता का कारण है। उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपीआई) के अनुमानों से पता चलता है कि जुलाई (7.4 प्रतिशत) की तुलना में अगस्त में यह घटकर 6.8 फीसदी हो गई है। यहां तक कि खाद्य वस्तुओं की महंगाई भी जुलाई के उच्चतम स्तर पर 11.5 फीसदी से घटकर अगस्त में 9.94 प्रतिशत हो गई। इन संकेतों से भले ही राहत की सांसें मिली हो, बावजूद इसके यह अब भी ज्यादा है। यह गिरावट मुख्यतः सब्जियों की कीमतों में कमी के कारण आई है, जो जुलाई की 37.4 फीसदी की तुलना में अगस्त में 26.1 प्रतिशत थी। हालांकि अनाज और दालों में महंगाई दोहरे अंकों में बनी हुई है, जिनमें घरेलू और अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों के मद्देनजर गिरावट की संभावना फिलहाल नहीं दिख रही। आरबीआई ने स्वीकारा है कि खाद्य मुद्रास्फीति को काबू करना कठिन साबित हो रहा है। मगर अधिकारियों को महंगाई कम करने का महत्वपूर्ण काम सौंपा गया है। स्पष्ट है कि दबाव और प्रतिबंधों के माध्यम से महंगाई को काबू में करने के प्रयास काफी हद तक नाकाम रहे हैं। घरेलू आपूर्ति में कमी के कारण कई खाद्य वस्तुओं, विशेषकर अनाज व दालों में महंगाई रूकने का नाम नहीं ले रही है। गेहूं का उत्पादन गरमी और बेमौसम बारिश के कारण प्रभावित है। यही कारण है कि मई 2022 में गेहूं के निर्यात पर प्रतिबंध लगा दिया गया। चावल के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ है। दालों का भी यही हाल है।

महंगाई अक्सर सत्तापक्ष के लिये राजनीतिक चुनौती बनती रही है, चुनावों में हार-जीत को बहुत गहराई से प्रभावित करने में महंगाई आधार बनती रही है। महंगाई कम करने के लिए हमें वैकल्पिक रास्ते तलाशने होंगे, जो आर्थिक विकास या किसानों के हितों को प्रभावित किए बिना उपभोक्ताओं की रक्षा करें। विकृत एवं असंतुलित बाजार व्यवस्था ने भी अनेक आर्थिक विसंगतियों को जन्म दिया है। एक आदर्श व्यवस्था का चिन्तन ही वर्तमान की आर्थिक समस्याओं का समाधान हो सकता है। वर्तमान सरकार ने गरीबी दूर करने में सफलता पाई है, लेकिन उसकी सोच अमीरी बढ़ाने की भी रही है। छोटे उद्योग, सबके पास अपना काम, हर व्यक्ति के लिये रोजगार की सुनिश्चितता, कोई भी इतना बड़ा न हो कि जब चाहे अपने से निर्बल को दबा सके। एक आदमी के शक्तिशाली होने का मतलब है, कमजोरों पर निरन्तर मंडराता खतरा। एक संतुलन बने। सबसे बड़ी बात है मानवीय अस्तित्व और मानवीय स्वतंत्रता की। इस पर आंच न आये और आवश्यकताओं की पूर्ति भी हो जाये, ऐसी अर्थव्यवस्था की आज परिकल्पना आवश्यक है। तभी बढ़ती महंगाई, आय असंतुलन एवं घटती बचत पर काबू पाया जा सकता है।

आय असमानता, महंगाई, बेरोजगारी एक कल्याणकारी राज्य की सबसे बड़ी विडंबना है। यह जब गंभीर रूप से उच्चतम स्तर पर पहुंच जाती है तो उदार आर्थिक सुधारों के लिए सार्वजनिक समर्थन कम हो जाता है। ध्यान देने वाली बात यह है कि भारत में नव उदारवादी नीतियों से आर्थिक वृद्धि दर को जरूर पंख लगे हैं, लेकिन इससे अमीरों की जितनी अमीरी बढ़ी है, उस दर से गरीबों की गरीबी दूर नहीं हुई है। परिणामस्वरूप आर्थिक असमानता की खाई साल दर साल चौड़ी होती जा रही है।

क्या कहते है बाल विवाह के आंकड़े

एनएफएचएस - 5 (2020-21) के सर्वे के अनुसार गोड्डा जिला में 59 प्रतिशत और जामताड़ा जिले में 58 प्रतिशत बाल विवाह दर के आंकड़े सामने आए है। इसी को देखते हुए उमंग कार्यक्रम को गोड्डा के 44 स्कूलों और 128 गावों और जामताड़ा जिला के 27 स्कूलों और 81 गावों में चलाया गया जिससे बाल विवाह की दर और स्कूल ड्रॉप आउट दर में कमी लाया जा सके। टीम द्वारा गांव में पहुंचकर ड्रॉप आउट बच्चियों-बच्चों से बातचीत की और कारणों को

झारखंड के अंशुमन भगत और संदीप मुरारका समेत देश के 14 लेखकों को मिला गुरुदेव साहित्य पुरस्कार 2025

■ रवींद्रनाथ टैगोर की स्मृति में दिया जाता है यह साहित्यिक सम्मान

खबर मन्त्र ब्यूरो

जमशेदपुर। साहित्य और विचार की शक्ति को समर्पित यूएक्स टॉक्स ई-पत्रिका ने अपने पहले डिजिटल साहित्यिक पुरस्कार गुरुदेव साहित्य पुरस्कार 2025 का भव्य समापन किया। यह पुरस्कार रवींद्रनाथ टैगोर की स्मृति में उन समकालीन लेखकों को सम्मानित करता है, जिनकी रचनाएं विचार को झकझोरती, उद्देश्य को जगाती और समाज में बदलाव की प्रेरणा बनती हैं।

यूएक्स टॉक्स के संस्थापक सुनील सिहाग ने कहा, इस वर्ष 14 असाधारण लेखकों को उनके विशिष्ट साहित्यिक योगदान के लिए सम्मानित किया गया। प्रत्येक विजेता टैगोर की सच्चाई, सौंदर्य, आशा और मानवता की दृष्टि को अपने लेखन में जीवंत करते हैं।

इस गौरवपूर्ण सूची में झारखंड के दो लेखक अंशुमन भगत और संदीप मुरारका का नाम विशेष रूप से शामिल है।

अंशुमन भगत, एक सफर में जैसी प्रेरणादायक पुस्तकों के लेखक अंशुमन भगत को नैतिकता, आशा और आधुनिक युग की कहानियों के लिए सम्मानित किया गया। उन्होंने कहा, एक युवा लेखक के रूप में यह सम्मान मुझे प्रेरित करता है कि मैं दुनिया को शब्दों की दृष्टि से देखता रहूं।

संदीप मुरारका, झारखंड के एक सफल व्यवसायी से लेखक बने संदीप मुरारका को उनकी काव्यात्मक पुस्तक कुछ अल्फाज दिल से के लिए सम्मान मिला, जो आत्मविश्लेषण और भावनात्मक

सम्मान पाने वाले लेखकगण।

अंतर्दृष्टि से भरपूर है। उनकी लेखनी व्यवसाय और सृजनात्मकता के बीच सेतु का काम करती है।

अन्य प्रमुख सम्मानित लेखकों में गुजरात/मध्य प्रदेश की योगिता वार्डे शामिल हैं, जिन्हें साही और सुधीर, दिया, पोस्टकार्ड और कुकर की सीटी जैसे उपन्यासों के लिए सम्मानित किया गया। गुजरात की मैत्रीदेवी सिसोदिया को कॉन्टेम्परारी चीरहरण और मोमेंट्स एंड इटर्निटीज जैसी रचनाओं के लिए यह पुरस्कार मिला, जो महिलाओं की आवाज को सशक्त रूप से प्रस्तुत करती हैं। भारत और स्पेन के रोशन भोंडेकर को साहित्य और सिनेमा के माध्यम से सकारात्मक संदेश फैलाने के लिए सराहा गया। गुजरात/राजस्थान के रवींद्र मारडिया को उनकी आत्मकथा बडी टू ऑल के लिए सम्मानित किया गया, जिसमें उनके उद्योगपति से समाज सुधारक बनने की प्रेरणादायक यात्रा को दशार्या गया है। अमेरिका/भारत की श्री को उनके सांस्कृतिक रूप से समृद्ध उपन्यास द क्रिमसन थ्रेड के लिए यह सम्मान मिला। मुंबई की अपर्णा जाधव को तलाक के बाद महिलाओं के सशक्तिकरण पर आधारित पुस्तक पैराडाइज सक्ड-थ्राइव आफ्टर डिवोर्स, लेडीज! के लिए चुना गया।

16 वर्षीय नई दिल्ली की वेरुश्का पांडे को मानसिक स्वास्थ्य और मानवाधिकार जैसे विषयों पर आधारित उनकी कविता संग्रह द क्वाइट जिओमेट्री ऑफ कैओस के लिए सम्मानित किया गया। मुंबई के 16 वर्षीय आदित्य सेनगुप्ता धर को अपना टाइम आएगा नामक सामाजिक उन्नयन पर केंद्रित युवा संकलन के लिए पुरस्कृत किया गया। मध्य प्रदेश की जूवी को फैंटेसी साहित्य में डिजिटल पीढ़ी की संवेदनाओं को स्थान देने के लिए सराहा गया।

गुड़गांव/केरल की अनघा रतीश को द सेलेस्टिया क्रॉनिकल्स और ए वर्ल्ड ऑफ इंट्रीकेसीज जैसी पुस्तकों के लिए सम्मान मिला, जिनमें नैतिकता और नायकीय गुणों का सुंदर समन्वय है। स्विट्जरलैंड/भारत की डॉ प्रीति अमरेश को वैश्विक नीति और साहित्य के संगम पर आधारित उनके विशिष्ट लेखन के लिए चुना गया। मुंबई की पिंकी एनडी कंसारा को एम्पॉवरिंग इमोशनल अवेयरनेस पुस्तक के लिए यह सम्मान मिला, जो आत्म विकास और भावनात्मक जागरूकता को गहराई से समझाती है।

यूएक्स टॉक्स ई-पत्रिका द्वारा स्थापित यह पुरस्कार केवल एक सम्मान नहीं, बल्कि एक आंदोलन है। यह उन लेखकों को मंच देता है जो सृजनात्मकता और मानवीय संवेदना को एक साथ लेकर चलते हैं। यह पहल साहित्य को डिजिटल युग में भी जीवित और जागरूक बनाए रखने की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम है। पुरस्कार निर्णायक मंडल ने कहा, आज की स्क्रीन और स्क्रॉल की दुनिया में यह पुरस्कार साहित्य की क्रांतिकारी आत्मा को जीवित रखता है सुलभ, समावेशी और मानवीय। गुरुदेव साहित्य पुरस्कार 2025 के विजेताओं, विशेष रूप से अंशुमन भगत और संदीप मुरारका जैसे रचनात्मक अगुआओं ने यह साबित किया है कि कहानियाँ आज भी जागृति, जुड़ाव और बदलाव की शक्ति रखती हैं।

शारदा इंटरप्राइजेज में कार्यरत मजदूर घायल

गम्हरिया। औद्योगिक क्षेत्र स्थित शारदा इंटरप्राइजेज कंपनी में काम के दौरान अभिजीत कालिंदी नामक ठेका मजदूर घायल हो गया। इस घटना में उसके हाथों की उंगलियां बुरी तरह जख्मी हो गया। प्रबंधन द्वारा आनन फानन में उसे इलाज हेतु आदित्यपुर स्थित शिवा नर्सिंग होम में भर्ती कराया गया है। इसकी सूचना मिलते ही जेएलकेएम के गम्हरिया प्रखंड अध्यक्ष गोपाल चंद्र महतो अपनी टीम के साथ वहां पहुंचे और घायल मजदूर का हाल जाना व घटना की पूरी जानकारी प्राप्त की। उन्होंने कहा कि पूरे मामले को लेकर कंपनी प्रबंधन एवं ठेकेदार से वार्ता किया जाएगा।उन्होंने कहा है कि लगातार इस तरह के मामले देखे जा रहे हैं। औद्योगिक क्षेत्र में मौजूद सभी उद्योग सुरक्षा के नियमों को ताप पर रख कर कार्य करते हैं जो बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। इस मौके पर जेएलकेएम के आदित्यपुर नगर अध्यक्ष प्रदीप महतो, मीडिया प्रभारी मनोज महतो समेत कई पार्टी कार्यकर्ता उपस्थित थे।

नरवापहाड़ में आरा बुरू सेंदरा पर्व 26 मई को

जादूगोड़ा। नरवापहाड़ में आरा बुरू सेंदरा पर्व आगामी 26 मई को होगा। इधर, लाया नाजिर सरदार की अध्यक्षता में भूमिज जाहिरगाढ़ में आयोजित बैठक में सेंदरा पर्व मानने का फैसला लिया गया।इस बाबत शिव चरण मुर्मू (सामाजिक कार्यकर्ता)टोला प्रधान भवतरण टुडू, शिमल हेंब्रम, होपा हेंब्रम ने कहा कि आगामी 26 मई को रांगा पहाड़ देवता की पहले गाजे-बाजे के पूजा की जाएगी तत्पश्चात सामने पहाड़ी पर चढ़कर रागा पहाड़ देवता से खेतो की हरियाली व अच्छी बारिश को लेकर मन्नतें मांगी जाएगी।इस पूजा में चिमाई जुड़ी, खुर्शी, स्वर्ग चिड़ा, राजदोहा के ग्रामीण भाग लेगे। राजदोहा ग्राम प्रधान माझी युवराज टुडू ने कहा कि आगामी 26 मई को आयोजित सेंदरा पर्व के जरिए अपनी संस्कृति व परम्परा का निर्वाह हेतु शिकार पर्व शांतिपूर्वक मनाया जायेगा।

यूसिल कॉलोनी से गायब 13 गायें पहुंची चाकुलिया

जादूगोड़ा। यूसिल कॉलोनी से बीती रात अचानक 13 गाय रहस्यमय ढंग से गायब हो गयी। इधर, लोग गाय की शाम की घर पर नहीं पाकर गाय की खोज में इधर भटकते रहे। बाद में पता चला को यूसिल सुरक्षा कर्मी व अधिकारियों की संरक्षण में रहस्य ढंग से गायब हुई 13 गाय चाकुलिया गौशाला में। लावारिस समझ कर भेज दी गई है। जिससे यूसिल की सुरक्षा अधिकारी के खिलाफ लोगों में आक्रोश भड़क उठा। इस बाबत पांडुडीह निवासी महेंद्र हेंब्रम ने कहा कि कंपनी के सुरक्षा अधिकारियों ने बिना सूचना के लावारिस गाय समक्ष कर चाकुलिया गौ शाला भेज दी गयी। बाद में मुखिया मंजूरी बानरा ने यूसिल प्रबंधन व पुलिस प्रशासन से बात कर मामले को सुलझाना। प्रबन्धन की माने तो गाय की वजह से कॉलोनी में गंदगी फैलती है।जिसकी वजह से कॉलोनी में लावारिस घूम रही 13 गाय की चाकुलिया गौशाला भेज दिया गया। महेंद्र मुर्मू ने कहा कि यूसिल की चारदीवारी जहां-तहां खुली हुई है व गाय तो सीमाएं पहचानती नहीं है। जिसकी वजह से यूसिल की सुरक्षाकर्मियों ने लावारिस गाय समझ कर चाकुलिया गाय शाला भेज दिया। अब मुखिया मंजूरी बानरा की पहल पर गाय को चाकुलिया से वापस जादूगोड़ा लाने की तैयारी चल रही है ताकि 40 से 69 हजार की गाय पीड़ित परिवार तक पहुंच सके।

लिलिपुट प्ले स्कूल में बच्चों ने लिया वाटर फन का मजा

मेदिनीनगर। नावाटोली स्थित लिलिपुट प्ले स्कूल में समर कैम्प के चौथा दिन बहुत खास रहा क्योंकि कैम्प का मेन इवेंट ट्रेजर हंट बच्चों के द्वारा खूब पसंद किया गया। ट्रेजर हंट में बच्चों के द्वारा खजाने की खोज के लिए बच्चों को खूब मशक्कत करनी पड़ी इसके बाद अंत मे उन्हें दूसरे दिन सफलता मिली। यह एक पॉइंट्स बेस्ड कॉम्पिटिशन था जिसमें लड़कों की टीम विजेता रही। विजेता टीम में अखिलेश, फराज, कार्तिक, अमिष, नक्श, सात्विक ये सभी थे।

साकची में कांग्रेस की संविधान बचाओ रैली कल

प्रदेश प्रभारी के राजू के साथ प्रदेश अध्यक्ष केशव महतो कमलेश करेंगे संबोधित

■ साकची पोस्ट ऑफिस पार्किंग मैदान में होगी रैली, तैयारी अंतिम चरण में पहुंची

खबर मन्त्र ब्यूरो

जमशेदपुर। जमशेदपुर के साकची स्थित पोस्ट ऑफिस के सामने वाले मैदान में जिला स्तरीय संविधान बचाओ रैली का आयोजन 25 मई 2025 को अपराह्न 3 बजे से होना है। रैली में मुख्य अतिथि के रूप में प्रदेश प्रभारी के राजू, सह प्रभारी सिरीबेला प्रसाद, सांसद गुरमीत सिंह सप्पल, प्रदेश अध्यक्ष केशव महतो कमलेश, मंत्री राधाकृष्णन किशोर, विधायक राजेश कच्छप, पूर्व मंत्री बन्ना गुप्ता, पूर्व सांसद राज्यसभा प्रदीप कुमार बलमुचू, पूर्व प्रदेश अध्यक्ष डॉ अजय कुमार राष्ट्रीय प्रवक्ता एवं वरिष्ठ नेतागण रैली को संबोधित करेंगे।

जिलाध्यक्ष आनंद बिहारी दूबे ने बताया कि प्रखंड क्षेत्र, मंडल क्षेत्र, पंचायत/ वार्ड में निवास करने वाले सभी कांग्रेस नेतागण, पदाधिकारी, कार्यकर्ता एवं आम जनता, सामाजिक संगठन के प्रतिनिधि को रैली में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया जा रहा है। हमारे राष्ट्रीय नेता, प्रदेश नेता, मंत्रीगण, विधायकगण एवं वरिष्ठ नेता हमारे भारतीय संविधान को बचाने के लिए बात रखेंगे।

तैयारी बैठक करते जिला अध्यक्ष आनंद बिहारी दूबे।

इधर, पूर्वी सिंहभूम जिला कांग्रेस कमिटी के तत्वावधान में जिला स्तरीय तैयारी समिति की बैठक जिलाध्यक्ष आनन्द बिहारी दुबे के अध्यक्षता में कांग्रेस रैली स्थल साकची पोस्ट ऑफिस के सामने पार्किंग स्थल में आयोजित की गई। जिला अध्यक्ष तैयारी समिति की बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि बैठक में रैली के सूचना प्रसारण हेतु बैनर, पोस्टर, होडिंग प्रखंड स्तर, मंडल स्तर पर लगाया जाए। प्रखंड पदाधिकारी, मंडल पदाधिकारी घर-घर संपर्क अभियान चलाकर निमंत्रण देंगे। रैली में हर समाज के प्रतिनिधियों को आमंत्रित किया जायेगा। सामाजिक संगठन के पदाधिकारियों को भी आमंत्रित किया जाएगा।

रैली को सफल बनाने में अग्रणी संगठन विभाग के पदाधिकारियों को भी जिम्मेदारी से जोड़ा गया है। बैठक का संचालन संजय सिंह आजाद उपाध्यक्ष ने किया।

बैठक में जिलाध्यक्ष आनन्द बिहारी दुबे, प्रदेश सचिव राकेश कुमार तिवारी, राष्ट्रीय अध्यक्ष महिला इंटक देविका सिंह, सामंता कुमार, फिरोज खान, ब्रजेंद्र तिवारी, शशी कुमार सिन्हा, नूरजहां वारसी, अपर्णा गुहा, शफीअहमद खान, रजनीश सिंह, अरूण कुमार सिंह, अंसार खान, संजय चौधरी, मो. शब्बीर ऊर्फ लालबाबू, सोशल मीडिया चेयरमैन राजकुमार वर्मा, अमित श्रीवास्तव, इंदुभुषण यादव, राकेश साहू, राजेश चौधरी, अजय शर्मा, शमशेर आलम, प्रभात रंजन श्रीवास्तव, अमरजीत नाथ मिश्र, सचिन कुमार सिंह, कौशल प्रधान, संजय यादव सहित कांग्रेसजन शामिल हुए।

एक नजर में

जनता दरबार में विधायक जगत माझी से मिले अबुआ आवास के लाभुक, बतायी परेशानियां

गोइलकेरा, पश्चिम सिंहभूम। मनोहरपुर विधानसभा क्षेत्र के विधायक जगत माझी ने शुक्रवार को प्रखंड कार्यालय स्थित अपने कक्ष में साप्ताहिक जनता दरबार आयोजित किया। इस दौरान विभिन्न पंचायतों से आये ग्रामीणों ने विधायक से मुलाकात कर समस्याएं बतायी और समाधान की मांग की। जनता दरबार में विशेष रूप से अबुआ आवास योजना के दर्जनों लाभुकों ने विधायक के समक्ष आवास निर्माण से संबंधित परेशानी बतायी। लाभुकों ने कहा ईंट और निर्माण सामग्री महंगा होने के अलावा ट्रांसपोर्टिंग में अधिक खर्च आ रहा है। जिस कारण आवास निर्माण में छत ढलाई में परेशानी आ रही हैं। लाभुकों ने छत ढलाई के बदले एस्बेस्टस लगाने की अनुमति दिलाने की मांग की। जिसपर विधायक ने कहा लाभुकों की परेशानी को देखते हुए छत ढलाई के बदले एस्बेस्टस लगाने की अनुमति मिले इसे लेकर वह सरकार के समक्ष बातों को रखेंगे। साथ ही आश्वासन दिया कि सरकार के स्तर से कोई रास्ता निकले इसके लिए वह भरसक प्रयास करेंगे। जनता दरबार में बीडीओ विवेक कुमार ने कुछ मामलों का तत्काल निष्पादन किया। मौके पर प्रखंड अध्यक्ष सह मुखिया गणेश बोदरा, उप प्रमुख वरदान भुइयां, कांग्रेस प्रखंड अध्यक्ष सोनाराम कोड़ाह, अकबर खान, प्रिंस खान, सुखमती बानरा, वसीम खान थे।

आकाश कुमार ने ए निगेटिव रक्तदान किया, तीन रक्तदाताओं ने किया एसडीपी दान

जमशेदपुर। भारतीय रेड क्रॉस सोसाईटी, पूर्वी सिंहभूम द्वारा गर्मी के दिनों में बढ़ती रक्त आवश्यकता एवं जरूरतमंदों को होने वाली परेशानियों को देखते हुए त्वरित रक्त समाधान का प्रयास किया जा रहा है, जिस क्रम में आज रेड क्रॉस के कम्पोनेन्ट डोनेशन प्रभारी प्रभुनाथ सिंह की देखरेख में 1 रेयर ग्रुप ए निगेटिव के जरूरतमंद के लिए रक्तदान के साथ ही 3 जरूरतमंदों को सिंगल डोनर प्लेटलेट्स उपलब्ध कराया गया। टाटा स्टील कर्मी आकाश कुमार ने आज रेड क्रॉस के अनुरोध पर ए निगेटिव रक्तदान किया, जो एक जरूरतमंद के जीवन के लिए अतिआवश्यक था, इसी क्रम में दिनेश कुमार सिंह जो कि टाटा स्टील कर्मी व टाटा वर्कर्स यूनियन कमिटी मेम्बर भी है, उन्होने मानवता का परिचय देते हुए आज अपना 19वां एसडीपी दान किया, नियमित रक्तदान में 14 रक्तदान के साथ उन्होने 33 रक्तदान पूरा किया है, इसी क्रम में ए आलम ने अपने 21वें एसडीपी दान के साथ 24 नियमित रक्तदान से 45वां रक्तदान पूरा किया, वहीं टाटा स्टील सुरक्षा विभाग में कार्यरत युवा व हर समय दूसरों को जीवनदान देने के लिए एसडीपी डोनेशन को तैयार रहने वाले सौमेन्द्र बस्तिया ने 16वीं बार एसडीपी डोनेशन के साथ 32 नियमित रक्तदान के साथ अपना 48 रक्तदान पूरा किया। इस अभियान में रक्तदाताओं के साथ उनके उत्साहवर्धन को एसडीपी डोनेशन प्रभारी प्रभुनाथ सिंह उपस्थित थे। रक्तदाताओं का उत्साह बढाने में जमशेदपुर ब्लड बैंक के वरीय चिकित्सक डॉ एलबी सिंह एवं वरीय तकनिशियनों ने रक्तदाताओं को स्मृति चिह्न देकर सम्मानित करते हुए उत्साह बढ़ाया।

अरुणाचल प्रदेश की टीम ने छोटा गम्हरिया आंगनबाडी केंद्र का भ्रमण कर लिया जायजा

गम्हरिया। पोषण अभियान योजना के तहत स्थिति का जायजा लेने के लिए अरुणाचल प्रदेश की टीम गम्हरिया प्रखंड पहुंची। इस दौरान टीम के सदस्यों ने प्रखंड के छोटा गम्हरिया आंगनबाडी केंद्र का भ्रमण कर केंद्रों में उपलब्ध आधारभूत संरचना का सत्यापन किया। इसके अलावा उन्होंने केंद्र में नामांकित बच्चों की शिक्षा-दीक्षा तथा केंद्र सरकार से मिलने वाली सुविधाओं की जानकारी ली। इस दौरान टीम द्वारा आंगनबाड़ी केंद्र में साफ-सफाई की व्यवस्था का भी अवलोकन किया। मौके पर टीम के सदस्यों ने बताया कि स्कूल जाने से पूर्व बच्चों को पढ़ाई के लिए मानसिक व बौद्धिक रूप से तैयार किया जा रहा है। प्री-स्कूल कीट्स के माध्यम से बच्चे कई आवश्यक जानकारी हासिल कर रहे हैं। आंगनबाड़ी केंद्रों पर एएनएम के द्वारा किए जा रहे टीकाकरण कार्य, स्वास्थ्य जांच आदि का भी उन्होंने जायजा लिया। साथ ही, पोषण ट्रेकर में प्रविष्ट लाभुकों का वजन व ऊंचाई का माप लेकर पोषण ट्रेकर में अंकित रिपोर्ट से उसका मिलान किया गया। अपने भ्रमण के दौरान टीम के सदस्यों ने गर्भवती व धातृ महिलाओं से भी बातचीत की और उन्हें मिलने वाली सामग्री के उपयोग व उपभोग की विस्तृत जानकारी उनसे ली। मौके पर सुपोषित ग्राम पंचायत के राज्य स्तरीय टीम के पंचायती राज उपनिदेशक अकोनगतलिबू, जिला समाज कल्याण पदाधिकारी, राज्य समन्वयक, सीडीपीओ गम्हरिया एवं स्थानीय मुखिया उपस्थित रही।

डिज्नीलैंड मेला का खूब आनंद ले रहे बच्चे

जमशेदपुर। भारत का मशहूर फन वर्ल्ड डिजनीलैंड प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी साकची स्थित आमबगान मैदान मे काफी धुम-धाम से चल रहा है। उक्त जानकारी देते हुए फन वर्ल्ड के आयोजक श्री चन्द्रशेखर पर्वत ने बताया कि मेले का इस वर्ष मुख्य आकर्षण सुनामी झुला एवं रिवॉलविंग चेयर झुला एवं सिंगापुर एयरलाईंस जहाज का मुख्य द्वारा आकर्षण का केन्द्र है। इस फन वर्ल्ड (डिजनीलैंड) में मिनी भारत की एक झलक है। जिसे देखने के लिए बच्चे एवं नवजवान सभी उम्र के लोग भारी संख्या में आ रहें हैं। जहाँ हिन्दुस्तान के हर प्रांत के परिधान एवं हेन्डी क्राफ्ट के समान उपलब्ध रहेंगे। इस फन वर्ल्ड (डिजनीलैंड) एक ऐसा समूह है जो कि बेरोजगारों को रोजगार मुहैया कराता है।

स्वागतम्... कल नगर आ रहे हैं लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला

खबर मन्त्र ब्यूरो

■ फेजी ऑडिटोरियम में चैंबर के प्लेटिनम जुबिली समारोह में भाग लेंगे

जमशेदपुर। लोकसभा के सभापति (स्पीकर) ओम बिरला रविवार की सुबह 9:10 बजे (दिल्ली से) रांची के बिरसा मुंडा हवाई अड्डे पर उनका आगमन होगा। तत्पश्चात वे सुबह 9:20 पर बिरसा चौक स्थित भगवान बिरसा मुंडा की मूर्ति पर माल्यार्पण करेंगे। इसके बाद दिन के 12:15 से, दोपहर 2 बजे तक, जमशेदपुर के लोयोला स्कूल के फैसी सभागार में सिंहभूम चैंबर्स ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री के प्लैटिनम जुबली कार्यक्रम में शामिल होंगे। कार्यक्रम के बाद वे वापस दोपहर 3:15 बजे जमशेदपुर

के सोनारी हवाई अड्डे से रांची के लिए लौटेंगे। जन संपर्क विभाग के मुताबिक रांची में शाम 5:45 बजे से 7:40 बजे तक डांगरटोली के स्वर्ण भूमि में विभिन्न समूहों के नागरिक अभिनंदन कार्यक्रम में शामिल होंगे।

विस्तारीकरण... भोजपुरी भवन गोलमुरी के ग्राउंड फ्लोर की ढलाई का कार्य संपन्न

खबर मन्त्र ब्यूरो

जमशेदपुर। गोलमुरी स्थित भोजपुरी भवन आज सौन्दर्यीकरण और विस्तारीकरण की प्रक्रिया से गुजर रहा है। यह भवन नगर की साहित्यिक और सांस्कृतिक

गतिविधियों के केंद्र के रूप में अपनी आभा बिखेर रहा है। आज इसके ग्राउंड फ्लोर के ढ़लाई का कार्य संपन्न हुआ। अब इसके सभागार में सौ से ज्यादा लोग बैठ पाएगें जो पहले के अपेक्षा दुगुना है। सिंहभुम जिला भोजपुरी साहित्य परिषद के अध्यक्ष और जलेस सिंहभुम के पूर्व उपाध्यक्ष अरविंद

ढलाई के पूर्व मजदूरों में लड्डू बांटते अध्यक्ष अरविंद विद्रोही।

विद्रोही ने बताया कि भवन के विकास का कार्य प्रगति पर है। शीघ्र ही भवन वाचनालय, शुद्धजल, अलग शौचालय आदि की विशेष सुविधाओं से लेश होगा। अगले महीने यहां राष्ट्रीय व्यंग्य सम्मेलन होना निश्चित हुआ है। इस अवसर पर कार्यकारी अध्यक्ष मसूद खान, सदस्य रमेश हंसमुख, उदय हयात एवं अन्य उपस्थित थे।

सरायकेला नियोजनालय के दो दिवसीय रोजगार शिविर में 64 युवा शॉर्ट लिस्टेड

■ रिलेशनशिप ऑफिसर, वेल्डर, मशीन ऑपरेटर, प्रोडक्शन असिस्टेंट व डाटा एंट्री ऑपरेटर पदों पर हुआ चयन

खबर मन्त्र ब्यूरो

जमशेदपुर। गुरुवार को जिला नियोजनालय सह मॉडल कैरियर सेंटर, सरायकेला-खरसावां के सौजन्य से राजकीय महिला पॉलिटेक्निक, गम्हरिया में एवं 23 मई 2025 को जिला नियोजनालय के परिसर में रोजगार शिविर का आयोजन किया गया।

इस संबंध में जिला नियोजन पदाधिकारी आलोक कुमार टोपनो ने बताया कि रोजगार शिविर में रामकृष्ण फोर्जिंगस लिमिटेड, फ्यूजन फाइनेंस लिमिटेड, टैलेंटनेक्सा प्राइवेट लिमिटेड एवं युवा शक्ति फाउंडेशन के अधिकारियों द्वारा साक्षात्कार के माध्यम से रिलेशनशिप ऑफिसर, ट्रेनी, वेल्डर, मशीन ऑपरेटर, प्रोडक्शन असिस्टेंट व डाटा एंट्री ऑपरेटर सहित विभिन्न पदों नियुक्ति हेतु कुल 64 अभ्यर्थियों को शॉर्टलिस्ट किया गया।

एक देश, एक चुनाव पर बिष्टुपुर तुलसी भवन में प्रकाश डालेंगे रघुवर दास

खबर मन्त्र ब्यूरो

जमशेदपुर। बिष्टुपुर स्थित तुलसी भवन सभागार में शनिवार को 'एक देश, एक चुनाव' विषय पर महत्वपूर्ण संगोष्ठी की जायेगी। जमशेदपुर के सांसद विद्युत वरण महतो के नेतृत्व में आयोजित होने वाले इस संगोष्ठी की शुरुआत संध्या 4:30 बजे से होगी। संगोष्ठी में झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री और भाजपा के वरिष्ठ नेता रघुवर दास बतौर मुख्य अतिथि शामिल होंगे। शुक्रवार को सांसद विद्युत वरण महतो की ओर से जारी प्रेस विज्ञप्ति में इस आशय की जानकारी दी गई। सांसद विद्युत महतो ने बताया कि इस संगोष्ठी का उद्देश्य 'एक देश, एक चुनाव' की अवधारणा पर व्यापक विचार-विमर्श करना और इसके महत्व, चुनौतियों और संभावनाओं पर व्यापक चर्चा करना है। इस आयोजन में शामिल होने हेतु शहर के सभी सामाजिक संगठन, गैर-सरकारी संगठन (एनजीओ), अधिवक्ता संघ, विभिन्न व्यवसायी संघ और प्रबुद्धजनों को आमंत्रित किया गया है।

अंतर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस: टाटा स्टील फाउंडेशन ने किया सॉन्ग्स ऑफ द फॉरेस्ट नामक अनोखी पुस्तक का विमोचन

खबर मन्त्र ब्यूरो

सुकिंदा, जाजपुर (ओडिशा)। अंतर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस के अवसर पर टाटा स्टील फाउंडेशन (टीएसएफ) ने अपनी नवीनतम प्रकाशन सॉन्ग्स ऑफ द फॉरेस्ट का विमोचन किया। यह अनोखी पुस्तक देश की आदिवासी समुदायों से जुड़े समृद्ध जैव विविधता संबंधी लोककथाओं और पारंपरिक ज्ञान को संजोने और संरक्षित करने का कार्य करती है। इस पुस्तक का विमोचन गुरुवार को टाटा स्टील के

विमोचन समारोह को संबोधित करते फेरो एलॉयज एंड मिनरल डिवीजन के एग्जूक्टिव इंचार्ज पंकज सतीजा।

सुकिंदा क्रोमाइट माइंस परिसर में आयोजित एक भव्य समारोह में किया गया।

यह अनूठी पहल आदिवासी समुदायों की मौखिक परंपराओं, लोककथाओं और सांस्कृतिक कहानियों को संकलित कर उन्हें भविष्य के लिए संरक्षित रखने का एक सार्थक प्रयास है। इन्हीं दुर्लभ और समृद्ध विरासतों को बचाने की तात्कालिक आवश्यकता को समझते हुए टाटा स्टील फाउंडेशन ने एक व्यापक जनसंपर्क अभियान की शुरूआत की। इस अभियान के तहत संस्था ने अपने कार्यक्षेत्रों के विभिन्न क्षेत्रों में आदिवासी समुदायों के बुजुर्गों, लोककथाकारों और ज्ञान संरक्षकों से संवाद स्थापित कर इन अमूल्य कहानियों को एकत्रित किया। पुस्तक का अनावरण करते हुए टाटा स्टील के फेरो एलॉयज एंड मिनरल्स डिवीजन के एक्जीक्यूटिव इंचार्ज पंकज सतीजा ने कहा, यह पुस्तक केवल कहानियों का संग्रह नहीं है—यह हमारी साझा विरासत, पारंपरिक ज्ञान और प्रकृति के प्रति आदिवासी समुदायों की गहन समझ को संजोने का प्रयास है। यह हमें उस दृष्टिकोण से परिचित कराती है, जहां मानव स्वयं को प्रकृति का स्वामी नहीं, बल्कि उसका सहयात्री मानता है।

आइपीएल 2025 : सनराइजर्स हैदराबाद ने आरसीबी को 42 रनों से हराया, सॉल्ट और कोहली की कोशिश गई बेकार

आरसीबी के टॉप-2 में फिनिश करने की उम्मीदों को झटका

एजेंसी

लखनऊ। आइपीएल 2025 में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु को सनराइजर्स हैदराबाद से हार मिली है। पैट कमिंस की टीम 42 रनों से जीती। आरसीबी प्लेऑफ में जगह बना चुकी है। हालांकि टेबल में टॉप-2 पर अपना स्थान पक्का करने के लिए अपने बाकी बचे दोनों मैच जीतने थे। अब आरसीबी को दूसरी टीमों के नतीजों पर निर्भर रहना पड़ेगा। पहले खेलते हुए हैदराबाद ने 231 रन बनाए। जवाब में आरसीबी का स्कोर 14 ओवर के बाद 3 विकेट पर 163 रन था। इसके बाद भी टीम आखिरी ओवर में 189 रनों पर ऑलआउट हो गई। विकेटकीपर बल्लेबाज ईशान किशन की नाबाद 94 रनों की पारी खेली। उन्होंने 48 गेंद की अपनी नाबाद पारी में सात चौके और पांच छक्के जड़े। अभिषेक शर्मा (17 गेंद में 34), हेनरिच क्लासेन (13 गेंद में 24), अनिकेत वर्मा (नौ गेंद में 26 रन) और ट्रेविस हेड (10 गेंद में 17 रन) ने आक्रामक बल्लेबाजी से आरसीबी के गेंदबाजों पर दबाव बनाये रखा। रोमारियो शेफर्ड ने दो ओवर में 14 रन देकर दो विकेट लिये जबकि भुवनेश्वर कुमार, लुंगी एनगिडी, सुयश शर्मा और क्रुणाल पंड्या को एक-एक सफलता मिली। पहले बल्लेबाजी का न्योता मिलने पर हेड ने यश दयाल के खिलाफ चौके से अपना खाता खोला तो वहीं अभिषेक ने भुवनेश्वर और दयाल का स्वागत चौके से किया तो वहीं अभिषेक ने एक्स्ट्रा कवर के ऊपर से छक्का लगाकर 3.3 ओवर में टीम का पचासा पूरा किया। वह हालांकि ओवर की आखिरी गेंद पर फिल सॉल्ट को कैच देकर पवेलियन लौटे। भुवनेश्वर ने अगले ओवर में हेड की पारी पर विश्राम लगाकर आरसीबी को बड़ी सफलता दिलायी। क्रीज पर आये क्लासेन ने सातवें ओवर में सुयश के खिलाफ चौका और छक्का लगाकर टीम की रन गति को बनाये रखा। सुयश के अगले ओवर में किशन के दो चौके के बाद क्लासेन ने भी गेंद को सीमा रेखा के पार भेजकर नौवें ओवर में टीम के रनों का शतक पूरा किया। इस लेग स्पिनर ने दक्षिण अफ्रीका के आक्रमक विकेटकीपर बल्लेबाज को लांग ऑन पर शेफर्ड के हाथों कैच करा कर पवेलियन भेजा। अनिकेत वर्मा ने बेहद आक्रामक तेवर दिखाते हुए नौ गेंद की अपनी पारी में तीन छक्के और एक चौका लगाया लेकिन वह क्रुणाल पंड्या का पहला शिकार बन गये। किशन ने 14 ओवर में अपना अर्धशतक पूरा किया। दूसरे छोर से शेफर्ड ने धीमी गेंद पर नीतीश कुमार रेड्डी (चार) और शॉट गेंद पर अभिनव मनोहर (12) को आउट कर एसआरएच को झटके देना जारी रखा।

फिर 23 तारीख को ईशान का बल्ला बोला

ईशान किशन ने 23 मार्च को राजस्थान के खिलाफ शतक लगाया था। अब 23 मई को जाकर उनके बल्ले से रन निकले हैं। रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के खिलाफ लखनऊ के इकाना स्टेडियम में ईशान किशन ने 94 रनों की नाबाद पारी खेली। वह शतक सेचूक गए लेकिन इसके बाद भी अपनी टीम को मजबूत स्थिति में पहुंचा दिया। 48 गेंदों पर ईशान ने नाबाद 94 रन बनाए। अपनी इस पारी में उन्होंने 7 चौके और 5 छक्के मारे।

सनराइजर्स 231/6 (20 ओवर)

खिलाड़ी	रन	गेंद	चौका	छक्का
अभिषेक कै. साल्ट बो. एनगिडी	34	17	03	03
हेड कै. शेफर्ड बो. भुवनेश्वर	17	10	03	00
ईशान किशन नाबाद	94	48	07	05
क्लासेन कै. शेफर्ड बो. सुयश	24	13	02	02
अनिकेत कै. कुमार बो. क्रुणाल	26	09	01	03
रेड्डी कै. क्रुणाल बो. शेफर्ड	04	07	00	00
मनोहर कै. साल्ट बो. शेफर्ड	12	11	00	01
पैट कमिंस नाबाद	13	06	00	01

अतिरिक्त : 07

विकेट पतन : 1-54, 2-54, 3-102, 4-145, 5-164, 6-188.

गेंदबाज : यश दयाल : 3-0-36-0, भुवनेश्वर कुमार : 4-0-43-1, लुंगी एनगिडी : 4-0-51-1, सुयश शर्मा : 3-0-45-1, क्रुणाल पंड्या : 4-0-38-1, रोमारियो शेफर्ड : 2-0-14-2.

बेंगलुरु 189/10 (19.5 ओवर)

खिलाड़ी	रन	गेंद	चौका	छक्का
साल्ट कै. पटेल बो. कमिंस	62	32	04	05
कोहली कै. शर्मा बो. हर्ष	43	25	07	01
मयंक कै. किशन बो. रेड्डी	11	10	01	00
रजत पाटीदार रन आउट	18	16	01	00
जितेश कै. मनोहर बो. उनादकट	24	15	01	02
शेफर्ड कॉट एंड बो. ईशान मलिंगा	00	01	00	00
क्रुणाल हिट विकेट बो. कमिंस	08	06	02	00
डेविड कै. क्लासेन बो. मलिंगा	01	05	00	00
भुवनेश्वर कुमार बो. कमिंस	03	02	00	00
दयाल कै. वर्मा बो. हर्षल	03	06	00	00
लुंगी एनगिडी नाबाद	00	02	00	00

अतिरिक्त : 16

विकेट पतन : 1-80, 2-120, 3-129, 4-173, 5-174, 6-174, 7-179, 8-186, 9-187, 10-189.

गेंदबाज : पैट कमिंस : 4-0-28-3, जयदेव उनादकट : 4-0-41-1, हर्षल पटेल : 3.5-0-39-1, ईशान मलिंगा : 4-0-37-2, हर्ष दुबे : 2-0-20-1, नीतीश कुमार रेड्डी : 2-0-13-1.

आइपीएल 2025 पॉइंट्स टेबल

टीम	मैच	जीत	हार	रद्द	अंक	रन रेट
गुजरात	13	09	04	00	18	+0.602
पंजाब	12	08	03	01	17	+0.389
बेंगलुरु	13	08	04	01	17	+0.255
मुंबई	13	08	05	00	16	+1.292
दिल्ली	13	06	06	01	13	-0.019
लखनऊ	13	06	07	02	12	-0.337
कोलकाता	13	05	06	02	12	+0.193
हैदराबाद	13	05	07	01	11	-0.737
राजस्थान	14	04	10	00	08	-0.549
चेन्नई	13	03	10	00	06	-1.030

पर्पल कैप
21 विकेट
प्रसिद्ध कृष्णा
गुजरात

ऑरेंज कैप
638 रन
साई सुदर्शन
गुजरात

दिल्ली को हरा टेबल टॉप करना चाहेगा पंजाब

जयपुर। लंबे इंतजार के बाद इंडियन प्रीमियर लीग 2025 के प्लेऑफ में प्रवेश कर चुकी पंजाब किंग्स की नजर अब शीर्ष दो में जगह बनाने पर है। फिलहाल अंक तालिका में तीसरे स्थान पर काबिज पंजाब की कोशिश रहेगी कि वह अपने अगले दो मुकाबले जीतकर क्वालिफायर-1 में स्थान सुनिश्चित करे, जिससे सीधे फाइनल में पहुंचने का अवसर प्राप्त हो सके। श्रेयस अय्यर की कप्तानी वाली पंजाब किंग्स टीम का अगला मुकाबला शनिवार को जयपुर के सवाई मानसिंह स्टेडियम में दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ होगा। दिल्ली की टीम पहले ही प्लेऑफ की दौड़ से बाहर हो चुकी है और अपने निराशाजनक सीजन का अंत एक अच्छी जीत के साथ करना चाहेगी।

डेथ ओवर में अकेले लोहा लिया

सनराइजर्स हैदराबाद ने इस मुकाबले में विस्फोटक शुरूआत की। लेकिन मध्यक्रम में कोई भी बल्लेबाज बड़ी पारी नहीं खेल पाया। अनिकेत वर्मा के आउट होने के बाद उतरे नीतीश कुमार रेड्डी ने 7 गेंद पर 4 रन बनाए। अभिनव मनोहर के बल्ले से 11 गेंद पर 12 रन निकले। लेकिन ईशान किशन एक छोर से लगातार रन बना रहे थे। उनकी वजह से ही हैदराबाद की टीम 200 रनों के पार पहुंच पाई। अंत में पैट कमिंस ने 6 गेंद पर नाबाद 13 रनों का योगदान दिया।

विराट-रोहित की अनुपस्थिति कठिन होगी : गंभीर

एजेंसी

नयी दिल्ली। भारतीय टीम के मुख्य कोच गौतम गंभीर ने इस बात की स्वीकार किया है कि विराट कोहली और रोहित शर्मा की अनुपस्थिति टीम के लिए चुनौतीपूर्ण होगी, लेकिन इन दोनों खिलाड़ियों के टेस्ट से संन्यास ने अन्य लोगों के लिए दरवाजे खोल दिए हैं। कोहली और रोहित ने इस महीने एक सप्ताह के अंत लाल गेंद के प्रारूप को अलविदा कह दिया था। इन दोनों ने उस वक्त यह फैसला लिया जब भारत को अगले महीने पांच मैचों की टेस्ट सीरीज के लिए इंग्लैंड का दौरा करना है। माना जा रहा है कि इंग्लैंड दौरे के लिए शनिवार को मुंबई में टीम की घोषणा की जाएगी। गंभीर ने कहा, मुझे लगता है कि आपको कब करियर शुरू करना है और कब इसे समाप्त करना है, यह किसी का भी व्यक्तिगत फैसला है। इसमें दखल देने का किसी का भी अधिकार नहीं है, चाहे वो कोच हो या चयनकर्ता या देश में किसी को भी किसी खिलाड़ी से यह कहने का अधिकार नहीं है उसे कब संन्यास लेना है और नहीं लेना है।

अन्य लोगों को मिलेंगे मौके

रोहित के संन्यास लेने से अब भारत को नये टेस्ट कप्तान की तलाश है। साथ ही टीम में दो अनुभवी बल्लेबाज नहीं होंगे और गंभीर ने इस बात को भी स्वीकार किया है कि इस कमी को पूरा करना आसान नहीं होगा। गंभीर ने कहा, हां, हम दो ऐसे सीनियर खिलाड़ियों के बिना उतरेंगे जिन्हें काफी अनुभव है और कई बार मुझे लगता है कि यह अन्य लोगों के लिए अवसर है जो जिम्मेदारी लेना चाहते हैं। हां, यह दौरा कठिन होगा, लेकिन कई लोग हैं जो जिम्मेदारी उठा सकते हैं। ऐसा ही सवाल मुझसे चैंपियंस ट्रॉफी से पहले भी पूछा गया था। गंभीर ने कहा, जब बुमराह चैंपियंस ट्रॉफी में नहीं थे और तब भी मैंने यही चीज कही थी कि किसी खिलाड़ी के बाहर होने से अन्य खिलाड़ी के लिए अवसर खुल सकते हैं जो अपने देश के लिए विशेष करना चाहता है। उम्मीद है कि कई अन्य खिलाड़ी भी होंगे जो अवसर मिलने का इंतजार कर रहे हैं। कोहली और रोहित ने टेस्ट और टी20 अंतरराष्ट्रीय से संन्यास ले लिया है, लेकिन वे भारत के लिए वनडे में खेलते रहेंगे। यह पूछे जाने पर कि क्या रोहित और कोहली 2027 वनडे विश्व कप के लिए टीम में जगह बना पाएंगे? इस पर कोच ने कहा, देखिए इसमें अभी काफी समय है। वनडे विश्व कप से पहले हमारे सामने टी20 विश्व कप की चुनौती है और यह एक बड़ा टूर्नामेंट होगा जिसे भारत में फरवरी-मार्च में होना है। फिलहाल हमारा सारा ध्यान इसी पर है और इंग्लैंड दौरे के बाद टी20 विश्व कप पर ध्यान रहेगा। नवंबर-दिसंबर 2027 में अभी भी ढाई साल देरी है। सबसे अहम बात यह है कि मैंने हमेशा कहा है कि अगर आप प्रदर्शन कर रहे हैं, तो उम्र महज एक नंबर है।

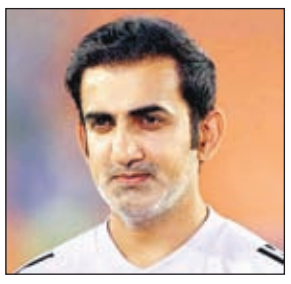

पटना के खिलाड़ियों के लिए बड़ी सौगात

पटना। राजधानी पटना के खिलाड़ियों को जल्द ही एक शानदार तोहफा मिलने जा रहा है। गर्दनीबाग में राष्ट्रीय स्तर का अत्याधुनिक स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स तैयार किया जा रहा है। 28.66 करोड़ की लागत से बन रहे इस परियोजना को बिहार सरकार की कैबिनेट से प्रशासनिक स्वीकृति मिल चुकी है। भवन निर्माण विभाग द्वारा प्रस्तावित यह स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स करीब 10 एकड़ भूमि में बनाया जाएगा, जिसका कुल क्षेत्रफल 1200 वर्गमीटर होगा। यह कॉम्प्लेक्स 40,000 दर्शकों के बैठने की क्षमता वाला होगा। खेल प्रेमियों और खिलाड़ियों के लिए बनाये जा रहे इस कॉम्प्लेक्स में 10 क्रिकेट पिच विकसित किए जाएंगे।

इंग्लैंड ने 565 के स्कोर पर पारी घोषित की

नॉटिंघम। जैक क्रॉली (124), बेन डकेट (140) और ऑली पोप (171) रनों की शानदार शतकीय और हैरी ब्रूक (58) की अर्धशतकीय पारियों के दम पर इंगलैंड ने एकमात्र टेस्ट मैच के दूसरे दिन जिम्बाब्वे के खिलाफ छह विकेट पर 565 रन बनाने के बाद पारी घोषित कर दी। ट्रेंट ब्रिज स्टेडियम में शुक्रवार को गुरुवार के तीन विकेट पर 498 रन के स्कोर से आगे खेलना शुरू किया। अभी टीम के स्कोर में चार रन का इजाफा हुआ था कि टनका चिवंगा ने ऑली पोप को आउटकर जिम्बाब्वे को दिन की पहली सफलता दिलाई। ऑली पोप ने 166 गेंदों में 24 चौके और दो छक्के लगाते हुए (171) रनों की पारी खेली। इसके बाद बल्लेबाजी करने आये कप्तान बेन स्टोक्स (नौ) और उसके बाद हैरी ब्रूक (58) रन बनाकर आउट हुये। इन दोनों ही बल्लेबाजों को मुजारबानी ने आउट किया।

एंजेलो मैथ्यूज जून में टेस्ट क्रिकेट से लेंगे संन्यास

कोलंबो। श्रीलंका के पूर्व कप्तान और ऑलराउंडर एंजेलो मैथ्यूज जून में बांग्लादेश के खिलाफ पहले टेस्ट मैच के बाद टेस्ट क्रिकेट से संन्यास ले लेंगे। एंजेलो मैथ्यूज ने शुक्रवार को अपने सोशल मीडिया मंच पर अपने संन्यास की घोषणा करते हुए कहा कि वह सीमित ओवरों की क्रिकेट के लिए जब भी देश को जरुरत होगी वह उपलब्ध रहेंगे। गॉल में होने वाला यह आगामी टेस्ट उनके टेस्ट करियर का 119वां और अंतिम मुकाबला होगा।

हरियाणा ने कबड्डी में दोनों वर्गों में जीते स्वर्ण पदक

दीव। खेलो इंडिया बीच गेम्स 2025 शुक्रवार को खेले गए कबड्डी फाइनल मुकाबलों हरियाण की महिला और पुरुष वर्ग की टीमों ने स्वर्ण पदक जीते। शुक्रवार के सुबह घोघला बीच पर खेले पुरुष वर्ग के फाइनल में हरियाणा के कप्तान मोनू हुड्डा की अगुवाई में टीम ने राजस्थान पर पूरी तरह से दबदबा बनाते हुए 48-29 से एकतरफा जीत दर्ज की। इस हार के साथ राजस्थान को रजत पदक से संतोष करना पड़ा। महाराष्ट्र को दोनों वर्गों में कांस्य पदक मिला।

डब्ल्यूटीसी के लिए अंपायरों का ऐलान

दुबई। आइसीसी ने 11 से 15 जून तक लॉर्ड्स में खेली जाने वाली विश्व टेस्ट चैंपियनशिप के लिए न्यूजीलैंड के क्रिस गैफनी और इंग्लैंड के रिचर्ड इलिंगवर्थ को शुक्रवार को मैदानी अंपायर नियुक्त किया है। दक्षिण अफ्रीका और आस्ट्रेलिया के बीच डब्ल्यूटीसी के फाइनल का मुकाबला खेला जायेगा।

कार्लसन बने चेसकॉम क्लासिक शतरंज के विजेता

ओस्लो, नॉर्वे। विश्व के नंबर एक खिलाड़ी मैगनस कार्लसन नें नॉर्वे शतरंज क्लासिक शुरू होने के दो दिन पहले ही एक बारा फिर अपनी श्रेष्ठता से दुनिया को परिचय कराया है कार्लसन नें इस बार ऑनलाइन शतरंज में एक बार फिर खुद को सर्वश्रेष्ठ साबित करते हुए चैंपियन चैस टूर के ग्रांड फाइनल में फ्रांस के मकसीम लागरेव को एकतरफा मुकाबले में 2.5-0.5 से पराजित करते हुए चेसकॉम क्लासिक शतरंज का खिताब अपने नाम कर लिया। इससे पहले कार्लसन नें एक रोमांचक मुकाबले में यूएसए के हिकारु नाकामुरा को 3-1 से मात देते हुए ग्रांड फाइनल में जगह बनाई थी। प्ले ऑफ के दौरान कार्लसन नें पोलैंड के यान डूड़ा को 2.5-1.5 से और उज्बेक्सितान के अब्दुसत्तारोव नोदिरबेक को 3-1 से पराजित किया था।

न्यूजीलैंड की हेले ने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से लिया संन्यास

वेलिंगटन। न्यूजीलैंड की ऑलराउंडर हेले जेनसन ने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास की घोषणा की है। इसके साथ ही उनके 11 साल के करियर पर विराम लग गया है। जेनसन ने 2014 में वेस्टइंडीज के खिलाफ व्हाइट बॉल फॉर्मेट में व्हाइट फर्न्स के लिए डेब्यू किया था। 2018 आइसीसी टी20 विश्व कप के लिए चयन के बाद वह टीम का नियमित हिस्सा बन गयी। उन्होंने 35 वनडे और 53 टी20 अंतरराष्ट्रीय मैचों में 88 मौकों पर न्यूजीलैंड का प्रतिनिधित्व किया। इस दौरान उन्होंने 1,988 रन बनाए और 76 विकेट लिए। जेनसन ने कहा कि उन्हें लगा कि अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से दूर जाने का सही समय आ गया है।

दीप्ति शर्मा ने अपने ही साथी खिलाड़ी पर लाखों की चोरी का लगाया आरोप

एजेंसी

नयी दिल्ली। भारतीय महिला क्रिकेट टीम की स्टार ऑलराउंडर दीप्ति शर्मा ने दिल्ली और यूपी वॉरियर्स की बल्लेबाज आरुषि गोयल पर ठगी का आरोप लगाया है। दीप्ति ने दावा किया है कि आरुषि ने उनसे 25 लाख से ज्यादा की ठगी की और आगरा में उनके फ़्लैट में घुसकर कीमती सामान की चोरी की है। उन्होंने बताया की जो समान चुराए गए हैं उसमें सोने और चांदी के गहने और 2 लाख की विदेशी करेंसी शामिल है। भारतीय महिला क्रिकेटर दीप्ति शर्मा ने जूनियर खिलाड़ी आरुषि गोयल और उनके परिवार पर 25 लाख रुपये की धोखाधड़ी का मामला दर्ज किया है। दीप्ति के भाई ने उनके फ्लैट से कीमती सामान गायब होने के बाद एफआईआर दर्ज कराई है। डीसीपी सोनम कुमार ने बताया कि जांच जारी है। एफआइआर में कहा गया है कि दोनों क्रिकेटर एक ही टीम में साथ रहने के कारण एक-दूसरे के करीब आ गईं। फिर आरुषि और उसके माता-पिता ने पारिवारिक स्थिति और हवाला देते हुए दीप्ति का आर्थिक शोषण करना शुरू कर दिया। दीप्ति के भाई सुमित ने बताया कि उनकी बहन ने दो साल में 25 लाख रुपये से अधिक गंवा दिए। जब उसने आरुषि से इस बारे में पूछा, तो उसने पैसे लौटाने से साफ इनकार कर दिया।

श्रीकांत मलयेशिया मास्टर्स के सेमीफाइनल में

एजेंसी

कुआलालंपुर। भारत के अनुभवी बैडमिंटन खिलाड़ी किदांबी श्रीकांत का शानदार प्रदर्शन जारी है और उन्होंने मलयेशिया मास्टर्स में पुरुष एकल वर्ग के सेमीफाइनल में प्रवेश कर लिया है। श्रीकांत ने अपने से ऊंची रैंकिंग के फ्रांस के टोमा जूनियर पोपोव पर तीन गेम में जीत दर्ज कर अंतिम चार का टिकट कटाया। 65वीं रैंकिंग पर काबिज श्रीकांत ने क्वार्टर फाइनल में दुनिया के 18वें नंबर के पोपोव को कड़ी टक्कर देते हुए एक घंटे 14 मिनट में 24-22, 17-21, 22-20 से शिकस्त दी।

टनाका से होगा सामना

श्रीकांत का सामना अब सेमीफाइनल में जापान के युशी टनाका से होगा। पूर्व नंबर एक खिलाड़ी श्रीकांत एक साल में पहली बार किसी टूर्नामेंट के सेमीफाइनल पहुंचे हैं। श्रीकांत विश्व चैंपियनशिप और एशियाई खेलों के रजत पदक विजेता हैं और अब उनके सामने टनाका की कड़ी चुनौती होगी। टनाका ने पुरुष एकल क्वार्टर फाइनल में टोमा जूनियर के भाई क्रिस्टो पोपोव को 21-18, 16-21, 21-6 से पराजित किया था।

कपिला-क्रास्टो को मिली हार

पुरुष एकल का दूसरा सेमीफाइनल जापान के चौथे वरीय कोडाई नारोका और चीन के दूसरे वरीय लि शि फेंग के बीच खेला जाएगा। ध्रुव कपिला और तनीषा क्रास्टो की मिश्रित युगल जोड़ी शुक्रवार को क्वार्टर फाइनल में हारकर बाहर हो गई जिससे श्रीकांत बीडब्ल्यूएफ विश्व टूर सुपर 500 टूर्नामेंट में एकमात्र भारतीय बचे हैं। कपिला और क्रास्टो ने चीन के शीर्ष वरीय जियांग झेन बांग और वेई या जिन की जोड़ी को पहले गेम में कड़ी चुनौती पेश की लेकिन लय गंवा बैठे और 35 मिनट तक चले मुकाबले में 22-24, 13-21 से हारकर बाहर हो गए।

गार्सिया फ्रेंच ओपन के बाद टेनिस को कहेंगी अलविदा

एजेंसी

नयी दिल्ली। पूर्व वर्ल्ड नंबर-4 और फ्रेंच ओपन डबल्स चैंपियन कैरोलिन गार्सिया ने टेनिस से संन्यास लेने का ऐलान कर दिया है। 31 वर्षीय फ्रेंच स्टार ने सोशल मीडिया के जरिए जानकारी दी कि इस सप्ताह शुरू हो रहे फ्रेंच ओपन 2025 उनके करियर का आखिरी रोलां गैरो टूर्नामेंट होगा। गार्सिया ने एक्स पर लिखा, डियर टेनिस, अब अलविदा कहने का समय आ गया है। 15 साल तक शीर्ष स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने और 25 साल से अधिक वक्त इस खेल को देने के बाद मैं अब एक नये अध्याय के लिए तैयार हूं। गार्सिया के नाम डब्ल्यूटीए टूर पर 11 सिंगल्स खिताब हैं। उन्होंने 2022 में सीजन एंडिंग डब्ल्यूटीए फाइनल्स का खिताब भी अपने नाम किया था, जिसे ग्रैंड स्लैम्स के बाद सबसे प्रतिष्ठित माना जाता है। उसी साल उन्होंने अपनी हमवतन क्रिस्टिना म्लादेनोविक के साथ मिलकर दूसरी बार फ्रेंच ओपन डबल्स का खिताब भी जीता था। उनका ग्रैंड स्लैम में सर्वश्रेष्ठ सिंगल्स प्रदर्शन 2022 यूएस ओपन में आया था, जब वे सेमीफाइनल तक पहुंचीं। करियर में एक समय उन्होंने विश्व रैंकिंग में चौथा स्थान हासिल किया था, हालांकि फिलहाल वह 145वें स्थान पर हैं। गार्सिया ने लिखा, मेरा टेनिस सफर हमेशा आसान नहीं रहा। यह सिर्फ जीत या हार नहीं रहा, बल्कि इसमें प्यार और नफरत, खुशी और गुस्से का भी दौर रहा। अब मेरा शरीर और मेरे निजी लक्ष्य कुछ और मांग रहे हैं। गार्सिया ने करियर में अब तक करीब 1.9 करोड़ डॉलर (लगभग 158 करोड़ रुपये) की प्राइज मनी अर्जित की है। अब जब वह अपने करियर को अलविदा कहने की ओर बढ़ रही हैं, उनके प्रशंसक इस फ्रेंच ओपन में उन्हें आखिरी बार अपने होम ग्रैंड स्लैम में खेलते हुए देख सकेंगे।

पहला हॉकी इंडिया मास्टर्स कप 18 जून से चेन्नई में

एजेंसी

नयी दिल्ली। पूर्व खिलाड़ियों के लिये पहला हॉकी इंडिया मास्टर्स कप 2025 18 से 27 जून तक चेन्नई में खेला जाएगा। हॉकी इंडिया ने शुक्रवार को आयोजन स्थल और तारीखों की घोषणा की। इस टूर्नामेंट में पुरूष और महिला खिलाड़ी भाग लेंगे। हॉकी इंडिया ने एक बयान में कहा कि लीग के नियमों के तहत पुरूष वर्ग में 40 या उससे अधिक उम्र के खिलाड़ी भाग ले सकेंगे जबकि महिला वर्ग में यह सीमा 35 वर्ष है। दोनों श्रेणियों में टीमों की घोषणा जल्दी की जाएगी। इसमें भाग लेने के लिये खिलाड़ियों को अपनी प्रदेश ईकाइयों के पास पंजीयन कराना होगा। टूर्नामेंट लीग सह नॉकआउट आधार पर खेला जायेगा। भारतीय महिला टीम की पूर्व कप्तान असुंथा लाकड़ा ने इस बारे में कहा, पहले हॉकी इंडिया मास्टर्स कप का हिस्सा होना मेरे लिये भावनात्मक और रोमांचक पल है। हॉकी ने ही मुझे बनाया है और अब मुझे अपने साथ खेल चुके खिलाड़ियों के साथ फिर खेलने का मौका मिलेगा जो खास है।

सर्फिंग चैंपियनशिप 30 मई से

राष्ट्रीय सर्फिंग चैंपियनशिप सीरिज का दूसरा चरण इंडियन ओपन सर्फिंग का छठा सत्र 30 मई से एक जून तक खेला जाएगा। भारतीय सर्फिंग महासंघ ने कहा कि इसका आयोजन सर्फिंग स्वामी फाउंडेशन और मंत्रा सर्फ क्लब करेगा। तीन दिवसीय स्पर्धा में भारत के शीर्ष रैंकिंग वाले सर्फर चार वर्गों पुरुष ओपन, महिला ओपन, अंडर 16 लड़के और अंडर 16 लड़कियों के वर्ग के मुकाबले होंगे। भारतीय सर्फिंग महासंघ के अध्यक्ष अरूण वासु ने कहा, 2024 में हमारे सर्फर ने पहली बार एशियाई खेलों के लिए क्वालिफाई करके इतिहास रचा था जो देश में इस खेल के विकास के लिए मील का पत्थर साबित हुआ।

सीसीएल कथारा जीएम कार्यालय के समक्ष स्वांग स्लैरी मजदूरों का जोरदार प्रदर्शन

खबर मन्त्र संवाददाता

कथारा। कार्य से बैठाएं जाने के बाद न्यायालय के आदेशानुसार नियोजन नहीं दिए जाने को लेकर शुक्रवार को स्वांग स्लैरी मजदूर ने सीसीएल कथारा महाप्रबंधक कार्यालय पर रोषपूर्ण प्रदर्शन किया। प्रदर्शन में कई ऐसे मजदूर भी थे जो अपनी उम्र सीमा पूरी करने के बाद नियोजन से लेकर वंचित रह गए। आज खास बात यह देखा गया कि यह प्रदर्शन में ना कोई जनप्रतिनिधि और ना कोई ट्रेड यूनियन के नेता मजदूरों का प्रतिनिधित्व करते नजर आए। बताया जाता है कि दर्जनों आवार्डी मजदूर सुबह लगभग 11:00 बजे कथारा महाप्रबंधक कार्यालय पहुंचे तथा स्थाई नियोजन देने की मांग करते हुए प्रबंधक विरोधी नारा लगाएं। वही मजदूरों ने अपनी अपनी मांगों से संबंधित ज्ञापन क्षेत्रीय प्रबंधक को सौंपा और कहा कि अगर हमारी मांग को प्रबंधन द्वारा अनदेखी किया गया तो हम सभी बाध्य होकर 27 मई 2025 को कथारा मुख्य महाप्रबंधक कार्यालय के समक्ष भूख हड़ताल में बैठने को। जिसकी सारी जवाबदेही प्रबंधन की होगी और यदि भूख हड़ताल में किसी प्रकार का अप्रिय घटना किसी मजदूर के साथ होगी तो इसकी सारी जवाबदेही आप प्रबंधन की होगी। मौके पर आवॉर्डी मजदूर छोटू मांझी, बाबूराम, लेलो रविदास, नीलकंठ, सीताराम, राधेश्याम, गणेशाराम, भरत राम, बुटकी बाई, ज्योति बाई, सूक्त बाई, जाकिर अंसारी, हितेन भाई, दुर्योधन धोबी व दर्जनों मजदूर उपस्थित थे।

बोकारो : धर्म महासम्मेलन पर आयोजित अखंड हरि कीर्तन में श्रद्धालु हुए भाव विभोर

खबर मन्त्र संवाददाता

बोकारो। तीन दिवसीय धर्म महासम्मेलन के अवसर पर आनंद नगर आध्यात्मिक केन्द्र में आयोजित अखंड हरि कीर्तन के विषय में सेवा धर्म मिशन के विश्व स्तरीय सचिव आचार्य मंत्रजपानंद अवधूत ने कहा कि ईश्वर की प्राप्ति के सुगम साधन कीर्तन है। कीर्तन-भक्ति और ध्यान का अद्वितीय माध्यम है जिसके माध्यम से एक व्यक्ति ईश्वर के साथ गहरा संवाद स्थापित कर सकता है।

उन्होंने बताया कि कीर्तन की शक्ति व्यक्ति को अविरल ध्यान व स्थिरता और आनंद की अनुभूति देती है। यह एक अद्वितीय विधि है जो हमें मन- शरीर और आत्मा के संगम के अनुभव को आदर्श दशार्ती है। कीर्तन से हम अपने मन को संयमित कर सकते हैं और इंद्रियों के विषयों के प्रति वैराग्य की प्राप्ति कर सकते हैं। यह हमें अविरल स्थिति में रहने की क्षमता प्रदान करता है और हमारे जीवन को धार्मिक और आध्यात्मिक महत्वपूर्णता के साथ भर देता है। कीर्तन एक विशेष तरीका है जिसके माध्यम से हम समस्त जगत के साथ सामरस्य और सामंजस्य का अनुभव कर सकते हैं। यह हमें एक साथी बनाता है जो हमें ईश्वर के साथ अनन्य रूप से जोड़ता है और हमें सबके प्रति प्रेम और सेवा की भावना से प्रेरित करता है। इस प्रकार कीर्तन हमें अद्वैत संबंध अनुभूति दिलाता है जहां हम सभी में ईश्वर की दिव्य आत्मा की पहचान करते हैं। उक्त आशय की जानकारी संघ की ओर से आचार्य रमेन्द्रानंद अवधूत ने दी।

एक नजर में

बेरमो : हिन्द मजदूर किसान यूनियन ने नये एसओपी का किया स्वागत

बेरमो। सीसीएल महाप्रबंधक कार्यालय में नये एसओपी माधुरी मटकके के पद ग्रहण करते ही स्वागत करने वालो की श्रृंखला शुरू हो गई है। इसी क्रम में आज हिन्द मजदूर किसान यूनियन के वरीय नेता मो शमशुल हक के नेतृत्व में युनियन से जुड़े दर्जनों नेता व कार्यकर्ता कथारा जीएम आफिस पहुच कर नये एसओपी माधुरी को गुलदस्ता देकर स्वागत किया तथा औपचारिक मुलाकात और क्षेत्र की समस्याओं पर चर्चा हुई। इस मौके पर उपरोक्त युनियन के हक के अलावे मो सज्जाद, एम पुनित, मुनजल कुमारी, सब्बा मकदुम, मदन लाल घांसी, अमीत टोप्पो, विक्रम कुमार, लवली बाई, पार्वती देवी, तुलिया देवी, सुमन देवी आदि दर्जनों लोग शामिल थे।

दिल्ली और पटना से आई युवतियों ने रक्तदान कर दिया मानवता का संदेश : ब्लडमैन सलूजा

फुसरो। फुसरो के अवध बैंक्ट हॉल में स्वं ऋषिकेश नारायण सिंह की पांचवीं पुण्यतिथि के अवसर पर शिवम शिल्प कला केंद्र संस्था द्वारा रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। इस आयोजन को ह्यूमैनिटी सेवियर्स के सहयोग से संपन्न किया गया। जिसमें रेड क्रॉस ब्लड बैंक बोकारो से आये चिकित्सक, टेकिनशियन व सहयोगियो द्वारा कुल 35 यूनिट रक्त संग्रह किया गया। शिवम शिल्प कला केंद्र की अध्यक्षा मधु सिंह ने कहा रक्तदान ही एक ऐसा दान है जिससे रक्त मिलने वालों को तो जीवन दान मिलता ही है, साथ ही रक्त दान करने वालों को भी कई तरह के फायदे होते हैं। ह्यूमैनिटी सेवियर्स के संस्थापक अध्यक्ष ब्लड मैन हरबंश सिंह सलूजा ने बताया की कार्यक्रम में पटना से युवा डोनर स्निग्धा साक्षी और प्रगति एवं दिल्ली से आशिका युवरानी ने रक्तदान कर अपनी उपस्थिति दर्ज करायी, जो विशेष रूप से प्रशंसा योग्य रही। मनोरमा सिंह ने कहा कि रक्तदान - महादान की भावना से प्रेरित यह शिविर समाज के लिए एक प्रेरणास्रोत सिद्ध हुआ। डॉ शिव नारायण सिंह ने कहा कि आगे भी ऐसे सेवा कार्य निरंतर आयोजित किए जाएंगे। शिविर को सफल बनाने में शिवम कला केंद्र की मधु सिंह, जमशेदपुर संस्था की ममता सिंह, फुसरो के सदस्य रिशव कुमार सिंह, मोहित सैनी, प्रिया अमित, समर, अलिंदर कुमार सिंह, लक्ष्मी सिंह एवं ह्यूमैनिटी सेवियर्स के हरबंश सिंह सलूजा, जयप्रकाश सिंह एवं प्रवीण कुमार का विशेष योगदान रहा। मौके पर युवा व्यवसायी संघ फुसरो के अध्यक्ष बैभव चौरसिया, फुसरो नप के पूर्व पार्षद भरत बर्मा, समाजसेवी पिंटु सिंह, कुंदन कुमार, कामता प्रसाद आदि लोग मौजुद थे।

स्पीड न्यूज

पिछरी के कांग्रेसी नेता दुर्गा महतो का निधन

फुसरो। झारखंड आंदोलन से जुड़े पिछरी निवासी कांग्रेस के पूर्व दक्षिणी पंचायत अध्यक्ष दुर्गा महतो (55 वर्षीय) का बीते गुरुवार की रात आकस्मिक निधन हो गया। निधन की सूचना मिलते ही पूरा गांव में शोक की लहर छा गयी। वे पिछले कई माह से किडनी व लीवर की बीमारी से ग्रसित थे। वे शांत स्वभाव व मृदभाषी व्यक्ति थे। झामुमो से जुड़ कर झारखंड अलग राज्य आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाई थी। वर्ष 2009 में बेरमो विधायक राजेंद्र प्रसाद सिंह के प्रति आस्था रखते हुए कांग्रेस में शामिल हुए। शुक्रवार को हिंदू रीति रिवाज के साथ दामोदर नदी श्मशान घाट में अंतिम संस्कार किया गया। शोक व्यक्त करने वाले में आजसू नेता सुरज महतो, भाजपा नेता देवीदास, बासुदेव महतो, गणेश मिश्रा, रोहित सिंह, मो मुस्तकीम, परवेज अख्तर, अभय ठाकुर, हीरालाल रविदास, झामुमो नेता घुनू हांसदा, बनबीर मिश्रा, जयलाल महतो, मंगल हांसदा, विक्की महतो, प्रकाश महतो, आदर्श उच्च विद्यालय के प्रधानाध्यापक धनेश महतो, सहित सुरज मिश्रा, कलीम अंसारी, धनंजय स्वर्णकार, देवीलाल महतो, डेगलाल महतो, अशोक महतो आदि लोग शामिल है।

नये थाना प्रभारी का संघ ने किया स्वागत

बेरमो। चंद्रपुरा थाना के नवनियुक्ति थाना प्रभारी अजय कुमार सिंह को भारतीय मजदूर संघ बोकारो जिला मंत्री ललन कुमार मल्लाह के नेतृत्व में स्वागत किया गया। इस दौरान उन्हें बुके देकर व शॉल ओढाकर स्वागत किया। इस दौरान थाना प्रभारी से मांग किया कि यह आए दिन चंद्रपुरा थाना अंतर्गत क्षेत्र में चोरी की घटना की लगातार शिकायत मिलती है, इसपर कठोर कानूनी कार्रवाई की जाए। नये थाना प्रभारी सिंह ने कहा कि क्षेत्र में प्रेम सौहार्द्र एवं शांति के लिए पुलिस प्रशासन एवं पब्लिक का सामंजस्य जरुरी है। इसलिए लोग पुलिस प्रशासन का सहयोग करें, पुलिस से डरें नहीं। आम लोगों के लिए पुलिस प्रशासन भी आम इंसान है।

बिजली चोरी करने वालों के विरुद्ध मामला दर्ज

गोड्डा/पथरगामा। अवैध रूप से बिजली का उपयोग करने वालों के विरुद्ध विद्युत विभाग की सख्त कार्रवाई लगातार जारी है। इस दौरान प्रखंड क्षेत्र अंतर्गत ग्रामीण इलाके में अवैध रूप से बिजली का उपयोग करने वालों के खिलाफ विद्युत विभाग की सख्त कार्रवाई की है। जिसमें सहायक विद्युत अभियंता कंचन टुडू के नेतृत्व में चलाए जा रहे विशेष छापेमारी अभियान के तहत कई स्थानों पर छापेमारी की गई है। वहीं छापेमारी के दौरान अवैध बिजली चोरी करते पाए जाने पर छह लोगों के खिलाफ पथरगामा थाना में मामला दर्ज किया गया है। बिजली चोरी करने वाले आरोपियों में काला डुमरिया निवासी सुरेश यादव, पिता स्व. सुखपाल यादव, राकेश यादव, पिता लखीचरण गोप, काला डुमरिया, पीलपाया बरमसिया निवासी कार्तिक पाल, बोहा साह टोला निवासी प्रदीप कुमार साह, विनय कुमार साह और दिनेश साह शामिल हैं। इस दौरान सहायक विद्युत अभियंता कंचन टुडू ने बताया कि क्षेत्र में अवैध बिजली चोरी के खिलाफ यह अभियान लगातार जारी रहेगा और दोषियों को किसी भी कीमत पर बख्शा नहीं जाएगा। वहीं छापेमारी दल में अखिलेश सिंह, महेश कुमार दास, गौरव कुमार सिंह एवं प्रवीण कुमार मिश्रा मौजूद थे।

आंगनबाड़ी केंद्रों के संचालन में सेविका सहायिकाओं की भूमिका अहम है: डीसी

जिला परिषद बोकारो के सभागार में जिला स्तरीय उन्मुखीकरण-सह-प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ

विजया जाधव ने प्रशिक्षण सत्र में सक्रिय भागीदारी निभाने का आह्वान करते हुए आंगनबाड़ी केंद्रों के बच्चों के लिए उपलब्ध कराई गई आंगनबाड़ी किट के संबंध में बताया

खबर मन्त्र संवाददाता

बोकारो। जिला परिषद बोकारो के सभागार में जिले के नव चयनित 89 सेविका-सहायिकाओं का जिला स्तरीय दो दिवसीय उन्मुखीकरण-सह-प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलित कर डीसी विजया जाधव जिला समाज कल्याण पदाधिकारी डॉ सुमन गुप्ता डीपीआरओ रवि कुमार एवं नव चयनित सेविका-सहायिका ने किया। मौके पर एपीआरओ अविनाश कुमार सिंह डीडीएम कंचन कुमारी विभिन्न परियोजना के सीडीपीओ महिला पर्यवेक्षिका आदि उपस्थित थे। इस दौरान डीसी ने सेविका-सहायिकाओं को उनके दायित्वों का बोध कराते हुए अपनी जिम्मेदारियां पूरी ईमानदारी व निष्ठा के साथ निभाने का संदेश दिया।

उपायुक्त ने आंगनबाड़ी केंद्रों में उनकी भूमिका एवं किए जाने वाले कार्यों आदि के बारे में बताया। कहा कि आंगनबाड़ी केंद्रों के सफल संचालन में सेविका-सहायिकाओं की अहम भूमिका है।

सेविका-सहायिकाओं का किशोरियों गर्भवती महिलाओं धात्री माताओं बच्चों को पोषण स्वास्थ्य उनकी प्रारंभिक शिक्षा सब उनके कार्य दायित्व में शामिल हैं। उन्होंने प्रशिक्षण सत्र में सक्रिय भागीदारी निभाने का आह्वान करते हुए आंगनबाड़ी केंद्रों के बच्चों के लिए उपलब्ध कराई गई आंगनबाड़ी किट के संबंध में बताया। जिला समाज कल्याण पदाधिकारी ने दो दिवसीय उन्मुखीकरण-सह-प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान बताई जाने वाले बातों के संबंध में नव चयनित सेविका-सहायिकाओं को बताया। उनके मुख्य कार्य प्री-स्कूल एजुकेशन पूरक पोषाहार कार्यक्रम संदर्भ सेवाएंझकुषोषण दूर करने स्वास्थ्य सेवाएं-टीकाकरण टीएचआर वितरण आदि के संबंध में बताया।

उन्होंने प्रशिक्षण पूर्व तथा प्रशिक्षण के उपरांत आकलन आदि के संबंध में जानकारी दी। इसके अलावा विभिन्न बिंदुओं पर उन्मुखीकरण-सह-प्रशिक्षण कार्यक्रम में नवचयनित सेविका-सहायिकाओं को विभिन्न विशेषज्ञ प्रशिक्षकों द्वारा प्रशिक्षण दिया गया।

नावाडीह प्रखंड के ऊपरघाट भलमारा क्लस्टर की बैठक

बेरमो। नावाडीह प्रखण्ड के ऊपरघाट भलमारा क्लस्टर के बरई पंचायत के बरई, जुड़ामना, हरलाडीह, घोंसको, का एक एकीकृत कृषि क्लस्टर, (आई एफसी) को बढ़ावा देने को लेकर भलमारा क्लस्टर की अध्यक्ष पुष्पा देवी के अध्यक्षता में की गई। इस बैठक में भलमारा क्लस्टर ब्लॉक रिसॉर्स पर्सन दीपू कुमार ने कहा कि इस बैठक में सभी महिलाओं को कृषि और पशु विभाग के बड़े पैमाने पे बढ़ावा देना और समय-समय पे पशु का टीकाकरण, मचान निर्माण, पशु शेड की उचित व्यवस्था कैसी हो इसकी सही जानकारी के उद्देश्य से गठन किया गया हैं। मौके पर बसंत कुमार, इंदीया देवी, गायत्री देवी, सेतु अंजू देवी, संजू देवी, फूलवंती देवी, यशोदा देवी, सुनीता देवी, नकुल उपस्थित थे।

कार्यपालक पदाधिकारी के निर्देश पर महागामा शहर सफाई का कार्य प्रारंभ

महागामा। नगर पंचायत के कार्यपालक पदाधिकारी आशीष कुमार के निर्देश पर पर्यवेक्षक मोहम्मद फिरोज अंसारी व दिलदार अंसारी के नेतृत्व में शहर साफ-सफाई का कार्य प्रारंभ किया गया है। हालांकि सुबह की बारिश के कारण कार्य में थोड़ी बाधा जरूर आई, लेकिन इसके बावजूद जहां-जहां कचरे का डंप बना हुआ है, वहां सबसे पहले कचरा हटाने का कार्य प्राथमिकता के आधार पर किया जा रहा है। इस क्रम में स्वच्छता कार्यों का जायजा लेने विधायक प्रतिनिधि विपिन बिहारी सिंह स्वयं क्षेत्र में पहुंचे। निरीक्षण के दौरान उन्होंने साफ-सफाई को लेकर चल रहे प्रयासों की सराहना की। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि साफ-सफाई को लेकर कोई समझौता नहीं किया जाएगा।यह कार्य जनहित में है और इसे पूरी निष्ठा व ईमानदारी से सुचारू रूप से जारी रखा जाए।

शादी की नियत से नाबालिग को भगाने के आरोपित को सश्रम कारावास

गोड्डा। पोक्सो के विशेष न्यायाधीश सह अपर जिला जज प्रथम कुमार पवन के न्यायालय ने शादी की नियत से नाबालिग को भगाने के आरोपित देवदांड़ थाना क्षेत्र के जीतपुर निवासी अजय कुमार सेन को दोषी पाकर 366 भादवि के तहत छह वर्ष सश्रम कारावास एवं 20,000 रुपए अर्थदंड की सजा सुनाई। जुमार्ना की राशि अदा नहीं करने पर छह माह अतिरिक्त कारावास से दंडित किया गया। मामले को लेकर देवदांड़ थाना क्षेत्र में 15 अप्रैल 23 को दर्ज प्राथमिकी में नाबालिग के पिता ने कहा गया है कि 12 अप्रैल 23 की रात को 12 बजे उसकी 13 वर्षीय पुत्री मां के साथ शौचालय के लिए उठी, उसके बाद सोई तो सुबह उसे घर में नहीं देखा गया। काफी खोनबीन करने पर पता चला की जीतपुर के अजय कुमार सेन के साथ कहीं जा रही थी। मोटरसाइकिल से पीछा किया गया लेकिन कुछ पता नहीं लग पाया। वहीं बाद में छानबीन करने पर नाबालिग लड़की व अजय कुमार सेन को उसके रिश्तेदार के घर से बरामद किया गया था। मामले के विचारण के दौरान अभियोजन की ओर से आठ गवाहों का परीक्षण कराया गया। उभय पक्षों की दलील सुनने के उपरांत न्यायालय ने सजा सुनाई।

स्वच्छता पखवाड़ा 2025 के अवसर पर पेंटिंग प्रतियोगिता का किया गया आयोजन

बेरमो। डीवीसी बोकारो थर्मल में स्वच्छता पखवाड़ा 2025 के अवसर पर पेंटिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। डीवीसी बोकारो थर्मल प्रबंधन की ओर से बोकारो क्लब में आज स्थानीय बच्चों एवं डीवीसी कर्मियों के बच्चों के लिए एक चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। जिसमें सैकड़ो की संख्या में बच्चों ने हिस्सा लिया। प्रतियोगिता का आयोजन प्रबंधक (मानव संसाधन) संज्ञा दास, उप प्रबंधक (मानव संसाधन) एस ए अशरफ, शाहिद इकराम, विनय कुमार, दीनानाथ शर्मा एवं खेल प्रशिक्षक शिबू कुमार की देखरेख में संपन्न हुई । प्रतियोगिता के? निर्णायक के रूप में बोकारो थर्मल की मिस आरती कुमारी एवं कथारा के श्री गौरव कुमार रहें। बच्चों द्वारा स्वच्छता से संबंधित एक से बढ़कर एक पेंटिंग बनाई गई । बच्चों के साथ उनके अभिभावक भी क्लब में मौजूद रहे।

तालाब में बेटियों समेत डूबकर मरी महिला के परिजनों से मिले विधायक

खबर मन्त्र संवाददाता

बोकारो। विधायक चंदनकियारी उमाकांत रजक ने तालाब में बेटियों समेत डूबकर मरी महिला के परिजनों से मिलकर उन्हें सांत्वना दी और परिवार को दुख के इस घड़ी से उबरने के लिए ईश्वर से परिजनों को शक्ति देने के लिए प्रार्थना की।

मौके पर जिला परिषद सदस्य आलोका देवी प्रखंड प्रमुख निवारण सिंह चौधरी उप प्रमुख पदमा देवी मुखिया एवं पंचायत प्रतिनिधि आदि मौजूद रहे। वहीं उपायुक्त विजया जाधव के निर्देश पर चंदनकियारी प्रखंड प्रशासन की टीम ने गम्हरिया गांव के पीड़ित परिवारों से मुलाकात की। टीम में चंदनकियारी बीडीओ अजय वर्मा सीओ रवि आनंद कार्यपालक दंडाधिकारी जया कुमारी आदि शामिल रहीं। पदाधिकारियों ने पीड़ित परिवार के सदस्यों को सांत्वना दिया और मृतक शांति देवी के परिजनों को आपदा प्रबंधन विभाग द्वारा प्राप्त होने वाले मुआवजा के संबंध में जानकारी देते हुए कार्रवाई शुरू करने की बात कहीं।

उल्लेखनीय है कि मंगलवार को गम्हरिया निवासी दिनेश दास की पत्नी ज्योत्सना देवी समेत उनकी दो पुत्रियां निशा व तनुश्री के अलावा एक पड़ोसी महिला शांति देवी की गांव के ही पोखरिया तालाब में कपड़ा धोने व नहाने के दौरान डूबने से मौत हो गई थी।

राजनीतिक जीवन में ट्रेड यूनियन की थी राजेंद्र बाबू की प्राथमिकता : आशीष

मजदूर आंदोलन के स्तंभ रहे राजेंद्र बाबू : विजय

खबर मन्त्र संवाददाता

बेरमो। राष्ट्रीय कोलियरी मजदूर यूनियन कथारा से जुड़े पदाधिकारी व सदस्यों की बैठक स्वर्गीय राजेंद्र प्रसाद सिंह स्मृति भवन सह क्षेत्रीय कार्यालय के प्रांगण में क्षेत्रीय उपाध्यक्ष चंद्रशेखर प्रसाद की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता कर रहे चंद्रशेखर प्रसाद ने कहा राजेंद्र बाबू के नाम से मजदूरों को शक्ति प्रदान होती थी हर विपरीत परिस्थिति में मजदूर हितों की रक्षा उनके कुशल नेतृत्व का परिचायक रहा।

अपने जीवन काल में अपने सूझबूझ से कोल इंडिया में हजारों लोगों का नियोजन करवाने में सफल रहे। क्षेत्रीय सहायक सचिव आशीष चक्रवर्ती ने कहा अपने राजनीतिक जीवन में राजेंद्र बाबू ने मजदूर राजनीति को पहले रखा। मजदूरों के प्रति उनकी गहरी पूरे देश में मजदूर नेता के रूप में उनकी मजबूत पहचान थी। उन ट्रेड यूनियन के बड़े नेताओं के साथ इनके मधुर संबंध होने के कारण कोल इंडिया प्रबंधन पर मजदूर हितों की रक्षा के लिए इन्होंने मजबूत भूमिका का निर्वाह की है।

क्षेत्रीय सहायक सचिव विजय यादव ने कहा शिक्षा का क्षेत्र हो खेलकूद का क्षेत्र हो बेरमो अपने विधायक के कार्यकाल में इन्होंने जो कार्य किये वह अनोखा है। बेरमो की जनता इन्हें अपना अभिभावक मानती थी। बेरमो को देश मे राजेंद्र बाबू ने पहचान दिलाई। मजदूर सद्भावना दिवस के रूप में भी उनकी पुण्यतिथि मनाई जाएगी।

पुण्यतिथि कार्यक्रम को लेकर बैठक में मुख्य रूप से चंद्रशेखर प्रसाद आशीष चक्रवर्ती राजेश शर्मा विजय यादव रणजीत सिंह मोहम्मद नसीम सुरेश ठाकुर देवाशीष आश संतोष सिन्हा अमनदीप सिंह सूर्यकांत त्रिपाठी मंसूर खान विश्वेश्वरी नोनिया संतोष राम गोड पिंटू कुमार कपिल यादव सहित अन्य कई लोग शामिल थे।

तेनुघाट व्यवहार न्यायालय परिसर मे मासिक लोक अदालत का हुआ आयोजन

तेनुघाट कोर्ट। झालसा, रांची एव बोकारो प्रधान जिला एव सत्र न्यायाधीश सह अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकार के निर्देशानुसार शनिवार 23 मई को मासिक लोक अदालत का आयोजन किया गया। इस संबंध में जानकारी प्रदान करते हुए अनुमंडल विधिक सेवा प्राधिकार समिति के सचिव महोदय सह एसडीजेएम रश्मि अग्रवाल ने कहा कि माननीय झालसा, रांची के निर्देश पर जिला विधिक सेवा प्राधिकार, बोकारो द्वारा मासिक लोक अदालत के माध्यम से न्यायालय में लंबित सभी प्रकार के सुलहनीय आपराधिक मामलों, सिविल वाद, क्लेम वाद, एन आई एक्ट वाद एवं बिजली विभाग, वन विभाग, उत्पाद विभाग, श्रम विभाग, माप-तौल विभाग, टेलीफोन विभाग से संबंधित मामलों का त्वरित निष्पादन हेतु किया जाता है। इस मासिक लोक अदालत के सफल संचालन के लिए दो बेंच का गठन किया गया था। जिसके पहले बेंच पर जिला जज प्रथम फहीम किरमानी और अधिवक्ता सुजीत कुमार जायसवाल एव दूसरे बेंच पर प्रथम श्रेणी न्यायिक दंडाधिकारी राज कुमार पांडेय और अधिवक्ता प्रशांत पाल मौजुद थे। आज के इस मासिक लोक अदालत में सुलहनीय आपराधिक वाद के 6 मामलों का निष्पादन किया गया, जिसमें 2,250 रुपए सुलहनीय राशि प्राप्त हुआ। कार्यक्रम को सफल बनाने में सभी न्यायिक पदाधिकारीगण, विभिन्न विभागों के पदाधिकारीगण, विद्वान पैनल अधिवक्तागण, कर्मियों एवं पारा लीगल वालंटियर्स की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

झामुमो कसमार प्रखंड कमिटी का हुआ विस्तार

खबर मन्त्र संवाददाता

बोकारो/कसमार। झामुमो कसमार प्रखंड कमेटी की ओर से बगियारी मोड़ स्थित किसान भवन में आयोजित प्रखंड स्तरीय कार्यकर्ता सम्मेलन की अध्यक्षता प्रखंड अध्यक्ष दिलीप कुमार हेंब्रम एवं संचालन सोहेल अंसारी ने किया। कार्यक्रम में पार्टी पदाधिकारियों को गमछा भेंट कर सम्मानित किया गया तथा प्रखंड कमेटी का विस्तार भी किया गया। मौके पर मुख्य अतिथि गोमिया की पूर्व विधायक बबीता देवी ने उपस्थित कार्यकर्ताओं को कहा कि किसी भी संगठन की मजबूती के लिए कार्यकर्ता ही ताकत होते हैं। झामुमो अपने कार्यकर्ताओं का हमेशा सम्मान करती है। कार्यक्रम में केंद्रीय सदस्य हीरालाल मांझी जयनारायण ज़िला सचिव मुकेश कुमार महतो पूर्व कोषाध्यक्ष अशोक मुर्मू जिला उपाध्यक्ष मनोहर मुर्मू घुनु हांसदा कसमार प्रमुख नियोती कुमारी सुभाष चन्द्र ठाकुर विमल जायसवाल मंत्री पुत्र विनय कपूर महतो प्रकाश महतो फारुख अंसारी सिकंदर कपरदार प्रिया देवी संजय महतो बिनोद बिहारी महतो सुरेन्द्र महतो मृत्युंजय तिवारी धनंजय स्वर्णकार बिक्रम सिंह बब्लू अंसारी हसन अंसारी रमेश हेंब्रम रमेश वर्मा तिमिर मुखर्जी जानी अंसारी तनवीर आलम आदि सैकड़ों कार्यकर्ता मौजूद थे। प्रखंड कमेटी में तनवीर आलम रामसाय हांसदा नित्यानंद महतो एवं संजय महतो को उपाध्यक्ष जितेन्द्र टुडू चकेश्वर महतो व इरफान अंसारी को सह सचिव महेंद्र सिंह रविशंकर मेहता कृष्ण किशोर कपरदार सोमेश्वर हेंब्रम अजय कुमार महतो को सह सचिव धनंजय स्वर्णकार को प्रवक्ता जानी बाबू को मीडिया प्रभारी तथा कार्यकारिणी सदस्य में अशोक मरांडी कमलेश करमाली शंकर महतो गुल मो अंसारी बाबू जान अंसारी लालचंद मांझी दिलीप सिंह मेहररूल होदा मनोज मुर्मू कौशर रतन महतो शिवचरण महतो मनोज भोला सोरेन फुलेश्वर मुर्मू को मनोनीत किया गया।

बीएसएल ने गरगा नदी की सफाई और पौधरोपण किया

खबर मन्त्र संवाददाता

बोकारो। अंतर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस प्रकृति के साथ सामंजस्य और सतत विकास विषय के अंतर्गत मनाया जाता है। बीएसएल और जिला गरगा समिति के सौजन्य से इस वर्ष- प्रकृति के साथ सामंजस्य और सतत विकास की थीम पर मुख्य महाप्रबंधक-नगर सेवा के नेतृत्व और मार्गदर्शन में गरगा नदी की सफाई और पौधारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जैविक विविधता भविष्य की पीढ़ियों के लिए आवश्यक है तथा इसके प्रति सजगता बरतना सभी का कर्तव्य है। कार्यक्रम में नगर सेवा विभाग के महाप्रबंधक-जन स्वास्थ्य एके अविनाश की टीम द्वारा गरगा नदी के आस- पास वृहद साफ- सफाई के साथ-साथ नदी के समीप पौधरोपण किया गया।

चास नगर निगम ने कराई सिंगारी जोरिया की सफाई

बोकारो। डीसी विजया जाधव के निर्देश पर नगर निगम चास द्वारा सिंगारी जोरिया की निगम के सफाई कर्मियों की टीम द्वारा सफाई अभियान चलाकर सफाई किया गया। उधर शहर के विभिन्न नालों की साफ-सफाई का काम तेजी से समाप्त करने के लिए नगर निगम चास की ओर से कार्य जारी है। सफाई कार्य को मजदूरों के अलावा जेसीबी- ट्रैक्टर एवं अन्य वाहनों के माध्यम से पूर्ण करने का काम जारी है।

स्पीड न्यूज

न्यूक्लियर ठिकानों पर हमले के लिए अमेरिका होगा जिम्मेदार : ईरान

तेहरान। ईरान ने चेतावनी दी है कि यदि उसके परमाणु ठिकानों पर इजराइल हमला करता है, तो वह अमेरिका को इसके लिए पूरी तरह जिम्मेदार ठहराएगा। यह सख्त बयान ऐसे समय में आया है जब ईरान और अमेरिका के बीच ईरानी परमाणु कार्यक्रम को लेकर बेहद अहम पांचवें दौर की बातचीत होने वाली है। विदेश मंत्री अब्बास अरागची ने कहा कि इजराइल के किसी दुस्साहस का निर्णायक जवाब देगा।

ब्लैक कलर को कवच मानती हैं सुष्मिता सेन

मुंबई। बॉलीवुड अभिनेत्री और पूर्व मिस यूनिवर्स सुष्मिता सेन काला रंग को अपना कवच मानती है। सुष्मिता सेन ने अपने इंस्टाग्राम पर कई फोटोज शेयर की हैं, जिसमें उन्होंने स्टाइलिश काले रंग की साड़ी पहनी हुई है। इन तस्वीरों में सुष्मिता हमेशा की तरह आत्मविश्वास से लबरेज नजर आ रही हैं। सेन ने अपनी इन तस्वीरों को शेयर करते कैप्शन में लिखा कि मैं अंधेरे से डरती नहीं, मुझे हमेशा से ब्लैक कलर पसंद है।

नीतीश आज दिल्ली में मोदी से मिलेंगे

पटना। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार शनिवार को दिल्ली जाएंगे। वे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सहित केंद्रीय मंत्रियों से मिलेंगे। 25 मई को प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में राजग शासित प्रदेशों के मुख्यमंत्रियों की बैठक होगी। इसमें राजग शासित मुख्यमंत्रियों के कामकाज की समीक्षा की जाएगी। केंद्र की राजग सरकार द्वारा जो काम किया जा रहा है उसे लेकर मुख्यमंत्रियों से फीडबैक लिया जाएगा और उसकी समीक्षा होगी। उसी को लेकर मुख्यमंत्री नीतीश कुमार शनिवार को दिल्ली जाएंगे और रविवार को प्रधानमंत्री के साथ समीक्षा बैठक में हिस्सा लेंगे।

गढ़चिरौली में मुठभेड़ चार कट्टर नक्सली ढेर

कांकेर/मुंबई । छत्तीसगढ़ से सटे महाराष्ट्र के गढ़चिरौली में पुलिस और नक्सलियों के बीच मुठभेड़ में शुक्रवार को सी-60 कमांडो ने चार हार्डकोर नक्सलियों को मार गिराया। जवानों ने चारों नक्सलियों के शवों सहित हथियार को भी बरामद कर लिया है। इलाके में सर्च ऑपरेशन जारी है।

इंडोनेशिया, नेपाल में भूकंप के झटके

जकार्ता। इंडोनेशिया और नेपाल में शुक्रवार को भूकंप के तीव्र झटके महसूस किये गये। रिक्टर पैमाने पर इंडोनेशिया में भूकंप की तीव्रता 6.0 जबकि नेपाल में 4.3 मापी गयी। इंडोनेसिया के पश्चिमी बेंगकुलु प्रांत में भूकंप से कई मकान क्षतिग्रस्त हो गये और कुछ लोग घायल हो गए। नेपाल में भी भूकंप के हल्के झटके महसूस किए गए हैं लेकिन इसकी तीव्रता कम होने की वजह से जानमान के नुकसान की कोई सूचना नहीं है।

यमन से इजराइल पर दागी गयी मिसाइल

तेल अवीव। यमन से शुक्रवार सुबह इजराइल पर बैलिस्टिक मिसाइल दागी गई। इजराइल ने इस बैलिस्टिक मिसाइल को मार गिराने का दावा किया है। इस दौरान तेल अवीव, यरूशलम, यहूदिया और सामरिया में सायरन बजने शुरू हो गए। बैलिस्टिक मिसाइल दागे जाने के बाद समूचे मध्य इजराइल में काफी समय सन्नाटा पसरा रहा। आईडीएफ ने बैलिस्टिक मिसाइल को हवा में ही मार गिराया गया।

पीने को पानी नहीं, भारत को गीदड़भभकी

हाफिज की तरह पाकिस्तानी सेना ने सिंधु जल समझौते पर दिया विवादित बयान

एजेंसी

इस्लामाबाद । सिंधु जल समझौता रद्द होने बाद पाकिस्तान में पानी के लिए तरस रहे हैं लोग, वहीं पाकिस्तानी सेना दे रही है गीदड़भभकी। सैन्य प्रवक्ता लेफ्टिनेंट जनरल अहमद शरीफ चौधरी ने लश्कर ए तैयबा (एलईटी) के आतंकी हाफिज सईद की ही तरह सिंधु जल समझौते को लेकर भारत के खिलाफ जहर उगला है। चौधरी ने एक सार्वजनिक सभा में सिंधु जल संधि स्थगित करने के फैसले पर चेतावनी भरे अंदाज में कहा कि यदि आप हमारा पानी रोकेंगे, तो हम आपकी सांसें रोक देंगे।₹ ये अंदाज और बोल ठीक वैसे ही हैं जैसे हाफिज सईद ने हाल ही में उगले थे। शरीफ चौधरी सिंधु जल संधि को तब तक स्थगित रखने के भारत के फैसले पर बोल रहे थे। दरअसल, भारत पहले ही कह चुका है कि जब तक इस्लामाबाद आतंकवाद को समाप्त नहीं कर देता और अपनी धरती से उत्पन्न होने वाले आतंकवादी समूहों को सहायता, वित्त पोषण और समर्थन

हमारा पानी रोकेंगे, हम आपकी सांसें रोक देंगे : शरीफ चौधरी

बंद नहीं कर देता, तब तक सिंधु जल संधि स्थगित ही रहेगी। चौधरी ने कथित तौर पर पाकिस्तान के एक विश्वविद्यालय में भाषण के दौरान यह टिप्पणी की। उनका बयान लश्कर-ए-तैयबा के संस्थापक हाफिज सईद द्वारा इस्तेमाल की गई बयानबाजी से हूबहू मेल खाता है। सईद 2008 के मुंबई आतंकवादी हमलों का मास्टरमाइंड है। वह भारत और अमेरिका के खिलाफ अपने भड़काऊ भाषणों के लिए जाना जाता है। सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे एक वीडियो में हाफिज सईद को यही शब्द कहते हुए सुना जा सकता है। ये बयान ऐसे समय में आए हैं जब भारत ने 23 अप्रैल को सिंधु जल संधि के कुछ हिस्सों को निलंबित कर दिया था। यह संधि पहलगाम में हुए आतंकी हमले के एक दिन बाद की है जिसमें 26 लोगों की निर्मम हत्या की थी। 1960 में विश्व बैंक द्वारा मध्यस्थता की गई यह संधि सिंधु नदी और उसकी सहायक नदियों के जल के बंटवारे को दोनों देशों

आतंकवाद और बातचीत एक साथ नहीं हो सकते : भारत

नयी दिल्ली। भारतीय विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने दृढ़ता से कहा कि आतंकवाद और बातचीत एक साथ नहीं हो सकते। उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि भारत केवल वांछित आतंकवादियों के प्रत्यर्पण पर चर्चा को तैयार है, जिन्हें पहले से ही सूचीबद्ध किया गया है और इस्लामाबाद के साथ साझा किया गया है। कश्मीर मुद्दे पर भारत के रुख को स्पष्ट करते हुए, जायसवाल ने रेखांकित किया कि कोई भी द्विपक्षीय चर्चा केवल पाकिस्तान द्वारा अवैध रूप से कब्जाए गए भारतीय क्षेत्र को खाली करने पर होगी। निलंबित सिंधु जल संधि (आईडब्ल्यूटी) पर जायसवाल ने पुष्टि की कि जब तक पाकिस्तान आतंकवाद का समर्थन बंद करने के लिए विश्वसनीय और अपरिवर्तनीय कदम नहीं उठाता, तब तक यह समझौता स्थगित रहेगा। उन्होंने प्रधानमंत्री मोदी के बयान को दोहराया कि पानी और खून एक साथ नहीं बह सकते, जो ऐतिहासिक जल-समझौते पर भारत की स्थिति के सख्त होने का संकेत देता है।

सेना के एक्शन से पोस्ट छोड़कर भागे थे पाकिस्तानी कमांडर

एजेंसी

नयी दिल्ली । भारतीय सेना द्वारा ऑपरेशन सिंदूर के तहत किए गए प्रहार से पाकिस्तानी सेना में भगदड़ की स्थिति बन गई थी। ऑपरेशन सिंदूर के दौरान पाकिस्तानी सेना की बातचीत के कई महत्वपूर्ण अंश अब सामने आए हैं। इंटरसेप्ट की गई बातचीत में पता लगा है कि ऑपरेशन सिंदूर के दौरान पाकिस्तानी सेना के अधिकारी अपनी पोस्ट व दफ्तर छोड़कर भाग खड़े हुए थे। ऐसे ही एक इंटरसेप्ट में सुना जा सकता है कि पाकिस्तानी सेना के कमांडर अपने दफ्तर में आने को राजी नहीं हैं। पाक अधिकृत कश्मीर स्थित अपनी पोस्ट पर आने से इनकार करते पाकिस्तान के एक सैन्य कमांडर को अपने जूनियर्स से कहते हुए सुना जा सकता है कि ऑफिस तो बाद में भी खुल जाएगा, पहले अपनी जान बचाओ। जम्मू कश्मीर में भारत-पाकिस्तान नियंत्रण रेखा से कुछ किलोमीटर की दूरी पर पाकिस्तानी सेना की 75 इन्फैंट्री ब्रिगेड है। यह यूनिट पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर

ऑपरेशन सिंदुर में पाकिस्तान के 64 सैन्य अधिकारी व जवान हुये ढेर और 96 से अधिक जख्मी

यानी पीओके में भी तैनात है। ऑपरेशन सिंदूर के तहत पीओके के मुजफ्फराबाद के समीप आतंकवादियों के कैंप पर हमले हुए थे। भारतीय सेना के वरिष्ठ सैन्य कमांडर के मुताबिक यहां पाकिस्तानी 75 इन्फैंट्री ब्रिगेड के कमांडर खुद तो भाग गए, साथ ही अपने सैनिकों से भी अपनी जान बचाने को कहते सुने गए। पाकिस्तानी सेना के कमांडर जब अपने दफ्तर नहीं पहुंचे तो उनके मातहत अधिकारियों ने उनसे फोन पर संपर्क किया और ऑफिस खोलने के बारे में जानकारी मांगी। इसके जवाब में कमांडर ने कहा कि ऑफिस बाद में खुल जाएगा, पहले अपनी जान बचाओ। पाकिस्तानी सेना के जूनियर अधिकारियों की बातचीत भी सामने आई है। पाकिस्तानी सेना के ये अधिकारी कह रहे हैं कि अपने कमांडर साहब बड़ी मुश्किल से बचे हैं। वह किसी मस्जिद में नमाज पढ़वा रहे हैं। कमांडर साहब ने बंदों को इधर भेजा है। अमन होगा, उसके बाद आएंगे। फिलहाल ऑफिस बंद ही है। यही नहीं, पाकिस्तानी सेना को हुए भारी नुकसान की जानकारी भी इन इंटरसेप्ट से मिली है। ऐसे ही एक इंटरसेप्ट से जानकारी मिली है कि पाकिस्तानी सेना की 16वीं बलूच रेजिमेंट के कैप्टन हसनैन शाह फायरिंग में मारे गए। वह हाजी पीर सेक्टर में हुई फायरिंग के दौरान मारे गए। पाकिस्तानी सैनिक बातचीत में कह रहे थे कि कैप्टन हसनैन शाह बीती रात फायरिंग में मारे गए। उनकी डेड बॉडी पाकिस्तान के अबोटाबाद में 6 पाकिस्तानी ब्रिगेड द्वारा पहुंचाई गई है। भारतीय सेना के मुताबिक अकेले जम्मू कश्मीर स्थित नियंत्रण रेखा और बॉर्डर से की गई भारतीय सैन्य कार्रवाई में पाकिस्तान के 64 सैन्य अधिकारी व जवान मारे गए हैं। ऑपरेशन सिंदूर के दौरान भारतीय हमलों में 96 से अधिक पाकिस्तानी जवान जख्मी हुए हैं। सेना के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि सीमापार सवाई नाला इलाके में 5-6 मोस्ट वांटेड आतंकवादियों का खात्मा किया गया।

आतंकवाद के खात्मे को भारत का साथ देगा रूस

सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल को दिया आश्वासन

एजेंसी

मॉस्को। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में 22 अप्रैल को हुए जघन्य आतंकवादी हमले की निंदा करते हुए रूस ने शुक्रवार को कहा कि वह आतंकवाद के सभी रूपों और अभिव्यक्तियों के उन्मूलन के लिए देश के साथ एकजुटता से खड़ा है। डीएमके सांसद कनिमोझी के नेतृत्व में भारत के एक सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल ने अंतर्राष्ट्रीय मामलों की समिति के प्रथम उपाध्यक्ष एंड्री डेनिसोव सहित रूसी संघीय परिषद के वरिष्ठ सदस्यों से मुलाकात की और आतंकवाद के खिलाफ एकजुट रुख की पुष्टि की। बैठक के दौरान रूस ने पहलगाम में हाल ही में हुए आतंकवादी हमले की कड़ी निंदा की और आतंकवाद के सभी रूपों के खिलाफ वैश्विक लड़ाई में भारत के साथ अपनी एकजुटता दोहराई। रूस में भारतीय दूतावास ने एक्स पर पोस्ट किया कि रूसी संघ की फेडरेशन काउंसिल में

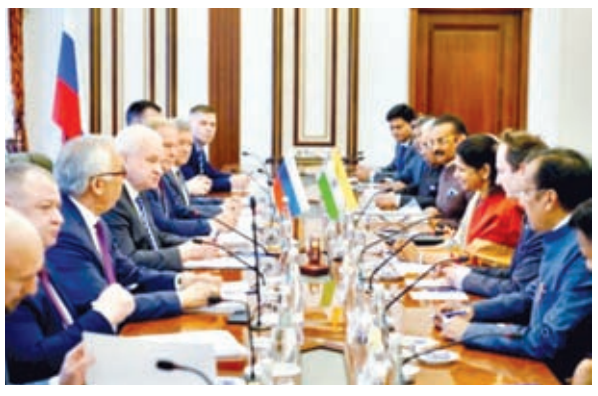

सांसद कनिमोझी करुणानिधि के नेतृत्व में सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल ने अंतर्राष्ट्रीय मामलों की समिति के प्रथम डिप्टी चेयर एंड्री डेनिसोव और अन्य सीनेटरों से मुलाकात की। रूस ने पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले की निंदा की और कहा कि रूस आतंकवाद के सभी रूपों और अभिव्यक्तियों के उन्मूलन के लिए भारत के साथ एकजुटता में खड़ा है। आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में रूस और भारत की स्थिति एक जैसी है। पोस्ट में कहा गया कि आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में एक साथ। रूस में भारतीय दूतावास ने पोस्ट किया कि राजदूत विनय कुमार ने आधिकारिक वार्ता शुरू करने से पहले सांसदों कनिमोझी, राजीव राय, बृजेश चौटा, प्रेम चंद गुप्ता, अशोक कुमार मित्तल और राजदूत मंजीव पुरी को भारत-रूस संबंधों के विभिन्न पहलुओं पर जानकारी दी।

आतंकवाद ही बनेगा पाकिस्तान के अंत का कारण : योगी

अयोध्या। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शुक्रवार को कहा कि पाकिस्तान के अंत की शुरूआत हो चुकी है और आतंकवाद ही उसके अंत का कारण बनेगा।

उन्होंने हनुमान जी का उदाहरण देते हुए कहा कि बजरंगबली ने रावण के दरबार में यही संदेश दिया था। पाकिस्तान आतंकवाद को बढ़ावा देकर खुद को बर्बाद कर रहा है। भारतीय सेना की कार्रवाई में 124 से अधिक आतंकवादी मारे गए हैं। यह गलती पाकिस्तान की है, जो आतंकियों को प्रश्रय दे रहा है। ये आतंकवाद पाकिस्तान को ले डूबेगा और इसमें ज्यादा दिन नहीं बचे हैं। उन्होंने कहा कि पाक का अध्यात्मिक जगत में कोई अस्तित्व नहीं है। जिसका अपना वास्तविक अस्तित्व न हो, उसकी एक निश्चित लाइफ होती है। अब पाकिस्तान का समय पूरा हो गया है।

हार्वर्ड विवि में अब नहीं पढ़ सकेंगे विदेशी छात्र

एजेंसी

वाशिंगटन। अमेरिकी प्रशासन ने प्रतिष्ठित हार्वर्ड विश्वविद्यालय को होमलैंड सुरक्षा विभाग (डीएचएस) द्वारा मांगे गए विदेशी छात्रों की आचरण रिपोर्ट को सौंपने से इनकार करने के बाद अंतरराष्ट्रीय छात्रों को संस्थान में दाखिला लेने से रोक दिया है। सीएनएन की रिपोर्ट के अनुसार अमेरीकी डिपार्टमेंट ऑफ होमलैंड सिक्योरिटी ने कहा कि हार्वर्ड अब विदेशी छात्रों को दाखिला नहीं दे सकता है और मौजूदा विदेशी छात्रों को स्थानांतरित करना होगा या फिर अपनी कानूनी स्थिति खोनी होगी। होमलैंड सुरक्षा मंत्री क्रिस्टी नोएम ने अपने विभाग को हार्वर्ड के छात्र और विनिमय आगंतुक कार्यक्रम प्रमाणन को समाप्त करने का आदेश दिया, जिसमें पिछले महीने डीएचएस द्वारा मांगे गए विदेशी छात्रों के आचरण रिकॉर्ड को सौंपने से विश्वविद्यालय के इनकार का हवाला दिया गया। यह निर्णय हार्वर्ड के अंतरराष्ट्रीय छात्र निकाय

अमेरिकी प्रशासन ने दाखिला लेने से रोका

के एक चौथाई से अधिक छात्रों को प्रभावित कर सकता है, जिनका भविष्य बीए के बाद अनिश्चित हो गया है। प्रोफेसरों को आशंका है कि विदेशी छात्रों के सामूहिक पलायन से संस्थान की शैक्षणिक प्रतिष्ठा प्रभावित हो सकती है जिसने अपनी वैचारिक स्वायत्तता की रक्षा के लिए प्रशासन का सामना किया है। व्हाइट हाउस ने कहा कि विदेशी छात्रों को दाखिला देना अधिकार नहीं। उन्होंने हार्वर्ड नेतृत्व पर अपने एक समय के महान संस्थान को अमेरिका विरोधी, यहूदी विरोधी, आतंकवाद समर्थक आंदोलनकारियों के अड्डे में बदलने का आरोप लगाया। व्हाइट हाउस की प्रवक्ता एबिगेल जैक्सन ने कहा कि अमेरिकी छात्रों को नकारात्मक रूप से प्रभावित करने वाली व्यापक समस्याओं को दूर करने के लिए कार्रवाई करने में बार-बार विफल रहे हैं और अब उन्हें अपने कृत्यों का सामना करना होगा।

लड़खड़ा गयी है देश की विदेश नीतिःराहुल

नयी दिल्ली। लोकसभा में विपक्ष के नेता एवं कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने शुक्रवार को मोदी सरकार पर विदेश नीति को कमजोर करने पर आरोप लगाया और विदेशमंत्री एस जयशंकर की कार्यशैली पर भी सवाल उठायें। गांधी ने एक सोशल मीडिया पोस्ट में कहा कि जयशंकर को यह जवाब देना चाहिए कि कुछ देश पाकिस्तान को भारत के बराबरी पर क्यों रख रहे हैं और एक भी देश पाकिस्तान की निंदा करने में हमारा साथ क्यों नहीं दे रहा है। कांग्रेस नेता ने यह सवाल भी किया कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को भारत,पाकिस्तान के बीच मध्यस्थता करने के लिए किसने कहा। उन्होंने आरोप लगाया कि भारत की विदेश नीति लड़खड़ा गयी है। गौरतलब है कि ट्रंप लगातार कह रहे हैं कि उन्होंने भारत ,पाकिस्तान के बीच सैन्य कार्रवाई रोकने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी और वह दोनों देशों के बीच कश्मीर मुद्दे पर भी मध्यस्थता करने को तैयार हैं। अमेरिकी राष्ट्रपति ने अपने बयानों में भारत और पाकिस्तान को समान स्तर पर रखा है।

नीति आयोग की बैठक आज

नयी दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी शनिवार को नई दिल्ली स्थित भारत मंडपम में नीति आयोग गवर्निंग काउंसिल की 10वीं बैठक होगी। इसकी अध्यक्षता प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी करेंगे।

बैठक में 2047 तक भारत को एक विकसित देश बनाने के लक्ष्य को हासिल करने के रोडमैप पर चर्चा की जाएगी। इस बैठक में मुख्यमंत्री, उप-राज्यपाल और प्रशासक शामिल होंगे। आयोग ने शुक्रवार को कहा कि विकसित भारत के लिए सभी राज्यों को टीम

▸▸ 2047 तक भारत को एक विकसित देश बनाने के लिए रोडमैप पर चर्चा की जायेगी

इंडिया के रूप में साथ लेकर चलने की अपनी प्रतिबद्धता के अनुरूप प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 24 मई को नई दिल्ली स्थित भारत मंडपम में नीति आयोग की 10वीं गवर्निंग काउंसिल की बैठक की अध्यक्षता करेंगे। इस वर्ष बैठक की थीम 'विकसित भारत के लिए विकसित राज्य@2047' है, जिसमें राज्यों पर मुख्य रूप से ध्यान दिया जाएगा।

जमालपुर रेल कारखाने के लिए विकास को 350 करोड़ रुपये की सौगात

मुंगेर। रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने जमालपुर रेल कारखाना को बड़ी सौगात देते हुए शुक्रवार को कहा कि इसके सर्वांगीण विकास के लिए 350 करोड़ रुपए की परियोजना पर काम शुरू कर दिया गया है। वैष्णव ने शुक्रवार को कहा कि आने वाले दिनों में रेल कारखाना देश के मानचित्र पर एक सम्मानजनक स्थान हासिल करेगा।उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी देश को आत्मनिर्भर बनाने की योजना पर लगातार काम कर रहे हैं ।

पूर्वोत्तर राज्य बन रहे भारत का डिजिटल गेटवेः मोदी

एजेंसी

नयी दिल्ली । प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नॉर्थ ईस्ट को भारत का डिजिटल गेटवे बताया। मोदी ने कहा कि बीते दशक में 21,000 करोड़ रुपए नॉर्थ ईस्ट के एजुकेशन पर निवेश किए गए हैं। करीब 850 नए स्कूलों का निर्माण किया गया है। 9 नए मेडिकल कॉलेज बनाए गए हैं। मिजोरम में इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ मास कम्युनिकेशन का कैंपस बनाया गया है। करीब 200 नए स्किल डेवलपमेंट

▸▸ नॉर्थ ईस्ट के एजुकेशन पर 21,000 करोड़ हुआ निवेश

इंस्टिट्यूट स्थापित किए गए हैं। शुक्रवार को 'राइजिंग नॉर्थईस्ट इंवेस्टर समिट' के मंच से सभा को संबोधित करते हुए पीएम मोदी ने कहा कि इस भव्य मंच पर आकर मन गौरव से भर गया है और यहां भविष्य को लेकर अपार विश्वास नजर आता है। उन्होंने कहा, ₹अभी कुछ समय पहले यहां भारत मंडपम में हमने अष्टलक्ष्मी महोत्सव मनाया था और आज हम यहां

नॉर्थईस्ट में इंवेस्टमेंट का उत्सव मना रहे हैं। इस कार्यक्रम का हिस्सा बड़ी संख्या में आए इंडस्ट्री लीडर्स बने हैं, जो दिखाता है कि नॉर्थईस्ट को लेकर सभी में उत्साह और नए सपने हैं। प्रधानमंत्री ने पूर्वोत्तर को देश का विविधता से परिपूर्ण हिस्सा बताया। प्रधानमंत्री ने कहा कि देश 2047 तक विकसित भारत बनने की राह पर अग्रसर है और इस सपने को पूरा करने में पूर्वी भारत का विकास मायने रखता है।

चौतरफा लिवाली से शेयर बाजार में तेजी

एजेंसी

सेंसेक्स 769 और निफ्टी 243 अंक उछला

मुंबई। 29 दिग्गज कंपनियों में हुई लिवाली की बदौलत शुक्रवार को शेयर बाजार करीब एक प्रतिशत उछल गया। बीएसई का तीस शेयरों वाला संवेदी सूचकांक सेंसेक्स 769.09 अंक अर्थात 0.95 प्रतिशत की छलांग लगाकर 81,721.08 अंक और नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) का निफ्टी 243.45 अंक यानी 0.99 प्रतिशत की तेजी लेकर 24853.15 अंक पर बंद हुआ। बीएसई की दिग्गज कंपनियों की तरह मझौली और छोटी कंपनियों में भी लिवाली हुई, जिससे मिडकैप 0.50 प्रतिशत चढकर 44,861.42 अंक और स्मॉलकैप 0.45 प्रतिशत की बढ़ोतरी लेकर 51,521.42 अंक पर पहुंच गया।

इस दौरान बीएसई में कुल 4106 कंपनियों के शेयरों में कारोबार हुआ, जिनमें से 2357 में लिवाली, जबकि 1594 में बिकवाली हुई वहीं 155 में कोई बदलाव नहीं हुआ।

इसी तरह एनएसई में कुल 2947 कंपनियों के शेयरों में कारोबार हुआ, जिनमें से 1731 में तेजी, जबकि 1132 में गिरावट हुई वहीं 84 में टिकाव रहा। विश्लेषकों के अनुसार, मार्च के निचले स्तरों से 14 प्रतिशत की गिरावट के बाद घरेलू शेयर बाजार फिलहाल नई दिशा तलाशने के संघर्ष में है। इस उतार-चढ़ाव के बीच विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफआईआई) की भूमिका पर भी सवाल उठ रहे हैं। अब तक बाजार में तेजी को समर्थन देने वाली एफआईआई खरीददारी की रफ्तार थमती नजर आ रही है। अमेरिका और जापान में बॉन्ड यील्ड में तेज उछाल से वैश्विक वित्तीय स्थिरता को लेकर चिंता बढ़ी है।

निवेशकों को 2.90 लाख करोड़ मुनाफा

शेयर बाजार में आई मजबूती से स्टॉक मार्केट के निवेशकों की संपत्ति में करीब 3 लाख करोड़ रुपये की बढ़ोतरी हो गई। बीएसई में लिस्टेड कंपनियों का मार्केट कैपिटलाइजेशन बढ़ कर 441.88 लाख करोड़ रुपये (अस्थाई) हो गया। जबकि गुरुवार को इनका मार्केट कैपिटलाइजेशन 438.98 लाख करोड़ रुपये था। निवेशकों को करीब 2.90 लाख करोड़ रुपये का मुनाफा हो गया।

पूर्वोत्तर राज्यों के विकास के लिए अडाणी ग्रुप एक लाख करोड़ रुपये करेगा निवेश

नयी दिल्ली । पूर्वोत्तर राज्यों के तेज आर्थिक विकास के लिए अगले एक दशक में अडाणी समूह असम और अन्य पूर्वोत्तर इलाकों में एक लाख करोड़ रुपए निवेश करेगा। यह ऐलान चेयरमैन गौतम अदाणी ने शुक्रवार को किया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, पूर्वोत्तर राज्यों के मुख्यमंत्रियों, केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया की मौजूदगी में राइजिंग नॉर्थ ईस्ट इन्वेस्टर्स समिट को संबोधित करते अडानी ने कहा कि उनका फोकस ग्रीन एनर्जी, स्मार्ट मीटर, हाइड्रो-पंप स्टोरेज, पावर ट्रांसमिशन, सड़क और राजमार्ग, डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर, लॉजिस्टिक्स और ह्यूमन कैपिटल डेवलपमेंट है। यह निवेश फरवरी में एडवांटेज असम 2.0 इन्वेस्टर्स समिट में अदाणी समूह पहले घोषित 50,000 करोड़ के निवेश से दोगुना है।